ज्यौतिषमकरन्द—४

ग चर और अष्टकवर्ग

लेखक :—

आचार्य भास्करानन्द लोहनी

निदेशक :—अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान तथा सांस्कृतिक
शोध परिषद्

प्रकाशक :

आग्रहायण प्रकाशन

आचार्य सदन, १५ चांदगंज गार्डेन, लखनऊ—२२६०२

⊛ प्रकाशन वर्ष १९८६ (२०४३ वि०)

⊛ प्रकाशक :
आग्रहायण प्रकाशन
आचार्य सदन, १५ चांदगंजगार्डेन, लखनऊ—२२६०२०।

★ मुद्रक : अधिकार प्रेस,
२२ कैसरबाग, लखनऊ।

⊛ मूल्य पचीस रुपये।

अधिकृत विक्रेता :—

[१] रंजन पब्लिकेशन्स, अन्सारी रोड, नई दिल्ली।
[२] के० के० गोयल एण्ड कम्पनी, २१४ दरीबा, दिल्ली–६।
[३] यूनिवर्सल बुकसेलर्स, हजरतगंज, लखनऊ।
[४] मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ।
[५] सरदार सोहनसिंह बुक्सेलर, ३४ बक्षीगली, इन्दौर–४।
[६] चौखम्बा विश्वभारती, चौक, वाराणसी।
[७] हिन्द पुस्तक भंडार, खारी बावली, दिल्ली।
[८] देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ीबाजार, दिल्ली।
[९] नाथ पुस्तक भंडार, दरीबाकलां, दिल्ली।
[१०] राजकुमार युगलकिशोर, पल्टन बाजार, देहरादून।
[११] प्रकाश बुक डिपो, श्रीरामरोड, लखनऊ।
[१२] आर० पी० अग्रवाल, श्रीरामरोड, लखनऊ।
[१३] सविता साहित्यसदन, ६-१-६ ३०/५ खैरताबाद, हैदराबाद–४।

दो शब्द

ज्योतिष में फलादेश के निमित्त-विभिन्न पद्धतियां प्रचलित हैं लेकिन उन सबमें पाराशरोक्त (लघुपाराशरी) सिद्धान्त तथा पाराशरी महादशा ही प्रमुख है। यद्यपि महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, प्राणदशा आदि इसके सूक्ष्म से सूक्ष्म विभाजन हैं—जिससे दशा समय को दिनों तथा घन्टों तक में विभाजित कर सूक्ष्म फलादेश कहा जा सकता है। लेकिन इसके बावजूद फलादेश सही घटित नहीं होता। वास्तव में ज्योतिष की "अष्टक वर्ग" और "गोचर" पद्धतियां इस दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखती हैं, मैं तो अपने अनुभव से यही कहना चाहूंगा कि यह ज्योतिष में बहुत ही महत्व रखते हैं और इनके बिना सही भविष्यवाणी करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

(अ) पहली बात तो यह है कि बड़े उच्च ग्रहों वाले व्यक्तियों की कुण्डली में हम देखते हैं कि वे साधारण जीवन जी रहे हैं, दूसरी तरफ हम देखते हैं कि साधारण ग्रह स्थिति वाले व्यक्ति सर्वोच्च पदों पर आसीन हैं, क्यों ?

प्राय: ज्योतिष के फलित सूत्रों के अनुसार नीच, शत्रुराशि स्थित अथवा षष्ठ, अष्टम, व्यय आदि कुभावों में स्थित अनिष्ट फल देते हैं या शुभफल नहीं देते—यह सर्वमान्य सिद्धान्त है। लेकिन हम देखते हैं कि ऐसे ग्रह वाले व्यक्ति संसार में सर्वोच्च पद प्राप्त किये हैं—ऐसे व्यक्तियों की कुण्डली को देखकर कोई भी ज्योतिर्विद यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि यह व्यक्ति इतने उच्च पद पर होगा। इस विषय पर "अष्टकवर्ग" का सिद्धान्त बहुत ही स्पष्ट और युक्ति संगत है कि "कोई भी ग्रह उच्च का, स्वक्षेत्री, केन्द्रादि बलयुक्त, योग कारक क्यों न हो, यदि वह अष्टकवर्ग में दुर्बल है तो शुभफल नहीं देता। इसके विपरीत षष्ठ अष्टम व्यय आदि दुष्ट स्थानों में स्थित, नीच शत्रुक्षेत्री आदि ग्रह भी शुभ फल देते हैं यदि वे अष्टकवर्ग में बली हों।"

(आ) दूसरी बात यह है कि केवल किसी एक ग्रह के आधार पर वास्तविक फल की सही सही कल्पना नहीं की जा सकती। इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि उस ग्रह को सौर मंडल के अन्य ग्रह कितना प्रभावित करते हैं तथा उस ग्रह से अन्य ग्रहों की सापेक्ष स्थिति क्या है? एवं उसका क्या प्रभाव है।

इसका ज्ञान 'अष्टकवर्ग' से ही हो सकता है।

(इ) तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि जन्म के समय किसी ग्रह की जो स्थिति थी, केवल उस स्थिति के आधार पर ही फल कथन कहां तक युक्तिसंगत अथवा

पूर्ण है ? इस बात को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है कि वर्तमान में उस ग्रह की स्थिति क्या है ? हो सकता है जन्म के समय उस ग्रह की स्थिति उत्तम हो, शुभ-फलदायक हो लेकिन वर्तमान में, अपनी वर्तमान स्थिति के कारण वह फल देने से असमर्थ हो ? वर्तमान में उसकी फल देने की शक्ति कैसी है ? और वर्तमान में उसकी परस्पर अन्य ग्रहों से सापेक्ष स्थिति क्या है ? उसका क्या प्रभाव है—आदि बातों का निर्धारण अष्टकवर्ग और गोचर इन दोनों से किया जाता है।

इस सम्बन्ध में एक दृष्टान्त मेरे सामने है। उ० प्र० शासन के एक वरिष्ठ प्रशासकीय अधिकारी को सूर्य महादशा मध्ये गुरु की अन्तर्दशा चल रही थी। ज्ञातव्य है कि ज्योतिष के आधारभूत सिद्धान्तों के अनुसार यह दोनों ग्रह कारक होने से सर्वोच्च शुभ फलदायक हैं—लेकिन उक्त व्यक्ति उस समय ऐसे पद पर थे—जहाँ वे सन्तुष्ट नहीं थे। गुरु की अन्तर्दशा प्रवेश हुये चार माह बीत चुके थे। गहन अध्ययन के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि 'गोचर' में बृहस्पति की स्थिति ठीक न होने से वह अपना फल नहीं दे रहा है। मेरा कथन सही हुआ, और गोचर में गुरु की स्थिति अनुकूल होते ही उन्हें इच्छित पद प्राप्त हो गया।

यदि आप ज्योतिर्विज्ञान में सफलता व ख्याति चाहते हैं, और यह चाहते हैं कि आपकी भविष्यवाणी मिथ्या न हो तो मेरी कामना तथा सुझाव है कि आप अष्टकवर्ग तथा गोचर की स्थिति का अवश्य अध्ययन करें और तदुपरान्त ही कोई भविष्यवाणी करें। यद्यपि वर्तमान में इतने परिश्रम का मूल्य समझने वाले व्यक्ति नहीं हैं।

'गोचर' तथा 'अष्टकवर्ग' से सम्बन्धित साहित्य ज्योतिष के प्राचीन मौलिक ग्रंथों में यत्र-तत्र सूत्र रूप में बिखरा पड़ा है और यह मौलिक संस्कृत साहित्य अलभ्य तथा नष्ट होता जा रहा है। जो कुछ प्राप्त है, वह भी संस्कृत भाषा के सूत्र रूप में अत्यन्त जटिल है—जिसका अध्ययन जन साधारण के वश की बात नहीं है। मेरे पास "जातक परिजात" नामक ग्रंथ है जो एक अत्यन्त प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित है। जिसकी टीका भी अच्छे विद्वान ने की है, लेकिन मुझे दुःख हुआ कि अष्टकवर्ग से सम्बन्धित अध्याय में, इस पुस्तक में जो हिन्दी टीका दी है वह अस्पष्ट, भ्रामक ही नहीं अशुद्ध भी है। ऐसी स्थिति में सही ज्ञान कैसे प्राप्त हो। यह एक समस्या है।

इस विषय पर अभी तक हिन्दी में कोई प्रमाणिक तथा सर्वांगपूर्ण पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने 'अष्टकवर्ग' तथा 'गोचर' पद्धतियों पर यत्र-तत्र बिखरे हुए एतद्विषयक साहित्य को क्रमबद्ध रूप से सरल हिन्दी भाषा में, उदाहरण देकर प्रकाश में लाने की चेष्टा की है।

—भास्करानन्द लोहनी

ज्योतिर्विज्ञान : समय की कसौटी पर

ज्योतिष शास्त्र विज्ञान है या अन्ध विश्वास और इसमें कुछ सत्यता है या नहीं, इस विषय पर अनेक दृष्टिकोणों से उत्तर दिया जा सकता है। वैसे आज वैज्ञानिकों ने ज्योतिष को विज्ञान स्वीकार कर लिया है तथा निर्विवाद रूप से खगोलीय ग्रह-पिण्डों का पृथ्वी के चराचर पर प्रभाव पड़ना मान लिया है। अमरीका आदि सभ्य एवं विकसित देशों में फलित ज्योतिष को (एक विषय) विज्ञान के रूप में, विश्वविद्यालयों में शिक्षा दी जाने लगी है लेकिन अपनी जन्मभूमि भारत में कुछ लोग इसके प्रति अभी भी शंकालु हैं।

ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव क्यों और कैसे पड़ता है ? इसका उत्तर वैज्ञानिक रूप से बहुत से लोग बहुधा दे चुके हैं। मैं यहाँ पर अपने जीवन में घटित घटनाओं के आधार पर प्रकाश डालना चाहता हूं। इन घटनाओं को देखते हुए पाठक स्वयं निर्णय करें कि इस विज्ञान में कुछ तथ्य है या नहीं ? वैसे तो मैंने लाखों करोड़ों व्यक्तियों की समस्याओं का समाधान किया होगा, वैयक्तिक विषयों पर न जाने कितनी भविष्यवाणियाँ की होंगी, लेकिन उन सबका लेखा-जोखा सुरक्षित नहीं है और प्रत्यक्ष प्रमाण न होने से उन पर कोई विश्वास भी नहीं करेगा। अत: यहां पर केवल उन्हीं घटनाओं को दे रहा हूं जिसके प्रत्यक्ष साक्ष्य विद्यमान हैं और बहुधा सम्बन्धित व्यक्ति जीवित हैं।

पिछले ३४ वर्षों में, जीवन में सैकड़ों ऐसी घटनायें घटित हुई हैं जो अपने आप में स्वयं आश्चर्य हैं। मैं इन घटनाओं से स्वयं आश्चर्य चकित हूं कि क्या ज्योतिष के द्वारा ऐसी अद्भुत भविष्यवाणियां की जा सकती हैं ? यदि सदाचारी और निर्लोभ वृत्ति से, नि:स्वार्थ भाव से और इस विज्ञान को व्यवसाय न बनाकर यदि कोई इस शास्त्र का आश्रय ले, तो ऐसी भविष्यवाणियाँ करना सम्भव है—यह मेरा अपना मन्तव्य है। कुछ लोगों की ऐसी धारणा है कि ज्योतिषी को किसी तान्त्रिक साधना आदि के द्वारा सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए लेकिन मैं न तो इस पर विश्वास करता हूं और न मैंने कभी कोई तान्त्रिक साधना इस उद्देश्य से की है। वैसे मैंने सम्पूर्ण तंत्रशास्त्र का गहन अध्ययन किया है और समस्या-

ग्रस्त एवं दुखी व्यक्तियों के हित में कुछ लेने के बजाय स्वयं अपना व्यय करके उसके द्वारा सैकड़ों व्यक्तियों का हित साधन भी किया है और सफलता भी मिली है—लेकिन पूर्णरूप से मानवता की भावना से। यह ईश्वर की ही अनुकम्पा है अनेक कार्य ऐसे भी सिद्ध हुए हैं जो असम्भव थे। हाँ, इतना अवश्य है कि उपनयन संस्कार के बाद से अभी तक प्रतिदिन कुछ क्षण अपने इष्टदेवताओं का स्मरण अवश्य करता हूं। वैसे मैं अध्यात्मवादी हूं, कर्मकाण्ड एवं दिखावे पर मेरा विश्वास नहीं है, प्रत्येक प्राणी परमेश्वर का ज्वलन्त स्वरूप है—अतः मानवता का पालन ही मैं सबसे बड़ी पूजा समझता हूं। बस, इतनी ही कुल साधना, तपस्या एवं आध्यामिक पूंजी मेरे पास है—और कुछ नहीं। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि मानव कितना ही सिद्ध, साधनासम्पन्न, विद्वान क्यों न हो, यदि वह शास्त्र का दुरुपयोग करता है, उसे व्यवसाय के रूप में लेता है, और अपने स्वार्थ साधन का उसे साधन बनाता है, तो उसकी वाणी कभी सफल नहीं होगी। उसकी साधना व विद्वता ऊसर में बोये बीज के समान व्यर्थ सिद्ध होगी। ऐसे ही अनेक दृष्टान्त हैं—जो व्यक्ति धन लेकर (एक पक्ष से धन लेकर दूसरे पक्ष को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से) मारण, मोहन, विद्वेषण, उच्चाटन आदि तांत्रिक कार्य करते हैं—उनकी दुर्गति अवश्यम्भावी है। भले ही उसका परिणाम तत्काल दृष्टिगोचर न हो, लेकिन तीसरी पीढ़ी तक उसका सर्वनाश अटल है।

बहुधा लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या ज्योतिष में कुछ सत्यता है? उनके प्रश्न पर मुझे आश्चर्य होता है और हंसी भी आती है। क्या ऐसा संभव है कि किसी व्यक्ति को किसी शास्त्र पर विश्वास न हो, फिर भी वह उस कार्य को करता हो? हो सकता है कुछ व्यक्ति ऐसे भी हों—जिन्हें शास्त्र पर विश्वास न होते भी केवल धनार्जन के उद्देश्य से, समाज को मूर्ख बनाने का कार्य करते हों, लेकिन यह एक घृणित अपराध है, स्वयं अपने आपको, परमात्मा को धोखा देना है। हाँ लोभ ने जिनकी अन्तरात्मा को ग्रसित कर लिया हो—उनकी दृष्टि में क्या पुण्य, क्या पाप—अर्थ ही परमेश्वर होता है।

अपने विद्याध्ययन काल से ही मैं इस शास्त्र की सत्यता और उपयोगिता पर भी अनुसन्धान करता रहा हूं और उसमें मिली सफलता ने ही मेरा दृढ़ विश्वास इस विज्ञान की ओर हुआ है। मैं विद्याध्ययन में ही रत था, उसी समय किसी पत्रिका में सम्राट जार्ज षष्ठ की जन्मकुण्डली इस समाचार के साथ छपी थी कि वे गम्भीर रूप से रोगग्रस्त एवं मरणासन्न हैं। एक अध्येता के रूप

आजंषष्ठ १४/१२/१८६५ लन्दन ३/५ प्रातः

७	८	११	४	५
लग्न श. शु.	सू. चं, मं बु	रा	बृ	के

में मैंने स्वयं उसका गहरा अध्ययन किया और यह भविष्यवाणी एक पत्र के द्वारा उन्हें लिख भेजी कि फिलहाल जीवन को संकट नहीं है, लेकिन कुछ समय बाद अमुक समय में जीवन को भय होगा। यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। यह मेरे जीवन की प्रथम उपलब्धि एवं पहली सफल भविष्यवाणी थी।

इसके कुछ वर्षों बाद (१४ जुलाई १९५३ को) एक महान खगोलीय घटना घटी, शुक्र से "रोहिणी शकट" का भेदन होने वाला था। इस खगोलीय घटना के प्रति युगप्रसिद्ध महान ज्योतिर्विद श्री वराहमिहिर ने इस प्रकार लिखा है—

प्राजापत्ये शकटे भिन्ने कृत्वैव पातकं वसुधा।
केशास्थिशकल शवलाका कापालिकमिवव्रतंधत्ते ।।

"अर्थात समस्त पृथ्वी शवों, हड्डियों, बालों से भर जाय, किसी युद्ध उपद्रव दैवीप्रकोप से भीषण जन हानि हो।" मैंने इसके बारे में वाराणसी से प्रकाशित (वाराणयेय संस्कृत विश्वविद्यालय से) एवं सुप्रसिद्ध गणितज्ञ एवं ज्योतिर्विद श्री बापूदेव शास्त्री द्वारा सम्पादित पंचांग में पढ़ा, उक्त पंचांग में भी इसे अनिष्टकर बतलाया गया था। मैंने ध्यान पूर्वक पढ़ा और मुझे लगा कि इस विषय पर गम्भीरता से विचार नहीं किया है क्योंकि शुक्र द्वारा रोहिणी शकट का भेदन सर्वथा अशुभ ही होगा, ऐसा कहना सही नहीं था, विस्तार से अध्ययन करने पर मैंने अनुभव किया कि इसका अशुभ फल बहुत ही स्वल्प होगा, कोई चिन्ता की बात नहीं है। मैंने तमाम प्रमाणों के साथ एक लेख लिखा और सिद्ध किया कि कोई अनिष्ट नहीं होगा, जन साधारण के हित मे, भय निवारण के उद्देश्य से इसे किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र में प्रकाशित करना चाहता था—किन्तु अपने नाम से प्रकाशित करने का साहस नहीं हुआ। वरिष्ठ विद्वानों, गुरुजनों के समक्ष उनके मत का खण्डन एक शिक्षार्थी द्वारा अशोभनीय भी था। अन्तत : मैंने छद्मनाम "देवीदत्त" के नाम से लखनऊ के हिन्दी दैनिक समाचार पत्र "नवजीवन" में इसे प्रकाशनार्थ भेजा जो छप गया (दिनांक १९

जुलाई ५३ के अंक में) । कालान्तर में मेरा कथन सही सिद्ध हुआ, शुक्र के रोहिणी शकट भेद का कोई अनिष्टकर प्रभाव नहीं हुआ। यह मेरी प्रथम रचना थी, जो प्रकाशित हुई ।

मुझे ठीक स्मरण नहीं है, १९५७ के लगभग की बात है, लोक सभा के चुनाव होने वाले थे। केन्द्रीय पुनर्वास मंत्री (तत्कालीन) श्री मोहनलाल सक्सेना जी भी लखनऊ से लोकसभा का टिकट चाहते थे। मैंने उन्हें लिखित रूप से बतलाया कि "आपको चुनाव नहीं लड़ना है, संभवतः नामांकन हो सकता है" सचमुच ऐसी भविष्यवाणी करना ज्योतिष से असंभव नहीं है, यह अन्तर्प्रेरणा ही थी। इस भविष्यवाणी को पढ़कर श्री सक्सेना आश्चर्य चकित हो गये और बहुत समझाने पर भी उन्हें विश्वास दिलाना कठिन हो गया कि उक्त भविष्यवाणी ज्योतिष पर ही आधारित है। उन दिनों केन्द्र में गृहमंत्री

श्री मोहनलाल सक्सेना

६	७	८	१०	२	३	४	५
लग्न बु	सू श	शु	रा	चं	मं	के	व

श्री गोविन्द बल्लभ पन्त जी थे, जो मेरे परिचित थे, उन्हीं के हाथ में सब कुछ था, मेरे सम्बन्धों का पता श्री सक्सेना को था और उन्हें यह शक हो गया कि सायद श्री पन्त जी के द्वारा इन्हें कोई गुप्त जानकारी हो, तदनुसार ही ऐसा लिखा गया हो—लेकिन ऐसा नहीं था। वास्तव में भविष्यवाणी उनकी ग्रहस्थिति पर ही आधारित थी और अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई, श्री सक्सेना को लखनऊ से टिकट नहीं मिल सका, दूसरी जगह से टिकट दिया गया जो उन्होंने अस्वीकार कर दिया तथा बाद में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने राज्य सभा में उन्हें नामांकित किया था।

गृहमंत्री स्व० गोविन्द बल्लभ पन्त जी को जब दिल्ली में प्रथमबार दिल का दौरा पड़ा था, तब मैंने सूचना प्राप्त होते ही उन्हें लिखा था कि इस समय जीवन को कोई भय नहीं है। दिल्ली में स्थानीय ज्योतिषियों की भी सम्मति ली गयी थी—जिन्होने बता दिया था कि बचने की आशा नहीं है। इस घटना के कुछ माह बाद जब मैं कार्यवश दिल्ली गया तो उनके निजी सचिव श्री जानकी प्रसाद पन्त जी ने मुझे बतलाया था कि "केवल आपके कथन को छोड़कर सभी

९	१०	११	४	५	६	७
लग्न	के	च	म श रा	सू बु	शु	वृ

की भविष्यवाणी असत्य रही। आपकी भविष्यवाणी हमारे मंत्रालय की पत्रावलियों में अभी भी सुरक्षित है।" दूसरी बार जब फरवरी ६१ में उनकी संज्ञाशून्य हुई, तब भी मैंने बता दिया था कि अब अन्त आ गया है। इस घटना में बात एक थी लेकिन अन्य ज्योतिर्विदों के विचार भिन्न थे, अथवा यों कहें कि उनके विचार त्रुटिपूर्ण थे। इससे सिद्ध है कि हमारे विचारों में त्रुटि हो सकती है, किसी भविष्यवाणी के असत्य होने पर शास्त्र को दोष नहीं दिया जा सकता।

पुराने समय में नरेशों का शासन था, वे ज्योतिर्विदों को सहायता एवं आश्रय तो देते ही थे, एक-एक प्रश्न पर जागीरें मिलती थीं—लेकिन ज्योतिर्विदों की कठिन परीक्षा भी लेते थे। अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी राजपरिवारों की विचार धारा वैसी ही थी, और मुझे भी एक कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ा। पटना (उड़ीसा) की रानी कैलाश कुमारी देवी लखनऊ में रहती थीं, उनके पति उस समय (श्री आर० एन० सिंह देव) उड़ीसा के मुख्यमंत्री थे, रानी जी पटियाला नरेश की पुत्री थीं। उनके पूरे परिवार से मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध था और उनका मेरे ऊपर अटूट विश्वास। एक दिन वे मेरे घर पर आकर एक व्यक्ति का जन्म समय, तिथि व स्थान दे गयीं और कहा कि इसकी फलादेश सहित पूरी जन्मपत्री बनानी है। वह व्यक्ति कौन है—यह बात नहीं बतलायी गई। जब मैंने कुण्डली तैयार की तो उसमें सन्यास योग था, साथ ही राजयोग भी पड़ा था। मैं संकट में पड़ गया, राजघराने में सन्यास कैसे हो सकता है और सन्यासी को जन्म कुण्डली की क्या आवश्यकता हो सकती है? ऐसा योग भी नहीं था कि राजयोग भोगकर बाद में सन्यासयोग हो, जन्मजात सन्यासयोग, प्रबलराजयोग के साथ विद्यमान था। इसके अलावा हाथ-पैर अपंग होने का भी संकेत था। मेरे सामने गंभीर संकट था—इस कुण्डली पर क्या फल कहा जाय? ऐसे समय में मेरी अन्तर्प्रेरणा ने साथ दिया। मैंने उस पर जो फलादेश लिखा उसका सारांश इस प्रकार का था—"यह व्यक्ति अविवाहित व विधिवत सन्यासी होगा, लेकिन यह साधारण सन्यासी नहीं अपितु एक

सम्पन्न, उच्च प्रतिष्ठित तथा ऐसा सन्यासी हो जिसके आधीन अनेक मठ–मन्दिर एवं अपार सम्पदा हो। शारीरिक रूप से हाथ-पैरों में दोष होगा... इत्यादि।"

एक सप्ताह बाद रानी जी के दामाद (झायला स्टेट के राजकुमार श्री पृथ्वीराज सिंह) गाड़ी लेकर पहुंचे और मुझसे जन्मकुण्डली लेकर 'पटना हाउस' चलने का आग्रह किया। रास्ते में उन्होंने भी इस व्यक्ति के बारे में कोई चर्चा नहीं की। पटना हाउस आने पर रानी जी ने मुझे सीधे उस व्यक्ति के सामने प्रस्तुत कर दिया। मैं आश्चर्यचकित था, मेरे विचार शत–प्रतिशत सत्य थे, यह रानी जी के गुरू जी थे जो दक्षिण भारत के निवासी तथा अनेक मठों के स्वयं भूस्वामी थे, सन्यासी थे, हाथपैरों से लंगड़े थे। मेरा फलादेश पढ़कर वे अत्यन्त गद्‌गद् व प्रसन्न होकर बोले—"आज तक अनेक ज्योतिषी मिले जो खिचड़ी पकाते थे, आज पहली बार सही ज्योतिषी मिला।" यह माँ सरस्वती की ही कृपा थी कि इस कठिन परीक्षा में मैं सही उतरा।

मैं यह दावा नहीं करता कि ज्योतिष में शत-प्रतिशत भविष्यवाणियाँ सही होती हैं, दो चार असत्य भी हो सकती हैं लेकिन इनके पीछे हमारी ही त्रुटि हो सकती है—इसके निमित्त ज्योतिषशास्त्र को असत्य नहीं ठहराया जा सकता। अच्छे से अच्छे चिकित्सक से भी सभी रोगी नहीं बच सकते, बड़े से बड़े शल्य चिकित्सक के भी सभी आपरेशन सफल नहीं होते। बड़े-बड़े न्यायविद् भी सभी दावे नहीं जीतते—अतः मनुष्य सर्वज्ञता का दावा कभी नहीं कर सकता। किसी भी व्यवसाय में जिस दिन मनुष्य शत–प्रतिशत सफलता का दावा कर लेगा, उस दिन वह मनुष्य नहीं—देवता बन जायगा।

कभी-कभी बड़े-बड़े विद्वानों से भी बड़ी भूलें हो जाया करती हैं, पाठकों को स्मरण होगा कि सन् १९६२ में आठ ग्रह एक राशि में एकत्रित हुए थे, जिसके बारे में सर्वप्रथम भारत के जाने माने ज्योतिषी श्री बी० बी० रमन (सम्पादक–एस्ट्रो लाजिकल मैगजीन) महोदय ने जनवरी १९५७ अंक के सम्पादकीय में १९६२ का अष्टग्रही योग "तीसरा विश्वयुद्ध" शीर्षक से देकर समाज में आतंक उत्पन्न कर दिया। इसको देखकर अन्य ज्योतिषियों ने भी बिना गंभीरता से विचार किये अनेक निरर्थक, भयजनक भविष्यवाणियाँ करनी शुरू कर दी थीं। लखनऊ के एक प्रतिष्ठित पंचागकार ज्योतिर्विद ने समाचार एजेन्सियों के माध्यम से "विश्व की एक चौथाई जनसंख्या नष्ट" शीर्षक से भविष्यवाणी प्रसारित कर दी। मैं तो शिक्षा समाप्त कर ३/४ वर्षों से ही इस क्षेत्र में था, फिर भी मैंने अनुभव किया कि ज्योतिर्विदों ने इस अष्टग्रही योग पर

गम्भीरता से विचार नहीं किया है, क्योंकि अष्टग्रही योग में सूर्य भी सम्मिलित है अत: इसका प्रभाव अनिष्टकर नहीं होगा। वस्तुत:, मैंने एक विस्तृत लेख तैयार किया जिसमें सप्रमाण यह सिद्ध किया कि संभावित अष्टग्रही योग अनिष्टकारी नहीं है और इसे प्रकाशनार्थ भेजा, जो एक दर्जन से अधिक समाचार पत्रों में (लखनऊ के स्वतंत्र भारत समेत) छपा। श्री रमन को भी इसका अंग्रेजी अनुवाद करवाकर 'एष्ट्रोलौजिकल मैगजीन' में प्रकाशनार्थ भेजा। पत्रांक ५७०६ दिनांक २०/१०/५८ के द्वारा इसके प्रकाशन की स्वीकृति भी मिली—पर छपा नहीं। पुन: स्मरणपत्र दिया तो पत्रांक–१३३५/१०१२ दिनांक ६/२/५९ के द्वारा पुन: शीघ्र प्रकाशित करने का आश्वासन मिला, किन्तु लेख छपा नहीं—क्योंकि इससे उनके सम्पादकीय का खण्डन होता था और मैंने जो प्रमाण दिये थे—उनका वे खण्डन नहीं कर सकते थे। उस समय स्थिति यह थी कि सभी ज्योतिषी एक थे और मैं अकेला उनके विपरीत था।

जैसा कि आप जानते हैं—१९६२ का अष्टग्रही योग आया और गया। न तो एक चौथाई विश्व की जनसंख्या नष्ट हुई और न विश्वयुद्ध ही हुआ। इस तरह अगर जाने-माने ज्योतिषी भी बिना गम्भीरता से विचार किये अनर्गल भविष्यवाणी करने लगें तो जनता का विश्वास ज्योतिष से उठना स्वाभाविक है लेकिन इसमें शास्त्र को दोष देना कहाँ तक उचित है?

सन् १९७४ में ही सन् १९८२ में पड़ने वाले "नवग्रही योग" से विश्व की जनता को पुन: आतंकित किया गया, और हर बार तो केवल ज्योतिषी ही ऐसी अनर्गल भविष्यवाणी करते थे लेकिन १९८२ के नवग्रही योग और उससे महाविनाश की भविष्यवाणी दो प्रसिद्ध वैज्ञानिकों (जान ग्रिबिन–वैज्ञानिक अंग्रेजी पत्रिका 'नेचर' के भौतिक विज्ञान सम्पादक तथा स्टीफेन प्लेगमैन—एक अन्तरिक्ष शोध केन्द्र के वैज्ञानिक) ने की। इनके देखादेखी ज्योतिषियों ने भी इनकी हाँ में हाँ मिला दी।

लेकिन यह मिथ्या कल्पना थी, जो मेरे पल्ले नहीं पड़ी और नवम्बर १९७४ के 'आग्रहायण' में मैंने सम्पादकीय में तमाम तथ्यों को देकर उनका विश्लेषण करते हुए लिखा था—

"वस्तुत: १९८२ में नवग्रही योग है ही नहीं, और यदि होता भी तो उससे विनाश होने का कोई आधार नहीं है।"

इतिहास साक्षी है कि १९८२ के इस कपोल कल्पित नवग्रही योग से कोई महाविनाश नहीं हुआ।

ज्योतिर्विदों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि इस प्रकार की भविष्यवाणी करने से पहले उसके सभी पक्षों पर गहराई से विचार करलें।

× × × ×

१९७१ में बंगलादेश विस्फोटक स्थिति में था, आग्रहायण के नवम्बर १९७१ अंक में इस समस्या पर 'शनि मंगल का केन्द्र सम्बन्ध : बंगला देश में निर्णायक नया मोड़'' शीर्षक से अपने सम्पादकीय में मैंने लिख दिया था—

''यों तो मंगल और शनि का केन्द्र सम्बन्ध २२ अक्टूबर से ६ दिसम्बर तक रहेगा, लेकिन १२ नवम्बर से यह योग शक्तिशाली होगा ······· पवित्र रमजान का महीना रक्तरंजित न हो उठे।

ज्ञातव्य है कि इसी समय में युद्ध भड़क उठा और ठीक १६ दिसम्बर को ही बंगलादेश का एक स्वाधीन राष्ट्र के रूप में जन्म हुआ।

× × × ×

अक्टूबर १९७० में उ० प्र० में श्री त्रिभुवन नारायण सिंह के नेतृत्व मे संविद सरकार बनी, श्री सिंह की जन्मकुण्डली मुझे नहीं मिली। उनके शपथ ग्रहण काल (१७-१०-१९७० अपराह्न, कुंभलग्न) को देखते हुए मैंने लिखा था—

''फरवरी १२ से मई १५ के अन्दर इसे एक संकट और झेलना पड़ेगा, अस्तु यदि १५ मई १९७१ तक यह मंत्रिमण्डल स्थिर रह गया तो तब .''

ज्ञातव्य है कि इस संकट को मंत्रिमण्डल झेल नहीं पाया और ३० मार्च को ही उसका पतन हो गया।

कुछ अन्य ज्योतिषियों ने नवम्बर के अन्तिम सप्ताह या जनवरी के प्रथम सप्ताह भयजनक कहा था, कुछ ने स्थायी शासन की भी भविष्यवाणी की थी। यहाँ भी मेरा कथन सटीक रहा।

उ० प्र० की प्रथम महिला मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी का जन्म समय आदि मुझे उनके एक अधिकारी के माध्यम मे प्राप्त हुआ। उस समय

श्रीमती सुचेता कृपालानी

३	४	९	१२	७
लग्न सू. मं. रा. बु. शु.	बृ	के	श	च

१९६५ में गुप्ता जी व त्रिपाठी जी दोनों से ही उनके मंत्रिमण्डल के स्थायित्व को भय था। उनकी जन्म कुण्डली पर मैंने विस्तृत समीक्षा लिखी (आग्रहायण, जून ६५) उनका समय अनुकूल था, अत: कोई अप्रिय बात कहने का प्रश्न नहीं था।

सन १९६७ में चौधरी चरणसिंह जी उ० प्र० के मुख्यमंत्री बने। उनके शपथ ग्रहण काल को देखते हुए मैंने अपने सम्पादकीय में (आग्रहायण, मई ६७ अंक) उनके मंत्रिमण्डल के अस्थिरता की संभावना व्यक्त की। लेकिन मेरा दुर्भाग्य कि चौधरी साहब ने इसे राजनैतिक या दुर्भावनापूर्ण मान लिया। चौधरी साहब स्वयं भी ज्योतिष का ज्ञान रखते हैं और उन्होंने अपने विश्वस्त ज्योति-

श्री चरण सिंह

९	१०	१२	६
लग्न	श	के	मं
सू. बु.	वृ		चं
शु.			रा

विदों मे पूछकर शपथ ग्रहण किया था, जिन्होंने उन्हें पूरे ५ वर्ष पद स्थायी रहने का विचार दिया था। कुछ दिनों बाद मेरठ मे मेरे किसी शिष्य ने सूचना दी कि चौधरी साहब सर्किट हाउस में मेरठ पधारे थे, अपने विश्वस्त ज्योतिषियों से 'आग्रहायण' में प्रकाशित भविष्यवाणी पर विचार विमर्श किया। जिसमें उनके चाटुकारों ने पत्रिका को फाड़कर उसे बकवास बताया ····। मुझे कोई दुख नहीं हुआ, क्योंकि इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं था। अन्तत: सत्य की विजय हुई—चौधरी मंत्रिमण्डल का पतन हो गया। जनवरी १९६९ में मैंने पुन: भविष्य वाणी की कि (आग्रहायण—६९ जनवरी अंक) "मध्यावधि चुनावों में उनका विजयी होना निश्चित है एवं नवगठित होने वाले शासन में भी व्यक्तिगत रूप से उनको कोई महत्व का पद मिलना निर्विवाद है।" ज्ञातव्य है कि श्री चौधरी को उसी वर्ष विरोधी दल के नेता के रूप में वे सभी सुविधायें दी गयीं—जो किसी कैबिनेट मंत्री को दी जाती हैं। ऐसी व्यवस्था शासन में इसी वर्ष से की गयी, इसके पहले ऐसा नहीं था।

श्री चन्द्रभानु गुप्ता के मंत्रिमण्डल द्वारा त्याग पत्र दिये जाने पर १७-२-७० को पुन: चौधरी साहब मुख्यमंत्री बने। इस पर मैंने पुन: अपने विचार व्यक्त किये—

"........ उ० प्र० की राजनीति के लिये..... ... १३ सितम्बर से १७ अक्टूबर...... तक संतोषजनक नहीं है, यदि यह समय पार हो गया...... (आग्रहायण—मई ७० अंक)" लेकिन समय पार नहीं हुआ, २ अक्टूबर को उन्हें पदच्युत करके राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया था। उल्लेखनीय है कि श्री बी० वी० रमन ने (एस्ट्रोलौजिकल मैगजीन) अगस्त में, तथा एक अन्य ज्योतिष पत्रिका ने २१ सितम्बर के अन्दर उनके मंत्रिमण्डल के पतन की भविष्यवाणी की थी, लेकिन मेरी भविष्यवाणी सटीक रही।

× × × ×

नीतिशास्त्र का कथन है कि अप्रिय बात नहीं कहनी चाहिए, ज्योतिष में भी बहुधा अप्रिय बातों को घुमा–फिराकर कहकर टाल दिया जाता है लेकिन कुछेक बातें ऐसी भी होती हैं—जिसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करना ही पड़ता है।

श्री कमलापति त्रिपाठी जी की जन्मपत्री सितम्बर १९६५ में श्री बलराम शास्त्री जी के माध्यम से मुझे मिली थी, उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री गुप्ता जी को हटाकर श्री त्रिपाठी जी के मुख्यमंत्री बनने की प्रबल संभावना थी, जो उस समय प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष थे। लेकिन ग्रहस्थिति अनुकूल नही

श्री कमलापति त्रिपाठी

४	५	७	८	११	२
लग्न	सू	च	मं	श	बृ
शु	रा			के	

थी। मैंने श्री त्रिपाठी को लिखित रूप से दिया कि "१९६९ से पहले उन्हें सत्ता में नहीं आना है" इस अप्रिय बात को सुनकर श्री त्रिपाठी जी खिन्न भी हुए थे, लेकिन यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। जो (सितम्बर ६५ अंक) आग्रहायण में भी प्रकाशित है।

आग्रहायण के २६ जनवरी ६९ अंक में मैंने पुन: लिखा—"मैं श्री त्रिपाठी जी को भी शुभ सूचना देना चाहता हूं कि इस बार उन्हें मध्यावधि चुनावों में विजय तथा सत्ता में भी पद मिलना निश्चित है।" ज्ञातव्य है कि श्री त्रिपाठी चुनाव में विजयी रहे और दिनांक ४-४-१९७? को वे मुख्यमंत्री बने।

श्री त्रिपाठी के मुख्यमंत्री बनने के कई अवसर उपस्थित हुए, किन्तु प्रत्येक बार बाधा आती रही, अत: लोग उनके प्रति कहा करते थे कि— ऐसा लगता

है कि त्रिपाठी जी को मुख्यमंत्री नहीं बनना है' अब उन्हें १९७१ में मुख्यमंत्री द मिला, तो उन्होंने उसे अपने जीवन की चरम उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया था। उसी समय अगस्त १९७१ के आग्रहायण में मैंने उनके प्रति फिर लिखा था—

"ज्योतिष की दृष्टि में अभी श्री त्रिपाठी जी के जीवन में और उत्कर्ष है, अभी और गौरव प्राप्त होना है, ७१ वाँ वर्ष उनके जीवन में चरमोत्कर्ष का होगा... ..."

हुआ भी ऐसा ही, उसके बाद श्री त्रिपाठी जी ने केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में अनेक महत्वपूर्ण विभागों का कार्य संभाला।

× × × ×

श्रीमती इन्दिरागांधी जी २४ जनवरी १९६६ में प्रधान मंत्री बनीं। उनकी प्रामाणिक जन्मकुण्डली मार्च ६६ में मुझे स्व० डा० सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन

श्रीमती इन्दिरा गांधी

४	५	८	९	१०	२	३
लग्न	मं	सू	शु	च	वृ	के
श		बु	रा			

द्वारा प्राप्त हुई। उनके बारे में समय-समय पर मैंने भविष्यवाणियाँ की है, जो अप्रत्याशित एवं चमत्कारिक रूप से सत्य हुईं। अप्रैल १९६६ के 'आग्रहायण' में ही मैंने स्पष्टरूप से यह लिखा था कि—

"ऐसी आशा बनती है कि आगामी आम चुनाव के बाद भी राष्ट्र की सूत्रधार वे ही बनी रहें।"

सन् १९७१ में लोकसभा के चुनाव हुए और वे पुन: प्रधानमंत्री बनीं। इस समय कुछ ने उनकी पराजय की भी भविष्यवाणी की थी। उस समय भी मैंने यही भविष्यवाणी की थी कांग्रेस ही सबसे बड़े दल के रूप में विजयी होगा।

१९७५ में लोकनायक श्री जयप्रकाशनारायण जी के नेतृत्व में विपक्षीदलों का 'इन्दिरा हटाओ' अभियान शुरू हो गया। उस समय मेरे पास स्व०जयप्रकाश जी की दो-तीन कुण्डलियाँ प्राप्त हुईं, जिनमें परस्पर अन्तर था। उनके जीवन चरित्र के आधार पर मैंने इसे सही माना, और इस पर अपने विचार इस प्रकार दिये थे :—

श्री जयप्रकाश नारायण

१०	१	४	५	६	७	९
लग्न वृ	के	चं	मं	वृ	सू बु शु	श

"श्री जयप्रकाश जी को जिस योग ने आज तक राजयोग से वंचित रक्खा— वही योग उन्हें इस आन्दोलन के सफल होने से भी वंचित रक्खेगा। इस समय अच्छा होगा कि वे अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें" (आग्रहायण, २६ जनवरी १९७५)। ज्ञातव्य है कि जब यह भविष्यवाणी की थी, तब उनका स्वास्थ्य ठीक था।

आग्रहायण के इसी २६ जनवरी ७५ अंक में मैंने इस आन्दोलन को देखते हुए इन्दिरा जी के बारे में भी लिखा था—

"इस ५८वें वर्ष का विशेष गुण व्यवहार कुशलता स्पष्टवादिता जनविरोध और नवीन चमत्कारिक मान्यताओं की प्रस्थापना है, इससे यह विश्वास किया जाता है कि वर्तमान समय में उनके विरुद्ध जो जन असन्तोष दिखलाई दे रहा है उसको वे दृढ़ता, स्पष्टवादिता तथा व्यवहार कुशलता से विफल करने में सफल होंगी और देश में कोई विस्मयकारी नयी मान्यता (नया अध्यादेश या विधि द्वारा) प्रस्थापित कर अकस्मात जनता को आश्चर्य चकित करेंगी।"

यह भविष्यवाणी कितनी सही उतरी—इसे आप जानते हैं, इससे ठीक ६ माह बाद इन्दिरा जी ने देश में आपात स्थिति की घोषणा की थी।

इसके बाद सभी विरोधी दलों ने एक गठबन्धन बना लिया, और १९७७ में यह गठबन्धन 'जनता पार्टी' के रूप में केन्द्र में सत्तारूढ़ हो गया। इस प्रकार के गठबन्धन की भविष्यवाणी मैं 'आग्रहायण' के दिसम्बर १९६९ के सम्पादकीय में व्यक्त कर चुका था—

"१९७३–७४ के बाद देश में केवल दो ही प्रधान दल रह जायेंगे। जिसमें इन्दिरागुट सहित, वामपक्षी दल एक ओर स्वतंत्र, जनसंघ सिन्डिकेट आदि दक्षिणपंथी एक हो सकते हैं।"

१४ अगस्त १९७७ अंक में 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' नई दिल्ली ने ज्योतिर्विदों की एक परिचर्चा प्रकाशित की, शीर्षक था "क्यों हुआ, कैसे हुआ, और अब होना है क्या?" इस परिचर्चा में मुझसे भी विचार मांगे गये। इस परिचर्चा

में कुछ ज्योतिषियों ने (न जाने क्यों और कैसे) यह भी लिखा कि—'जनता सरकार न टूटेगी न बिखरेगी' आदि, इनसे भिन्न मेरा अभिमत इस प्रकार था :—

''जनता पार्टी की भी कुण्डली को देखते हुए सितम्बर १९७९ तक का समय अच्छा नहीं है। अत: सितम्बर १९७९ तक यह सरकार डांवाडोल रहेगी, यदि यह समय निकल गया तो......'' पाठकों को विदित है कि यह समय नहीं निकल पाया और जुलाई १९७९ में ही जनता पार्टी टूट गयी।

उपरोक्त परिचर्चा में ही मैंने एक और भविष्यवाणी की थी—

''जुलाई १९७९ के बाद किसी भी समय एक नये शक्तिशाली राजनैतिक दल का उदय हो सकता है, जिसमें युवावर्ग का प्रभुत्व होगा। और यह पार्टी सर्वाधिक शक्तिशाली एवं लोकप्रिय होगी........''

ज्ञातव्य है कि स्व० संजय गांधी के नेतृत्व में (१९७७ में कांग्रेस में पुन: विभाजन होकर) इन्दिरा कांग्रेस बाद में प्रभुत्व में आयी। इसके पहले इसका नाम कांग्रेस (अर्श) था।

श्रीमती गांधी की कुण्डली में जो ग्रह स्थिति है—उसके बारे में ज्योतिष के प्राचीन मौलिक ग्रंथों में स्पष्ट उल्लेख है कि... ...

''लोहे के फलक वाले बाणों (गोलियों) से शत्रु के हाथों मृत्यु हो'' श्रीमती गांधी को व्यक्तिगत रूप से इस भय का संकेत दे दिया था लेकिन सार्वजनिक रूप से तथ्य को प्रकाशित करना उचित नहीं था। इस प्रकार स्व० इन्दिरा जी की कुण्डली के बारे में ज्योतिष के पूर्वानुमान सही निकले। यह बात और है कि किसी ने अनर्गल भविष्यवाणी की हो।

उपरोक्त व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित भविष्यवाणियों के अलावा राष्ट्रीय विषयों पर (संहिता) भी अनेकों पूर्वानुमान जो समय-समय पर समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं, अक्षरश: सत्य रहे हैं। इन सभी का यहाँ वर्णन करना व्यर्थ है, केवल दो ऐसे मुख्य प्रसंगों का वर्णन करना ही पर्याप्त है—

वर्ष १९७९ के अगस्त व सितम्बर में समूचे उत्तरी भारत में, भयानक सूखा पड़ा। इस पर मौसम विज्ञान विभाग की ओर से दि० ३१ अगस्त के समाचार पत्रों में छपा......''प्रदेश में इस साल वर्षा नहीं होगी'' इसके विपरीत मैंने विस्तार से दि० ४ सितम्बर के दैनिक ''स्वतंत्र भारत'' में यह घोषणा की थी ''१० सितम्बर के बाद वर्षा होगी'' इतिहास साक्षी है कि ठीक ११ सितम्बर से ही उ० प्र०, बिहार, हि० प्र०, आसाम आदि समूचे उत्तरी भारत में वर्षा हुई थी।

इसी प्रकार अगस्त १९७१ में उत्तरी भारत में विनाशकारी बाढ़ से व्यापक जन-धन की क्षति हुई थी। इस विनाशकारी बाढ़ के बारे में भी एक वर्ष पहले ही दिनांक सहित भविष्यवाणी प्रकाशित कर दी थी—जो अक्षरश: सत्य रही।

उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए आप स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि इस विज्ञान में कुछ सत्यता है या नहीं ?

वर्तमान परिस्थिति : दोषी कौन ?

भारत में ज्योतिष शास्त्र की अवनति के यों तो अनेकों कारण हैं लेकिन इनमें दो मुख्य हैं। प्रथम यह कि स्वाधीनता के बाद से इस विज्ञान की निरन्तर उपेक्षा होना एवं राज्याश्रय प्राप्त न होना और दूसरा कारण है इस विषय का "विषय के अनभिज्ञों" द्वारा दुरुपयोग। आज के तथाकथित ज्योतिर्विदों में ९०% ऐसे व्यक्ति हैं—जिनका ज्ञान केवल १०/१२ पुस्तकों तक सीमित है, ऐसे ज्योतिर्विदों की तुलना ऐसे ही की जा सकती है जैसे किसी एम०डी० या एम०एस० उपाधि प्राप्त डाक्टर के सामने एक धाय या कम्पाउण्डर की। शायद बहुत ही कम लोग इस तथ्य को जानते होंगे कि निरन्तर १२ बारह वर्षों के अध्ययन (पाठ्यक्रम) के बाद इस शास्त्र में योग्यता (आचार्य उपाधि) प्राप्त होती है। इसके बावजूद मेरा अपना तो अनुभव यह है कि आचार्य की उपाधि प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति विषय का पूर्ण ज्ञाता नहीं बन सकता, अपितु यदि जीवन पर्यन्त इस विद्या के अध्ययन मनन पर लगाया जाय—तब भी समय कम है। ज्योतिषशास्त्र की विशालता और उसके विस्तृत साहित्य की चर्चा करते हुए आचार्य विष्णुगुप्त (चाणक्य) ने ठीक ही कहा है कि—

यदि हम ऐसी कल्पना कर लें कि व्यक्ति तैरते हुए महासमुद्र को पार कर सकता है—ऐसी कल्पना तो सही भी हो सकती है लेकिन यदि कोई यह कल्पना करे कि वह ज्योतिषशास्त्र की थाह पा लेगा—तो यह सर्वथा असंभव है।

फलित ज्योतिष स्वयं में पूर्ण नहीं है, क्योंकि वह ग्रहों के मात्र फल बतलाता है और उन ग्रहों की स्थिति ज्ञात होती है—सिद्धान्त ज्योतिष (एस्ट्रोनोमी) से। जब तक सिद्धान्त ज्योतिष का ज्ञान न हो—तब तक फलित का भी सही प्रतिपादन नहीं हो सकता। अत: ज्योतिर्विद को केवल फलित में ही नहीं अपितु सिद्धान्त (ग्रहगणित) में भी प्रवीण होना आवश्यक है। इसके अलावा ज्योतिष शास्त्र का तीसरा अंग है "संहिता' का—अर्थात् वर्षा, जलवायु राष्ट्रीय तथा

अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं, भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक एवं दैवी घटनाओं की विवेचना का शास्त्र। क्योंकि ब्रह्माण्ड की ग्रह स्थिति का पृथ्वी के जनजीवन पर व्यक्तिगत जो प्रभाव पड़ेगा, वह तो पड़ेगा ही लेकिन उसके अलावा जलवायु पर क्या प्रभाव पड़ेगा और उसके क्या परिणाम होंगे? इस प्रकार मुख्य रूप में सिद्धान्त (ग्रहगणित), संहिता (प्राकृतिक फलित) और होरा (फलित) यह तीन ज्योतिष शास्त्र के मुख्य अंग हैं और इनमें से प्रत्येक के अनेक भेद हैं। अस्तु, ज्योतिषशास्त्र के इन तीनों स्कंधों के ज्ञाता को ही वास्तव में 'ज्योतिर्विद' कहा जा सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए महान ज्योतिर्विद एवं गणितज्ञ (५७ वर्ष ईसा पूर्व) आचार्य वराहमिहिर ने कहा है—

"दशभेदं ग्रहगणितं,

जातकमवलोक्यनिरशेषमपि।

यः कथयति शुभमशुभं,

तस्य न मिथ्याभवेद्वाणी॥"

अर्थात ग्रहगणित के दश प्रकार के भेदों तथा फलित की विभिन्न शाखाओं के अध्ययन-मनन के बाद ज्योतिर्विद जो भविष्यवाणी करेगा, वह मिथ्या नहीं हो सकती।

लेकिन दुर्भाग्य से आज का ज्योतिर्विद तीनों स्कंधों की कौन कहे—एक स्कंध का भी ज्ञान नहीं रखता और हमारे शास्त्रकारों, ऋषि-महर्षियों ने जहां इस शास्त्र की रचना जनहित एवं मानव समस्याओं के समाधान हेतु किया था, वहीं आज यह शास्त्र ठगी का साधन बनता जा रहा है। स्थिति यहां तक आ पहुंची है कि 'ज्योतिषी' के नाम से ही एक धूर्त की काल्पनिक आकृति सामने आ खड़ी हो जाती है और वास्तविक ज्योतिर्विद को अपने को ज्योतिर्विद कहने में लज्जा अनुभव होती है।

ज्योतिषशास्त्र के विषय में भारतीय जनता में भारी भ्रान्तियां हैं, वह समझती है कि थोड़ा बहुत संस्कृत जानने वाला, या मन्दिर का पुजारी, या पूजा-पाठ कराने वाला पुरोहित ज्योतिष का ज्ञान रखता है—जनता बहुधा अपनी

समस्याओं का समाधान इन्हीं के माध्यम से कर लेती है लेकिन वास्तविकता यह है कि इन लोगों को ज्योतिष का मात्र प्रारम्भिक ज्ञान होता है, इस कारण इनकी मंत्रणा लेना निष्फल ही नहीं कभी-कभी अनर्थकारी भी हो सकती है। इस विषय में यह भी भ्रान्ति है कि प्रत्येक "शास्त्री" या "आचार्य" उपाधि प्राप्त व्यक्ति ज्योतिष का ज्ञाता है, किन्तु वास्तविकता यहाँ भी भिन्न है। जैसे हिन्दी, अंग्रेजी के माध्यम से अध्ययन करने वालों को बी॰ ए०, एम० ए० की उपाधि मिलती है, उसी प्रकार संस्कृत भाषा के माध्यम से अध्ययन करने वालों को 'शास्त्री' या 'आचार्य' की उपाधि प्राप्त होती है और यह उपाधि वेद, पुराण, दर्शन, कर्मकाण्ड, व्याकरण, संस्कृत साहित्य तंत्र, आयुर्वेद आदि किसी भी विषय में हो सकती है। जब तक उक्त परीक्षायें ज्योतिष विषय को लेकर उत्तीर्ण न की हों—ज्योतिष का ज्ञान संभव नहीं है, हाँ प्रारंभिक ज्ञान होना और बात है।

इस प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में ज्योतिष शास्त्र का विधिवत अध्ययन करना ही पर्याप्त नहीं है अपितु इसके साथ-साथ इष्ट साधना भी परमावश्यक है। आपका अध्ययन कितना ही गहन क्यों न हो, जब तक आपकी साधना नहीं है, आन्तरिक प्रेरणा प्राप्त नहीं हो सकती और आन्तरिक प्रेरणा के बिना सही भविष्यवाणी कर पाना संभव नहीं है। इस साधना का एक अंग सदाचार भी है, ज्योतिष शास्त्र के ग्रंथकारों, ऋषियों ने ज्योतिर्विदों के लिए एक 'आचार संहिता' नियत की है, जिसका पालन प्रत्येक ज्योतिर्विद के लिये आवश्यक है, फिर भी आज का ज्योतिर्विद इस 'आचार संहिता' को तिलांजलि दे चुका है। ज्योतिर्विद के लिये पवित्र, सात्विक, निर्लोभ जीवन अत्यावश्यक है। डाक्टर की भाँति ज्योतिर्विद भी जब तक सेवा भाव एवं परोपकार की शुद्ध निर्लोभ भावना से कार्य नहीं करेगा—तब तक उसकी वाणी सफल नहीं होगी।

अतः ज्योतिषशास्त्र और जनता, दोनों के हित में यह उचित होगा कि किसी ज्योतिर्विद से मंत्रणा लेने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि उसके पास इस शास्त्र में उच्च अध्ययन की उपाधि है, वह सिद्धान्त वेत्ता है और उसका आचरण सही है।

फलित में अष्टकवर्ग और गोचर का म ़त्व

फलित ज्योतिष में गोचर और अष्टकवर्ग अत्यन्त महत्व रखते हैं, इनके विना फलित का ज्ञान अधूरा है। बहुधा लोग इनकी उपेक्षा कर देते हैं, संभवतः इसी कारण फलित असत्य होता है। सटीक भविष्यवाणी तभी संभव है जब जन्मकालीन ग्रहस्थिति, दशा अन्तर्दशा आदि के साथ ही ग्रहों की गोचर स्थिति और अष्टकवर्ग में [जन्मकालीन व तत्कालीन] दोनों का बलाबल भी देख लिया जाय।

अष्टकवर्ग का महत्व

अष्टक वर्ग का मुख्य आधार यह है कि जन्म के समय या गोचर में ग्रहों की जो परस्पर सापेक्ष स्थिति होती है, उसी के अनुसार फल के शुभत्व या अशुभत्व का निर्णय होता है। सामान्यतः होरा में [कुण्डलो में] प्रत्येक ग्रह का भिन्न-भिन्न फल प्राप्त होगा, अब एक ग्रह दूसरे ग्रह की स्थिति से कितना प्रभावित होगा—इसका थोड़ा बहुत विचार दृष्टि से हो सकता है। अष्टक वर्ग में प्रत्येक ग्रह की परस्पर सापेक्ष स्थिति को देखकर उसके शुभाशुभ फल का सही निर्णय किया जा सकता है। उदाहरण के लिये जिस ग्रह के जिस राशि में लग्न सहित सातों ग्रह सापेक्ष स्थिति में अनुकूल होंगे उसे [८] आठ रेखा प्राप्त होंगी, अर्थात वह उस राशि पर से भ्रमण करते समय शत-प्रतिशत शुभ फल देने वाला होगा, इसी अनुपात से उसका शुभाशुभ, फल निर्धारित किया जाता है—यहां पर इस बात का विचार नहीं किया जाता कि वह राशि कौन से भाव में है, भले ही उक्त राशि जन्मलग्न या जन्मराशि से ६, ८, १२ में हो या केन्द्रकोण में हो यदि उसे [४] चार से ऊपर रेखा प्राप्त हुई है तो वह उस राशि पर भ्रमण करते समय अवश्य ही शुभ फल ही देगा। इसके विपरीत फलित के सामान्य सिद्धान्त के अनुसार जन्मलग्न से या जन्मराशि से प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक ग्रह के भ्रमण के भिन्न-भिन्न फल हैं। इस प्रकार फलित से सामान्य नियमों से अष्टक वर्ग के नियम अपनी विशेषता और भिन्नता रखते हैं।

इसी हेतु कहा है :—

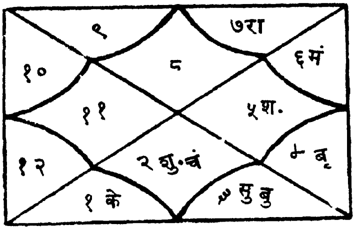
स्वाष्ट वर्गे यदा खेटोऽधिकारी स्वात्तुराशित: ।
तदा गोचर दुष्टेऽपि श्रेष्ठो, नाल्पगरेखग: ।।

ऐसा ही एक उदाहरण और है । जन्म कुण्डली में भी प्रत्येक ग्रह के प्रत्येक भाव पर भिन्न-भिन्न फल नियत हैं । कुछ भावों में कुछ ग्रह उच्चफल देते हैं । कुछ भावों में कुछ ग्रह अत्यन्त अनिष्ट कर फल देते हैं, लेकिन अष्टक वर्ग में ऐसा नहीं है । अष्टक वर्ग के अनुसार कोई भी ग्रह हो, किसी भी भाव में हो— सब का शुभाशुभ फल एक समान होगा । अनिष्ट स्थान स्थित ग्रह भी अनिष्ट फल दे सकता है और शुभ स्थान स्थित ग्रह भी अनिष्ट फल दे सकता है । एक ग्रह को एक अष्टक वर्ग में अधिकतम [८] रेखा प्राप्त हो सकती हैं और लग्न सहित सूर्यादि ग्रहों के कुल आठ अष्टक वर्ग हैं । इस प्रकार ८ गुणा ८ कुल ६४ रेखा अधिकतम किसी भी भाव में [आठों अष्टक वर्गों में किसी भी राशि में प्राप्त रेखाओं का योग अर्थात् योगाष्टक वर्ग या समुदायाष्टक वर्ग या महाष्टक वर्ग में] प्राप्त हो सकती हैं, इसका आधा ३२ है, अथवा कुल आठों अष्टकवर्ग की रेखायें ४८ + ४९ + ३९ + ५४ + ५६ + ५२ + ३९ + ४९ = ३८६ कुल भाव या राशि १२ अत: ३८६ भाग १२ = लब्धि ३२ अत: जिस राशि को योगाष्टक वर्ग में ३२ से ऊपर रेखा प्राप्त होंगी—वह राशि कुण्डली के किसी भी भाव में पड़ी हो, उसमें शुभ या अशुभ कोई भी ग्रह पड़ा हो, उसका फल शुभ ही होगा, ३२ से ऊपर ६४ तक जितनी अधिक से अधिक रेखा हों उतना ही शुभत्व बढ़ता जायगा । इसो प्रकार ३२ से जितनी कम रेखा होती जायेंगी उतना ही अशुभ फल बढ़ता जायगा ।

अष्टक वर्ग के समर्थन में ग्रंथकारों एवं आचार्यो का कथन यह है कि किसी कुण्डली में उच्च राजयोग होते भी उनका फल नहीं मिलता, इसके विपरीत कोई उत्तम राजयोग न होते भी व्यक्ति उच्च पदारूढ़ होता है । इसी प्रकार का फल धन सन्तान आदि के बारे में भी देखने को मिलता है, संभवत: ऐसा ग्रहों की परस्पर सापेक्ष स्थिति के कारण ही होता है ।

इसी प्रकार गोचर में भी । सामान्यत: गोचर में ग्रहों का जो फल कहा गया है तदनुसार एक राशि वाले सभी व्यक्तियों का राशिफल एक समय में एक सा ही घटित होना चाहिए, लेकिन एक राशि या एक नाम वाले व्यक्तियों का समय एक सा नहीं जाता, उनके दैनिक जीवन में एक सी घटनायें घटित

नहीं होती क्यों ? संभवत: इसमें भी वही कारण प्रधान हो सकता है कि नाम, नक्षत्र, राशि एक होते भी उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहों की परस्पर सापेक्ष स्थिति भिन्न-भिन्न होना ? इसी प्रश्न को दृष्टि में रखते हुए



जातकाभरण में कहा भी गया है कि—"जिस प्रकार जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि में होता है उसे जन्मराशि कहा जाता है उसी प्रकार और ग्रहों की राशि को भी जन्मराशि क्यों न मानी जाय ?"

उपरोक्त जन्म कुण्डली में अष्टम [राज्येश होकर] मिथुन राशि सूर्य फलित में शुभ नहीं माना गया है, जिसका फल–नेत्र विकार शत्रुभय, अल्प बुद्धि, कठोर व क्रोधी स्वभाव, दुर्बल शरीर, आर्थिक कमी आदि विपरीत बतलाये गये हैं। क्योंकि समुदायाष्टक वर्ग में मिथुनराशि [अष्टम भाव] को ३४ रेखा प्राप्त हुई हैं, जो आधे [३२] से अधिक होने से शुभ हैं, अत: सूर्य के अष्टम होते भी उसमें शुभत्व आ गया है अत: अष्टम सूर्य के उपरोक्त विपरीत फल बहुत कम घटित होंगे।

इसी प्रकार गोचर में देखें। जब वृहस्पति मेष में भ्रमण पर हो, उक्त कुण्डली वाले व्यक्ति को जन्मराशि से द्वादश वृहस्पति गोचर में [दुख, हानि, मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट प्रद] विपरीत फलप्रद अशुभ माना गया है, लेकिन उपरोक्त कुण्डली में वृहस्पति के अष्टक वर्ग में मेष राशि में ६ रेखा प्राप्त होती हैं, अत: ४ से अधिक रेखा प्राप्त होने से वह शुभ फलदायक बन गया है, अत: उपरोक्त व्यक्ति को मेष राशि पर गोचर करते हुए गुरु जन्मराशि से व्ययस्थ होते भी अशुभ फल नहीं देगा।

ऐसा ही शुभ फलों के बारे में भी ज्ञात करें। भले ही ग्रह कुण्डली में बहुत अच्छी स्थिति में बैठा हो। गोचर में शुभ स्थान पर भ्रमण कर रहा हो,

लेकिन यदि अष्टक वर्ग में सापेक्ष वर्ग में बली नहीं है तो शुभलाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा।

केवल जन्म कालीन ग्रहों का अष्टकवर्ग ही नहीं तत्कालीन अष्टकवर्ग बनाकर भी उसका फल देखें।

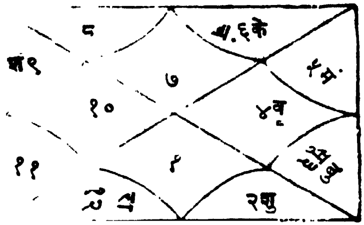
क्योंकि बृहस्पति एक राशि में एक वर्ष रहता है। अतः जन्मकालीन अष्टकवर्ग में बृहस्पति की स्थिति से यह सिद्ध हुआ कि मेष का बृहस्पति [उक्त व्यक्ति को] ६ रेखा होने से शुभ फल दायक है। चन्द्रराशि से गोचर के अनुसार भी द्वादशगुरु का फल एक वर्ष तक प्रभावी होगा। लेकिन लगातार एक वर्ष तक एक ही फल नहीं देगा। एक वर्ष के भीतर समय-समय पर तत्कालीन अष्टकवर्ग के अनुसार गुरु की जो स्थिति बनेगी, तदनुसार फल देगा।

ग्रहगोचर का महत्व

ग्रह गोचर द्वारा फलित विचार करने की भारतीय परम्परा तो है ही साथ ही पाश्चात्य ज्योतिषी भी गोचर फल पर विशेष महत्व देते हैं यद्यपि दोनों की पद्धति में पर्याप्त अन्तर है।

जन्म कुण्डली के द्वारा ग्रहों की स्थिति और उनका शुभाशुभ प्रभाव निश्चय किया जाता है, इस प्रकार जन्मकुण्डली का सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात भी ग्रह के शुभ और अशुभ फलों की जो रूपरेखा बनती है, वह फल कब घटित होंगे ? यह प्रश्न शेष रह जाता है। फलित ज्योतिष में यही विषय सबसे कठिन व महत्व का है कि कब, किस ग्रह का, कौन सा फल घटित होगा और जो भविष्य वक्ता इस समय का सही निर्णय कर सकने में समर्थ हो—वही वास्तव में दैवज्ञ है। इस कठिन विषय की ओर संकेत करते हुए सुप्रसिद्ध पाश्चात्य ज्योतिर्विद स्व० टालेमी ने कहा है कि "कोई भी व्यक्ति शास्त्र में कितना ही पारंगत क्यों न हो-उसके लिए किसी भी भविष्य की घटना का विशेष स्वरूप और घटना का ठीक समय बतलाना सरल नहीं है। शास्त्रों के ज्ञान से किसी बात की स्थूल कल्पना की जा सकती है न कि उसका स्पष्ट स्वरूप। अतः भविष्यवक्ता जो कुछ भी पूर्वानुमान या भविष्यवाणी करे उसके निमित्त यह आवश्यक है कि वह अनुमान का भी आश्रय ले। किसी भी घटना का सही स्वरूप और उसका सही समय वही व्यक्ति बतला सकता है जिसको दैवी प्रेरणा हो।"

अस्तु, ग्रहों के शुभाशुभ फल का सही-सही काल निर्णय करने के लिये ज्योतिषशास्त्र में महर्षि पाराशर ने ४२ प्रकार की दशाओं का उल्लेख किया है इसके अलावा जैमिनीमत, केरलमत, प्रश्न, गोचर, अष्टकवर्ग स्वर, ताजिक, सुदर्शन चक्र, आदि अनेक पद्धतियां हैं जिसके द्वारा ग्रहों का सूक्ष्म से सूक्ष्म फल तथा उस घटना का सही समय निर्धारित हो सके।



इन सब मतों के बावजूद घटनाओं के समय निर्धारित करने हेतु दशा माध्यम ही सर्वश्रेष्ठ है, जिसके लिये दशा में अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मान्तर-दशा, प्राणदशा, आदि छोटे से छोटे विभाजन किये हैं। इस सूक्ष्म समय बिभाजन के बावजूद ग्रह-गोचर का समय निर्धारित करने में महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रहों की महा दशा तथा कुछेक की अन्तर्दशायें तो दीर्घकाल तक चलती हैं, इसी प्रकार प्रत्यन्तर्दशा भी। एक-एक अन्तर्दशा या प्रत्यन्तर्दशा भोगने में ग्रह एक से अधिक राशियों पर निश्चय ही भ्रमण करेगा और उस ग्रह के राशि परिवर्तन से उसके दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा भी निश्चय ही प्रभावित होगी। इसमें दो बातें मुख्य ध्यान देने योग्य हैं :—

(अ) उक्त ग्रह से [जिसकी अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा प्रचलित हो] सम्बन्धित शुभफल उस समय प्राप्त होंगे, जब उक्त ग्रह गोचर में शुभफल दायक स्थान से भ्रमण कर रहा हो।

इसी प्रकार जब उक्त ग्रह गोचर में ऐसे स्थान पर भ्रमण कर रहा हो—जहां उसका अशुभ फल हो—उस समय उक्त ग्रह से सम्बंधित अशुभफल घटित होंगे।

(आ) यदि ग्रह जन्म कुण्डली में अशुभफल सूचक हो तो—उसके फल उसी समय अधिकांशतः प्राप्त होंगे जब वह अशुभ स्थान से भ्रमण [गोचर] कर रहा है, जब शुभ स्थान से गोचर कर रहा होगा तब उसका कुप्रभाव कम पड़ेगा।

यदि जन्म कुण्डली में ग्रह शुभफल सूचक हो तो उसका सर्वाधिक महत्व-पूर्ण शुभ फल [घटनाएं] उसके शुभ गोचर भ्रमण में प्राप्त होंगे और अशुभ गोचर में होने पर भी उसका अशुभ [गोचर का अशुभ फल] फल नगण्य होगा।

एक उदाहरण के रूप में इस जन्म पत्र वाले जातक को १२ जुलाई ८० से २४ जून ८१ तक शनि महादशा मध्य सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। यहाँ पर सूर्य लाभेश होकर भाग्य स्थान में है, साथ ही "त्रिषडायेश" भी है अत: सूर्य लाभदायक तथा यशदायक तो है ही साथ ही कुछ समस्या कारक [त्रिषडायेश होने से] भी है। अब सूर्य की अन्तर्दशा लगभग एक वर्ष है—इस एक वर्ष की अवधि में इसका शुभफल कब मिलेगा और अशुभ फल कब यह जानने को यद्यपि प्रत्यंतर्दशा आदि साधन भी हैं फिर भी गोचर की स्थिति मुख्य निर्णायक होगी। एक वर्ष में सूर्य पूरे राशिचक्र में भ्रमण करेगा। इस बीच जब सूर्य का गोचर भ्रमण जन्म राशि [चन्द्रमा] से ३, ६, १०, ११ [वृश्चिक, कुंभ, मिथुन व कर्क राशि पर] होगा, तब शुभफल देगा।

अधिक सूक्ष्मता के लिये जन्म राशि [चन्द्रमा] की भाँति ही जन्म लग्न से ३, ६, १०, ११ [धनु, मीन, कर्क सिंह में] शुभफल दायक होगा।

दोनों में सामंजस्य कर देखने पर—कर्क राशि का सूर्य का गोचर जन्म राशि व जन्म लग्न दोनों से शुभ है।

अत: हम साधिकार एवं दृढ़ता पूर्वक यह कह सकते हैं कि आर्थिक लाभ यश प्राप्ति सूचक सूर्य का जो शुभ फल प्राप्त होना है उसकी संभावना कर्क राशि पर सूर्य के भ्रमण के समय अर्थात १६ जुलाई से १५ अगस्त के मध्य है।

इसी प्रकार जब सूर्य का गोचर कन्या, तुला, मकर, मेष, वृष राशियों पर होगा तब इसका समस्या कारक कुप्रभाव अधिक होगा, क्योंकि तब सूर्य का गोचर जन्म राशि और जन्म लग्न दोनों सेविपरीत होगा।

शेष वृश्चिक, कुंभ, मिथुन, धनु, मीन, सिंह राशियों पर जब सूर्य का गोचर रहेगा तब एक से अनुकूल तथा एक प्रतिकूल [जन्म लग्न व जन्मराशि] होने से शुभ व विपरीत दोनों प्रकार के मिश्रित फल देगा।

केवल चन्द्रमा के गोचर पर आधारित फल [राशिफल] जहाँ स्थूल होता है, वहीं जन्म कुण्डली एव जन्म कालीनी ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध से गोचर का विचार बहुत ही महत्व रखता है। इसके बिना फलित का पूर्ण एवं सटीक विचार संभव ही नहीं है। ★

फलित की अष्टकवर्ग पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में फलित की अनेक प्रणालियां हैं, इनमें से एक प्रणाली है—अष्टकवर्ग। जो अन्य प्रणालियों से सर्वथा भिन्न है। इस प्रणाली की विशेषता यह है कि जन्म के समय विभिन्न ग्रहों की परस्पर जो सापेक्ष स्थिति होती है उन्हीं के आधार पर फलादेश बतलाया जाता है। जातक एवं जन्म पत्र के अलावा गोचर में भी अष्टकवर्ग का विचार महत्व रखता है। जन्म के समय किसी ग्रह की पारस्परिक सापेक्ष स्थिति क्या थी? और वर्तमान में उस ग्रह की क्या स्थिति है—इन दोनों स्थितियों का तुलनात्मक विश्लेषण करके किसी का वर्तमान में क्या शुभाशुभ फल है। इसका निर्णय किया जाता है। इस लेख में इसी पद्धति पर प्रकाश डाला गया है।

लग्न सहित, सूर्यादि सप्त ग्रह का अष्टक वर्ग बनाया जाता है। दाक्षिणात्य विद्वानों में लग्न को छोड़ शेष सात ही ग्रहों का अष्टक वर्ग कर दिया है। किन्तु, यह मानना ही पड़ेगा कि, 'सूक्ष्मता का अभाव' लग्न के बिना, सात ग्रहों का ही अष्टक वर्ग रहेगा। साथ ही प्रत्येक अष्टक वर्ग से लग्न–खण्ड निकल जायगा अयुक्ति संगत बात है। अस्तु।

कोई आचार्य शुभ सूचक 'रेखा' देते हैं, तो कोई 'बिन्दु'। किन्तु बिन्दु तो शून्यता का सूचक होता है, और रेखा, उपस्थिति–सूचक। अतएव, शुभ–सूचक 'रेखा' बनाने का ही अभ्यास डालिए।

सूर्यादि सप्तग्रह, अपने स्थान से, जिन स्थानों में, 'बल' देता है, उन्हीं स्थानों में रेखा (/) लगाइये, फिर रेखाओं का योग कर फल लिखिए।

रवेरष्टक वर्गः ४८								चन्द्रस्याष्टकवर्गः ४९							
सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	ल.
१	३	१	३	५	६	७	३	१	२	१	१	३	३	३	३
२	६	२	५	६	७	२	४	३	३	३	४	४	५	६	३
४	१०	४	६	९	१२	४	६	६	५	४	७	५	६	७	१०
७	११	७	९	११		७	१०	७	६	५	८	७	११	८	११
८		८	१०			८	११	१०	९	७	१०	९		१०	
९		९	११			९	१२	११	१०	८	११	१०		११	
१०		१०	१२			१०			११	१०	१२	११			
११		११				११				११					

भौमाष्टकवर्गः ३९

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
१०				१०			
११				११			

बुधाष्टकवर्गः ५४

बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
१०		८	९		११	९	१०
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

गुरोरष्टकवर्गः ५६

बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	९	७
१०			९		११	१०	९
११			१०			११	१०
			११				११

शुक्राष्टकवर्गः ५२

शु.	श.	सू.	चं.	मं	बु.	बृ.	ल.
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	११	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	९	३
४	८		४	९	९	१०	४
५	९		५	११	११	११	५
८	१०		८	१२			८
९	११		९				९
१०			११				११
११			१२				

शनेरष्टकवर्गः ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	ल.
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

लग्नाष्टकवर्गः शंभु होरा मत से ४९

ल.	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११		११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	९	९	
					१०	११	
					११		

उदाहरण

सूर्याष्टक वर्ग में सूर्य, मिथुन से प्रारम्भ किया, क्योंकि इस जन्म-पत्र में सूर्य, मिथुन राशि ही में है। चक्र देखिये, प्रत्येक अष्टक वर्गों में ४८ रेखा आदि अपने-अपने अष्टक वर्ग का रेखा-योग रखा गया है, यह योग सर्वदा एक-सा रहेगा। अब चक्र 'सूर्याष्टकवर्ग' में देखिए, सूर्य ने अपने स्थान से—

राशियाँ	=३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
स्थान	=१	२	×	४	×	×	७	८	९	१०	११	×
रेखा	=/	/	×	/	×	×	/	/	/	/	/	×

अर्थात् मिथुन, कर्क, कन्या, धनु, मकर, कुम्भ, मीन, मेष के सामने शुभ रेखाएं हैं।

इसी प्रकार चन्द्रमा से—३, ६, १०, ११ स्थानों में,

मंगल से—१, २, ४, ७, ८, ९, १०, ११

बुध से—३, ५, ६, ९, १०, ११, १२

गुरु से—५, ६, ९, ११

शुक्र से—६, ७, १२

शनि से—१, २, ४, ७, ८, ९, १०, ११

लग्न से—३, ४, ६, १०, ११, १२ स्थानों में रेखायें दीं तो निम्न प्रकार से "सूर्याष्टक वर्ग" का चक्र बना।

इसके बाद इसी तरह प्रत्येक ग्रह (लग्न व सूर्यादि सात ग्रह) का अष्टक-वर्ग चक्र तैयार करें और प्रत्येक अष्टक वर्ग में प्रत्येक राशि के कोष्टक में जितनी रेखायें प्राप्त हुई हैं उनका योग 'समुदायाष्टकवर्ग' चक्र के अनुसार करें। यही समुदायाष्टक वर्ग चक्र को 'भावचक्र' के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

जैसे लग्न अर्थात् वृश्चिक राशि में क्रमश: इस प्रकार रेखायें प्राप्त हुई हैं—

सूर्याष्टक वर्ग में—४

चन्द्र —४

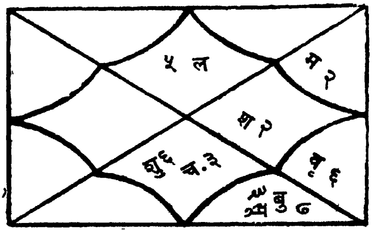
मंगल —४

ग्रहों के अष्टकवर्ग 'चक्र' रूप में भी कुण्डली में दिया जा सकता है अथवा जन्मकुण्डली चक्र के रूप में भी, जैसी सुविधा हो।

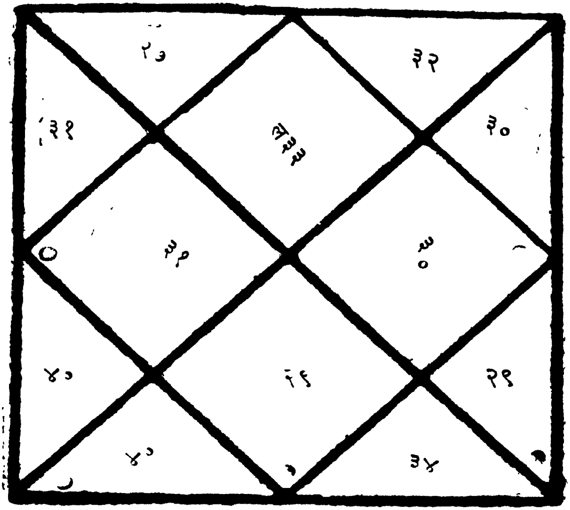
सूर्याष्टक के दोनों प्रकार के चक्र यहाँ प्रदर्शित हैं। पहले "चक्र" में प्रत्येक राशि में प्राप्त रेखा व विन्दु दोनों प्रदर्शित हैं और कुण्डली वाले चक्र में केवल प्राप्त रेखाओं को दिखलाया गया है। दोनों में ही रेखाओं के साथ ग्रहों को भी दिया जा सकता है।

ग्रह	सू बु	वृ	श	मं	+	ल	+	+	+	+	+	चं शु.
तथा राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
सूर्य	१	१	०	१	०	०	१	१	१	१	१	०
चन्द्र	०	१	०	०	१	०	०	०	१	१	०	०
मंगल	१	१	०	१	१	०	१	०	०	१	१	१
बुध	०	०	१	०	१	१	०	०	१	१	१	१
गुरु	०	०	०	०	०	१	१	०	०	१	०	१
शुक्र	०	०	०	०	१	१	०	०	०	०	१	०
शनि	१	०	१	१	०	१	०	०	१	१	१	१
लग्न	०	०	१	१	१	०	०	१	१	०	१	०
रेखा योग	३	३	३	४	५	४	३	२	५	६	६	४

लग्नादिरेखा–चक्र



भाव–चक्र : समुदायाष्टकवर्ग



अष्टक–वर्ग–शोधन

इसके शोधन करने की दो विधियां हैं। एक तो त्रिकोण–शोधन और दूसरा एकाधिपत्य–शोधन। त्रिकोण–शोधन के तीन नियम और एकाधिपत्य–शोधन के सात नियम बताये गये हैं।

(अ) त्रिकोण—शोधन का नियम

आपको, प्रथम त्रिकोण–राशियाँ जान लेना चाहिये। यथा—

१–५–९ [मेष–सिंह–धनु] परस्पर त्रिकोण राशियां हैं; तथैव २।६।१०, ३।७।११ और ४।८।१२ परस्पर त्रिकोण राशियाँ तीन–तीन होती हैं।

(१) त्रिकोण की तीनों राशियों में से जिस राशि की रेखा—संख्या कम हो, उस कम रेखा संख्या को, त्रिकोण की अन्य दो राशि की रेखा—संख्या में

घटाकर, शेष उन्हीं दोनों राशियों के नीचे रखे, और अल्प संख्या वाली के नीचे शून्य [०] रखना चाहिये। यथा—

सूर्याष्टक वर्ग में	मेष	सिंह	धनु	राशि की
रेखाएँ	६	३	३	हैं, तो अल्प संख्या (३)
घटाकर शेष	३	०	०	रखा गया।

(२) यदि त्रिकोण की एक राशि में रेखा शून्य हो, तो शून्य वाली के नीचे शून्य तथा अन्य दोनों राशियों के नीचे यथा (वही) संख्या रख देना चाहिये।

(३) यदि त्रिकोण की दो या तीन राशि संख्या समान हो तो दो या तीन के नीचे शून्य रखना चाहिये। आगे उदाहरण देखने से स्पष्ट ज्ञात हो जायेगा।

(आ) एकाधिपत्य–शोधन के नियम

त्रिकोण–शोधन के उपरान्त ही, एकाधिपत्य–शोधन करना चाहिये। हां कर्क और सिंह राशि का एकाधिपत्य–शोधन नहीं किया जाता; क्योंकि, इनके स्वामियों की दो–दो राशियां नहीं हैं; शेष दो–दो राशियों के एक–एक स्वामी होते हैं।

(१) यदि किसी ग्रह की एक राशि में शून्य आ जावे, तो दोनों ही में शून्य रखना चाहिये। चाहे दोनों ग्रह–हीन हो या दोनों ग्रह–युक्त हो अथवा एक ग्रह–युक्त हो और एक ग्रह–हीन हो।✪

(२) यदि दोनों राशियों में ग्रह न हो, तो अल्प रेखा संख्या को, अधिक रेखा संख्या में घटाकर, शेष, अधिक संख्या के नीचे रखे; और अल्प संख्या को तद्वत् (वही) रखना चाहिये।★

(३) यदि एक राशि में ग्रह हो, और दूसरी राशि ग्रह हीन हो, तथा ग्रह–युक्त राशि वाली रेखा संख्या ग्रह हीन राशि वाली रेखा—संख्या से अल्प हो तो, अल्प—संख्या वही रहेगी, एवं ग्रह—हीन संख्या में अल्प—संख्या घटाकर, शेष ग्रह—हीन राशि के नीचे रखना चाहिये।

(४) यदि ग्रह—युक्त में संख्या अधिक हो, और ग्रह—हीन में संख्या कम हो, तो, ग्रह—हीन में शून्य तथा ग्रह—युक्त में वही संख्या रहेगी।

✪ मतान्तर से यथावत् जैसा है, वैसे ही रक्खें।

★ मतान्तर से अल्पसंख्या के नीचे शून्य रखे।

(५) यदि दोनों राशियों में ग्रह हों तो, वही (तद्वत्) संख्या रहेगी।

(६) यदि दोनों ग्रह—हीन हों, और संख्या भी समान हो तो, दोनों के नीचे शून्य रहेगा।

(७) यदि एक ग्रह युक्त तौर एक ग्रह—हीन हो तथा संख्या भी समान हो तो, ग्रह—हीन के नीचे शून्य एवं ग्रह युक्त के नीचे वही संख्या रहेगी।

गुणक

त्रिकोण—शोधन में राशि—गुणांक, तथा एकाधिपत्य—शोधन में ग्रह—गुणांक के द्वारा, पूर्वगत संख्या में गुणाकर रखना चाहिये। राशि गुणक का योग राशि—पिण्ड; तथा ग्रहगुणक का प्रयोग ग्रह पिण्ड एवं दोनों (राशि ग्रह) पिण्ड का योग, योग—पिण्ड होता है। अर्थात्—

त्रिकोण शोधित राशि अंक × राशि गुणक = राशिपिण्ड, और एकाधिपत्य शोधित संख्या × ग्रहगुणक = ग्रहपिण्ड, दोनों का योग = योगपिण्ड। ●

राशि—गुणक चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२	गुणक

ग्रह—गुणक-चक्र

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रह
५,	५,	८,	५,	१०,	७,	५	गुणक

जब किसी राशि में एक से अधिक ग्रहों का योग हो तो, सभी ग्रहों का गुणक जोड़कर रखना चाहिये। आगे अष्टकवर्ग—शोधन के उदाहरण—चक्र लिखे जा रहे है। फिर त्रिकोण—शोधन के उपरान्त कर्क और सिंह के नीचे जो संख्या, आवे, वही संख्या, एकाधिपत्य—शोधन में रखना चाहिये।

उदाहरण

पहिले लिखा जा चुका है कि, १—५—९, २—६—१०, ३—७—११ और ४—८—१२ राशिया परस्पर त्रिकोण राशियाँ हैं। आगे देखिये, सूर्याष्टक वर्ग

● मतान्तर से एकाधिपत्य शोधन के बाद जो संख्या हो, उसी को ग्रह व राशि गुणकों से गुणे।

शोधन में। इनमें कर्क के नीचे ३ रेखा, वृश्चिक के नीचे ४ रेखा, मीन के नीचे ६ रेखा हैं, इनमें से कर्क में अन्य दो राशियों की अपेक्षा ; ३ रेखा (अल्प-संख्या है) अतएव कर्क के नीचे शून्य तथा कर्क संख्या (३) घटाकर, वृश्चिक के नीचे १ एवं मीन के नीचे ३ रेखा, त्रिकोण—शोधन कोष्टक में रखा। उसी प्रकार, त्रिकोण-शोधन के बाद धनु के नीचे शून्य आने से—एकाधिपत्य नियम (१) के अनुसार, मीन और धनु के नीचे शून्य ही, एकाधिपत्य शोधन कोष्टक में रखा। इसी प्रकार दोनों शोधन करने के बाद वृष के नीचे दो रेखा रहने से वृष राशि गुणक १० का गुणाकर, राशि गुणक में वृष के नीचे २० रखा। इसी प्रकार राशि-गुणक रखने के बाद, एकाधिपत्य-शोधन में वृष के नीचे दो रेखा आने से तथा वृष में चन्द्र शुक्र दो ग्रह होने से ग्रह—गुणक ५+७ (चं शु. का) = १२ हुये। फिर १२ में २ (रेखा) का गुणाकार २४ अंक ग्रह-गुणक में रखा। इस प्रकार सभी राशियों के दोनों शोधन करने के बाद राशि-पिण्ड १२९ और ग्रह-पिण्ड २४ को जोड़ कर योग-पिण्ड १५३ रखा। सइ योग पिण्ड का उपयोग फलित-क्षेत्रों में प्रयोग किया जायगा।

शोधित सूर्याष्टकवर्ग इस तरह बना

राशि—	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह—	सू	वृ	श	मं	—	ल	—	—	—	—	—	चं
स्थिति	बु	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	शु
प्राप्त रेखा—	३	३	३	४	५	४	३	२	५	६	६	४
त्रिकोणशोधन—	०	०	०	२	२	१	०	०	२	३	३	२
एका० शो०—	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	२	२
राशिगुणक—	—	—	—	१०	१४	८	—	—	२२	३६	२१	२०
ग्र०गु०—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	२४

—योगपिण्ड १५३

—राशिपिण्ड १२९

—ग्रहपिण्ड २४

इसी प्रकार सभी ग्रहों के अष्टक वर्ग का संशोधन करें।

अष्टक वर्ग द्वारा दशा तथा आयुसाधन

अष्टक वर्ग द्वारा आयु साधन तथा दशा साधन की प्राचीन भारतीय ज्यौतिष ग्रथों में चार विधियां वर्णित हैं। सर्व प्रथम हम, प्रथम विधि "भिन्नाष्टकवर्गायु" की चर्चा करेंगे। इसके निमित्त सर्वप्रथम अष्टकवर्ग विधि से प्रत्येक ग्रह के अष्टकवर्ग बनाकर उनका त्रिकोण शोधन और एकाधिपत्य शोधन करें और तदुपरान्त 'ग्रहपिण्ड' 'राशिपिण्ड' और 'योगपिण्ड' बनाकर आयु साधन करें।

१—भिन्नाष्टक वर्गायु

उदाहरण स्वरूप पूर्वोक्त शोधित अष्टकवर्ग चक्र दिया है, इसमें आयु साधन करना है। इसकी विधि यह है कि 'राशिपिण्ड' और 'ग्रहपिण्ड' के योग को तीन स्थानों पर रखें, और उसे क्रमशः ३/३/२० से गुणा करें, प्राप्त राशि मासादि (क्रमशः मास, दिन, घटी) होते हैं। मासों के वर्ष बना लें (१२ का भाग देकर) इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की (लग्न सहित) आयु ज्ञात करें, यह 'मध्यम भिन्नायु' होती है।

सूर्य का राशिपिण्ड १२९ ग्रहपिण्ड २४

= १२९ + २४ = १५३ योग पिण्ड हुआ।

१५३ × ३ = ४५९

१५३ × ३ = ४५९ = = ४५९/४५९/३०६०

१५३ × २० = ३०६० माह, दिन, घटी

घटी में ६० का भाग देकर लब्धि ५१ को दिनों में जोड़ा (शेष शून्य) = ४५९ + ५१ = ५१० हुआ। इसमें ३० का भाग देकर लब्धि १७ मासों में जोड़ा = ४५९ + १७ (शेष शून्य) = ४७६/ ०/० मासादि हुए। इसमें १२ का भाग देने पर = ३९ वर्ष, ८ माह, ० दिन, ० घटी—सूर्य की मध्यम भिन्नायु हुई।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों की आयु भी निकालें।

सूर्याष्टक वर्ग

राशि	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
ग्रह—	ल०	+	+	+	+	+	चं शु	सू बु	वृ	श	मं	+
रेखा—	४	३	२	५	६	६	४	३	३	३	४	५
त्रि० शो०	१	०	०	२	३	३	२	०	०	०	२	२
ए० शो०	१	०	०	०	०	२	२	०	०	०	०	०
रा० गु०	८	+	+	२२	३६	२१	२०	+	+	+	१०	१४
ग्र० गु०	+	+	+	+	+	+	२४	+	+	+	+	+

= राशिपिण्ड १२९ ग्रहपिण्ड २४ योगपिण्ड १५३

मध्यम भिन्नायु में संस्कार

[अ] यह ग्रह का मध्यम भिन्नायु २७ के अन्दर हो तो वही रहेंगे ।

[आ] २७ से ऊपर हों तो उन्हें ५४/०/० में घटा दें शेष आयु वर्ष होंगे ।

[इ] ५४ से उपर ८१ से कम हों तो ८१/०/० में घटाकर शेष आयु वर्ष होंगे ।

[ई] यदि ८१ से ऊपर हों तो १०८/०/० में घटायें ।

[उ] यदि १०८ से ऊपर हों तो दशा वर्षों में १०८ घटाकर शेष आयु वर्ष होंगे।

[ऊ] यदि दो से अधिक ग्रह साथ हों तो प्राप्त दशा का आधा करे ।

[ए] ग्रह नैसर्गिक मैत्री में शत्रुराशि का हो तो एक तिहाई आयु कम करे ।

[ऐ] नीच या अस्तगत हो तो आधी आयु ग्रहण करे ।

[ओ] यदि चन्द्रमा या सूर्य के साथ राहु हो तो आधी आयु ग्रहण करें ।

(विशेष—उपरोक्त 'ऊ' से 'ओ' तक केवल एक ही संस्कार करें—ज अधिक हो ।)

यह "मण्डल शुद्धायु एवं हानि संस्कृतायु" होगी । यहाँ पर सूर्य की आ २७ से ऊपर है अतः नियमानुसार [आ] ५४ में घटा दिया ।

५४/०/०
३९/८/०

—१४/४/० मण्डलशुद्धायु ।

यहां पर सूर्य के साथ बुध भी है। अतः नियमानुसार [ऊ] इसका आधा करने पर ७ वर्ष २ माह सूर्य की हानि संस्कृतायु हुई।

इस प्राप्त आयु को ३२४ से गुणा करके ३६५ से भाग लेने पर शुद्धायु होगी।

७/२/०/ × ३२४ = २२६८/६४८/०

३६५) २२६८/६४८ (६ वर्ष

२१९०

७८

× १२

९३६

+ ६४८

———

३६५) १५८४ (४ माह

१४६०

———

१२४

× ३०

———

३७२० (१० दिन

३६५

———

७०

× ६०

———

४२०० (११ घटी

३६५

———

५५०

३६५

———

१८५

× ६०

———

१११०० (३०

१०९५

———

१५०

×

=६/४/१०/११/३० यह सूर्य की शुद्ध आयु हुई। इसी प्रकार सभी ग्रहों व लग्न की आयुसाधन करे और सप्तवर्ग में जो ग्रह क्रमशः बली हों उसी प्रकार उसी क्रम में दशायें जोड़ें। सर्वाधिक बली ग्रह की दशा सर्व प्रथम रहेगी।

विशेष—यदि ग्रहसहित चन्द्रमा केन्द्र से बाहर हो और दशम स्थान में शुभ या पापग्रह हों अथवा ग्रह सहित चन्द्रमा केन्द्र से बाहर हो, अन्य बली ग्रह केन्द्र में हों तो ऐसी कुण्डली वाले व्यक्ति को यही दशा प्रत्यक्ष फलदायक होती है।

इस कुण्डली में चन्द्रमा केन्द्र में है अतः इस जातक को यह दशा प्रभावी नहीं होती।

अर्थात् चन्द्रमा की अपेक्षा अन्य ग्रह बली हों तो यही दशा घटित होगो।

लग्नायु में विशेष संस्कार

इसी प्रकार लग्न की भी आयु निकाल कर उसमें विशेष संस्कार की आवश्यकता है।

तदनुसार उसकी आयु में उतने ही वर्षों को लग्न स्पष्ट में राश्यदि जो हो (लग्न स्पष्ट में राशि के स्थान पर जो अंक हो) जोड़ दें।

शेष अंश, कला, विकला को १२ से गुणा करे प्राप्तांक क्रमशः दिन, घटी, पल, होंगे—इन्हें भी उसमें जोड़ दे। यह लग्न की स्पष्टायु होगी।

जातक पारिजात का मत

जातक पारिजातकार आचार्य वैद्यनाथ ने भिन्नाष्टकवर्गायु साधन का प्रकार इस प्रकार दिया है।

"प्रत्येक ग्रह के अष्टकवर्ग में प्राप्त योगपिण्ड में ३० का भाग देने से लब्धि वर्षादि आयु होगी। इसी प्रकार लग्न सहित प्रत्येक ग्रह की दशा का साधन करें।"

जैसे सूर्याष्टकवर्ग का योगपिण्ड १५३ है, इसमें ३० का भाग देने पर लब्धि (५ वर्ष शेष ३ × १२ = ३६, इसमें ३० का भाग दिया, लब्धि (१ मास) शेष ६ × ३० = १८० इसमें ३० का भाग देने पर लब्धि (६ दिन) हुए। = ५ वर्ष १ माह ६ दिन सूर्य की दशा हुई। इसी प्रकार सभी ग्रहों की दशा निकालें। इतना ध्यान रखें कि एक ग्रह की दशा १२ वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। यदि १२ वर्ष से ऊपर दशा निकले तो इसमें १२ घटा कर शेष वर्षादि ग्रहण करें।

इसमें कुछ संस्कार भी बतलाये गये हैं।

(अ) ग्रह उच्च का हो तो प्राप्तायु को दूना करें। नीच या अस्त हो तो आधी करे। (अर्थात् उच्च में दूनी होती है और नीच में आधी—बीच की राशियों में इसी अनुपात से दशा की कल्पना करे।)

(आ) मंगल यदि वक्री हो तो उसको प्राप्तायु को दूना करे।

(इ) मित्रक्षेत्री, स्वगृही, वर्गोत्तमी, मूलत्रिकोणगत, नवमांश में उच्चस्थ, शुभदृष्ट ग्रहों की आयु पूर्वोक्तप्राप्तायु ही रहेगी।

(ई) पापयुक्त, शत्रुक्षेत्री, पापदृष्ट ग्रह ही आयु में एक चौथाई कम करनी होगी।

२—सामुदायाष्टकवर्गायु साधन

आचार्य मणित्थ आदि ग्रंथकारों का कथन है कि यदि ग्रहयुक्त चन्द्रमा केन्द्र में स्थित हो, अन्य ग्रह निर्बल होकर केन्द्रों से बाहर हों तो 'भिन्नाष्टक-वर्गायु' सही नहीं होगी—ऐसी स्थिति में "सामुदायाष्टकवर्गायु" द्वारा दशा तथा आयुसाधन करने को कहा है। बली चन्द्रमा होने पर यही आयु साधन होगा।

इसकी विधि यह है कि लग्न सहित आठों अष्टकवर्ग बनाकर फिर प्रत्येक राशि में प्राप्त रेखाओं के आधार पर सामुदायाष्टक (आठों का योग) बना लें। इसके बाद इसका मण्डल शोधन करें—अर्थात् सामुदायाष्टकवर्ग में जितनी रेखा प्राप्त हुई हों, उनमें १२ का भाग देकर लब्धि छोड़ दें, शेष राशि को ग्रहण करें।

अब इन मण्डल शोधित रेखाओं का पूर्वोक्त प्रकार से 'त्रिकोण शोधन' और 'एकाधिपत्य शोधन' करें (उसीप्रकार जैसे भिन्नाष्टकवर्ग में किया जाता है)। अब त्रिकोणशोधित अंकों से 'राशिगुणक' गुणाकरें और एकाधिपत्य शोधित अंकों से ग्रहगुणकों को उसीप्रकार गुणा करके राशिपिण्ड और ग्रहपिण्ड तथा योगपिण्ड बनालें। इसका उदाहरण प्रस्तुत है :—

(ध्यान दें, मतान्तर से राशिगुणक व ग्रहगुणक दोनों में एकाधिपत्य शोधित अंकों को ही गुणने का विधान है, जो हमने नहीं लिया है)।

इस ग्रहपिण्ड + राशिपिण्ड के योग से जो सामुदायिक योगपिण्ड बने, उसे ३ स्थानों पर रखकर क्रमशः ३/३/२० से गुणा करे, जो क्रमशः मास, दिन, घटी होंगे। इस प्रकार 'मध्यम सामुदायायु' सिद्ध होगी।

भाव	शत्रु	जाया	मृत्यु	धर्म	कर्म	लाभ	व्यय	तन	धन	सहज	सुख	सुत
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
ग्रहस्थिति	+	शु० चं	सू०बु	गु	श	मं	+	लग्न	+	+	+	+
सूर्य रेखा	६	४	३	३	३	४	५	४	३	२	५	६
चन्द्र रेखा	४	३	४	४	४	३	५	४	३	७	४	४
मंगल रेखा	७	२	३	२	४	२	५	४	३	१	१	५
बुध रेखा	५	६	७	२	५	४	४	४	५	१	६	५
गुरु रेखा	५	२	५	६	३	७	५	३	४	५	५	६
शुक्र रेखा	५	६	४	४	४	३	२	५	४	५	५	५
शनि रेखा	४	२	४	३	२	२	३	४	३	५	३	४
लग्न रेखा	४	४	४	५	५	५	३	५	२	५	२	५
आठों का योग—	४०	२९	३४	२९	३०	३०	३२	३३	२७	३१	३१	४०
१२ का भाग देकर शेष—	४	५	१०	५	६	६	८	९	३	७	७	४
त्रिकोण शुद्ध	१	०	३	१	३	१	१	५	०	२	०	०
एकाधिपत्यशुद्ध	१	०	३	१	३	१	०	४	०	०	०	०
राशिपिण्ड	७	०	२४	४	३०	५	७	४०	०	१०	०	०
ग्रहपिण्ड	+	०	१५/१५	१०	१५	८	+	+	+	+	+	+

योग = राशिपिण्ड १२७, ग्रहपिण्ड ६३, = योगपिण्ड १९०

नोट—मतान्तर से अर्थात् एकाधिपत्य शुद्ध × राशिगुणक रीति से इससे भिन्न आयेगा।

अथवा योगपिण्ड × ७ फिर २७ का भाग देकर लब्धि प्राप्तायु होगी

यहाँ पर योग पिण्ड १९० है, अतः:

१९०	१९०	१९०
× ३	× ३	× २०
= ५७० माह,	दिन ५७०,	घटी ३८००

= ५९१/३/२०

= ४९ वर्ष ३ माह ३ दिन २० घटी

संस्कार

(१) यह १०० वर्ष तक हो तो यथावत् रहेगी।

(२) १०० से ऊपर हो तो १०० घटाकर शेष ग्रहण करें।

इसके बाद इसे ३२४ से गुणाकर ३६५ से भाग दें, लब्धि स्पष्ट पिण्डायु होती है।

व		मा		दि०		घ०
= ४९	—	३	—	३	—	२०
					×	३२४

३६५) १५८७६–९७२–९७२–६४८० (४३ वर्ष
१४६०
————
१२७६
१०९५
————
१८१
× १२

२१७२
+ ९७२
————
३१४४ (८
२९२०
————
२२४
× ३०
————
६७२०
+ ९७२
————
७६९२ (२१

७३०

———

३९२
३६५

———

२७
× ६०

———

१६२०
+ ६४८०

———

८५०० (२३
७३०

———

१२००
१०९५

———

१०५
×

= ४३/८/२१/२३

वर्षादि = ४३/८/२१/२३ स्पष्ट पिण्डायु ।

इसके बाद "भिन्नाष्टकवर्गायु" के द्वारा प्रत्येक ग्रह व लग्न की जो आयु प्राप्त हुई हो, उससे स्पष्ट पिण्डायु को पृथक्-पृथक् गुणा करके और "भिन्नायुष्टक-वर्ग" में प्राप्त आठों ग्रहों के प्राप्त दशावर्षों के योग से भाग देने पर लब्धि वर्षादि प्रत्येक ग्रह की दशा होगी । जैसे—

$$\frac{\text{स्पष्टपिण्डायु} \times \text{सूर्य की भिन्नाष्टकवर्गायु}}{\text{आठों की भिन्नाष्टक वर्गायु का योग}} = \text{स्पष्ट आयु}$$

यहाँ भी दशा का क्रम षटवर्ग । सप्तवर्ग में प्राप्त बल के आधार पर ही क्रमशः दशाओं का क्रम दिया जायगा ।

३—मिश्रायु साधन

यदि बलवान चन्द्रमा केन्द्र में हो, इसके साथ ही बलवान अन्य ग्रह भी केन्द्र में स्थित हों तो 'मिश्रायु' से आयु एवं दशा साधन का विधान है । अर्थात् चन्द्रमा व अन्य ग्रह समान रूप से बली हों । इसकी विधि इस प्रकार है—प्रत्येक

ग्रह की "भिन्नाष्टकवर्गायु" और "सामुदायाष्टकवर्गायु" का योग करें और उसका आधा कर लें। इसप्रकार प्रत्येक ग्रह की दशा बनाकर षट्वर्ग में प्राप्त बल के क्रम से दशा स्थापित करें।

४—रेखायुतिजायु

यदि चन्द्रमा भी केन्द्र से अतिरिक्त अन्य भावों में हो, अन्य ग्रह भी केन्द्र से बाहर हों तो ऐसी स्थिति में 'रेखायुतिजायु" का साधन किया जाता है। जो ग्रह सबसे बलिष्ठ हो, उसी से आयु साधन करे।

इसको विधि यह है कि सूर्यादिग्रहों के स्थित राशि से अष्टमराशि में जितनी रेखा हों, उन सबका योग करके १५ से गुणा करे, फिर ७ का भाग दे, लब्धि वर्षादि आयु होती है। यथा—

(१) सूर्य मिथुनराशि में है, मिथुन से अष्टम मकर में (सूर्याष्टक वर्ग में) २ रेखा हैं।

(२) चन्द्र वृष मे अष्टम धनु ३ रेखा है। (चन्द्राष्टक वर्ग)।

(३) मंगल कन्या में अष्टम मेष में ७ रेखा हैं (भौमाष्टक०)

(४) बुध मिथुन में अष्टम मकर में १ रेखा है(बुधाष्टक०)।

(५) गुरु कर्क में—अष्टम कुंभ में ५ रेखा है (गुरु०)।

(६) शुक्र वृष में—अष्टम धनु में ४ रेखा हैं (शुक्र०)।

(७) शनि सिंह में—अष्टम मीन में ४ रेखा (शन्याष्टक०)।

(८) लग्न वृश्चिक—अष्टम मिथुन ४ रेखा।

योग ३०

= ३० × १५ = ४५०

= ७)४५०(६४

४२

३०

२८

२

× १२

---

७) २४ (३ माह

२१

३

× ३०

---

९० (१२ दिन
७

१०
१४

६
× ६०

---

३६० (५१ घटी
३५

१०
× ७

३

= ६४ वर्ष, ३ माह, १२ दिन, ५१ घटी–यह रेखायुतिजायु सिद्ध हुई ।

अष्टकवर्ग से रोग और कष्ट ज्ञान

सर्वाष्टकवर्ग में लग्न से लेकर शनि स्थित राशि तक जितनी रेखायें प्राप्त हों, उन सबका योग करे, उन्हें सात से गुणा करके २७ का भाग दे । शेष नक्षत्र संख्या होगी । यदि उस नक्षत्र में कोई पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) स्थित हो अथवा उस नक्षत्र की राशि से ५वें में कोई ग्रह हो तो जातक को विशेष रोगभय एवं कष्ट होता है । (यहाँ ऐसा समझना चाहिए कि जन्म समय ऐसा हो तो जातक रोगी होगा । अन्यथा उपरोक्त नक्षत्र में गोचर से जब-जब पापग्रह संचार करेगा, तब–तक जातक को रोगभय होगा) ।

यहां आचार्य मंत्रेश्वर का मत भिन्न है, तदनुसार २७ का भाग देकर जो शेष संख्या मिले, उस संख्या के समान वर्ष में रोगभय होगा ।

'तत्समानगते वर्षे दुखं वा रोगमाप्नुयात ।'

जातकादेशकार का भी यही मत है—

"तुल्याद्बके रोग शोका :"

उपरोक्त उदाहरण में जो कुण्डली दी है उसमें वृश्चिक लग्न है, शनि दशम है, लग्न से दशम तक क्रमशः सर्वाष्टकवर्ग में ३३, २७, ३१, ३१, ४०, ४०, २९, ३४

२९, ३० रेखा प्राप्त हैं। इनका योग = ३२४ हुआ × ७ = २२६८ इसमें २७ का भाग देने पर शेष = ०शून्य अथवा २७ ही रहा—अर्थात् रेवती नक्षत्र।

अतः यदि जन्म समय में रेवती नक्षत्र पर कोई पापग्रह होता, अथवा मीनराशि से ५/९ वें (क्योंकि रेवती नक्षत्र की मीनराशि होती है) अर्थात् कर्क वृश्चिक में कोई पापग्रह हो तो जातक रोगी होगा। अथवा गोचर संचार में जब-जब रेवती नक्षत्र या कर्क वृश्चिक राशि में कोई पापग्रह संचार करेगा, तब-तब रोगभय रहेगा। आचार्य मंत्रेश्वर के मत से २७वें वर्ष कष्ट होगा।

इसी प्रकार :—

(अ) शनि से लग्न तक।

(आ) मंगल से लग्न तक।

(इ) लग्न से मंगल तक।

(ई) लग्न से राहु तक।

(उ) राहु से लग्न तक भी इसी प्रकार क्रिया करने से कष्टप्रद वर्ष प्राप्त होते हैं। यद्यपि अष्टकवर्ग में राहु–केतु नामक छायाग्रहों की गणना नहीं है, फिर भी आचार्य मंत्रेश्वर ने कष्टवर्षों की गणना हेतु राहु की भी गणना करने को कहा है—

'एवं मन्दादि लग्नान्तं भौमराह्वोस्तथाफलम्'

इस तरह ६ प्रकार से गणना का विधान है।

अष्टकवर्गीय गोचर दशा का सूक्ष्म विवेचन

ग्रहों का गोचरफल जानने के निमित्त जातक में भी विधान है और अष्टकवर्ग पद्धति में भी । दोनों की प्रणालियों में बहुत अन्तर है ।

जातकीय गोचर पद्धति में यह देखा जाता है कि ग्रह जन्मराशि से किस स्थान पर है और वह वेध रहित है या नहीं ? यदि ग्रह निर्दिष्ट शुभ स्थान पर स्थित और वेध रहित हो तो उसका शुभ फल देना निश्चित है ।

उदाहरण के लिये—सूर्य जन्मराशि से ३/६/१०/११वें भाव में शुभ होता है । आगे एक कुण्डली का उदाहरण दे रहे हैं—मिथुनराशि पर सूर्य आने पर उसे क्या फल होगा ? जातक की जन्म राशि वृष है, अत: जन्म राशि से दूसरे सूर्य शुभ फल दायक नहीं है (सूर्य का सप्तम वेध होता है, अत: मिथुन से सप्तम धनु में कोई ग्रह हो तो विपरीत वेध के कारण संभवत: वह कुफल नहीं देगा) और पूरे महिने भर समान फल देगा ।

लेकिन अष्टकवर्ग में ऐसा नहीं है । अष्टक वर्ग में यह बात गौण है कि वह जन्मलग्न या जन्मराशि से किस भाव में है, बली है या निर्बल है, वेध है या नहीं—इन सब बातों का अष्टक वर्ग में कोई महत्व नहीं है । अष्टकवर्ग में केवल एक ही बात विचारणीय है कि उस राशि में उसे कितनी रेखायें मिली हैं (वैज्ञानिक भाषा में—उसकी अन्य ग्रहों के साथ परस्पर सापेक्ष स्थिति क्या है ?) यही मुख्य विचार है ।

स्वोच्चमित्रादिवर्गस्था : केन्द्रादिबल संयुता : ।
अनिष्टफलदा: सर्वे:स्वल्पविन्दु युता यदि ।।
दुष्टस्थान स्थिता ये च ये च नीचारिभागगा : ।
ते सर्वे शुभदा नित्यमपि विन्दुयुता यदि ।।

आचार्य वैद्यनाथ के इस कथन से स्पष्ट है कि कम रेखा (यहां रेखा को ही विन्दु कहा गया है) वाला ग्रह उच्च, स्वगृही, बली, शुभभाव स्थित होने पर भी कुफल देता है और दुष्टभाव स्थित, नीच, शत्रुक्षेत्री ग्रह भी रेखायुक्त (४ से ऊपर) होने पर शुभफल दायक होता है ।

ग्रहगोचर, जन्मकुण्डली व अष्टकवर्ग का परस्पर सम्बन्ध ?

ग्रहों के सही-सही फलों का अध्ययन करने हेतु उसकी जन्मकालीन (जन्मकुण्डली में) स्थिति, गोचर में जन्मराशि से उसकी स्थिति, और अष्टक-वर्ग में उसकी स्थिति इन तीनों का तुलनात्मक अध्ययन जरूरी है। जैसा कि ग्रंथकार हरजी का कथन है :—

यो ग्रहो गोचरे श्रेष्ठस्त्वष्टकवर्गेषुमध्यम : ।
अधमस्तु दशायांहि स ग्रहोह्यधमाधम : ।।

अर्थात् सर्व प्रथम ग्रह की जन्मलग्न में स्थिति व प्रचलित महादशा, तद-नन्तर अष्टकवर्ग में ग्रह स्थिति और तदनन्तर गोचर में ग्रहस्थिति का क्रमश: विचार करे। यदि गोचर में ग्रह श्रेष्ठ फलदायक हो, अष्टकवर्ग में भी सामान्यत: शुभ (मध्यम) हो, लेकिन जन्म में उस ग्रह की स्थिति एवं फल अशुभ है तो—गोचर में शुभ अष्टकवर्ग में मध्यम होते भी वह अधम से अधम (अशुभ) फल ही मुख्यत: देगा।

अष्टकवर्गीय गोचर दशा विधि

दशाओं के क्रम के बारे में ग्रंथों में मतभेद मिलता है। आचार्य वैद्यनाथ (जातक पारिजात कार) तथा फलदीपिका के मत से दशाओं का क्रम क्रमश: शनि, गुरु, मंगल, सूर्य शुक्र, बुध, चन्द्र और लग्न हैं—

"होराशशीबोधन शुक्रसूर्यभौमामरेन्द्रार्चितभानुपुत्रा :"
(विपरीत क्रमेण)।

यही मत अधिक शुद्ध व प्रामाणिक प्रतीत होता है क्योंकि फल दीपिका में भी यही मत दिया गया है और उसका वैज्ञानिक आधार भी दिया है, अर्थात् पृथ्वी को केन्द्र मानकर जिसप्रकार ग्रहों की कक्षायें हैं, उसीक्रम से (विपरीतक्रम) दशानाथ हैं—

भान्यष्टधा तत्र विभज्य कक्षाक्रमेण तेषां फलमाहुरन्ये ।
राश्यष्टभाग प्रथमांशकाले शनिर्द्वितीये तु गुरु : फलाय ।।
इत्यादि।

जब कि मानसागरी ने इससे भिन्न मत दिया है :—

सूर्यसूर्यजजीवाश्च शुक्रो भौमो बुधस्तथा ।
चन्द्रो लग्नं क्रमात्स्याप्योष्टक वर्गे बुधैमंह : ।।

अष्टकवर्गीय गोचर दशाक्रम

(सूर्य गोचर दशा : सूर्याष्टकवर्ग) वैद्यनाथमतानुसार

ग्रह की राशि में अंशादि स्थिति—(अंश तथा कला)			३.४५ तक	७.३०	११.१५	१५.०	१८.४५	२२.३०	२६.१५	३०.०
वैद्यनाथ एवं (दशापतियों क्रम) फलदीपिका का मत—मान्यमत			शनि	गुरु	मं०	सू०	शु०	बु०	चं०	लग्न
मानसागरी का अवैज्ञानिक मत (दशापति)			सू०	श०	वृ०	शु०	मं०	बु०	चं०	लग्न
कुण्डली में ग्रह एवं राशि स्थिति—आयु	—सू.बु.	३	|	०	|	|	०	०	०	०
धर्म	— वृ०	४	०	०	|	|	०	०	|	०
कर्म	— श०	५	|	०	०	०	०	|	०	|
लाभ	— मं०	६	|	०	|	|	०	०	०	|
व्यय	— +	७	०	०	|	०	|	|	|	|
लग्न	— लग्न	८	|	|	०	०	|	|	०	०
धन	— +	९	०	|	|	|	०	०	०	०
सहज	— +	१०	०	०	०	|	०	०	०	|
सुख	— +	११	|	०	०	|	०	|	|	|
सुत	— +	१२	|	|	|	|	०	|	|	०
शत्रु	— +	१	|	०	|	|	|	|	०	|
स्त्री	— चं. शु.	२	|	|	|	०	०	|	०	०

लेकिन यह मत युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता। पाठकों के सुविधार्थ हमने दोनों मत दे दिये हैं।

प्रत्येक राशि में ३० अंश होते हैं, इसके ८ भाग करने पर ३ अंश ४५ कला का एक भाग होगा, इसी प्रकार प्रत्येक ३/४५ के आठ खण्ड होंगे। ० से ३/४५ अंश तक ग्रह स्थित हो तो शनि के अनुसार फल देगा, ३/४५ से ७/३० तक गुरु के अनुसार फल देगा—इसीप्रकार क्रमशः जानना चाहिए।

जैसे सूर्य का गोचरफल हमें अष्टकवर्ग के अनुसार विचार करना है। इसका फल हमें दो प्रकार से ज्ञात होगा। उदाहरण—उपरोक्त जन्म कुण्डली वाले व्यक्ति को (जब सूर्य गोचर से प्रतिवर्ष मिथुन राशि पर आयगा) मिथुन में सूर्य के आने पर क्या फल देगा ?

इसका नियम यह है कि जिस राशि पर जिस अंश में रेखा प्राप्त हैं, उस राशि में, उतने अंशों तक रहने पर ग्रह शुभ फल देगा। इसी प्रकार जिस राशि में जिस अंश में रेखा प्राप्त न हो उस राशि के उन अंशों में अशुभ फल देगा।

(अ सूर्याष्टकवर्ग में मिथुनराशि पर मात्र ३ रेखा (सूर्य, वृहस्पति, शुक्र की) प्राप्त हैं—अतः मिथुन के सूर्य का फल ३ रेखा से कम होने से साधारण ही होगा, शुभ फल नहीं देगा। यह सामान्य एवं स्थूल फल है।

(आ) अब इसका सूक्ष्म विचार है।

मिथुन राशि का सूर्य गोचर में उपरोक्त व्यक्ति को शुभ फल दायक न होते भी, जब सूर्य ० से ३/४५ अंश तक, या ७/३० से १५/० अंश तक में होगा—उस समय अवश्य शुभ फल देगा।

इसी प्रकार :—

कुंभराशि में जब-जब सूर्य आयगा, तब-तब शुभ फल देगा (सामान्य विचार से, क्योंकि कुंभ में ५ रेखा प्राप्त हैं)। अब इसी का विशेष विचार है कि कुंभ में भी जब सूर्य ०/० से ३/४५ तक, ११/१५ से १५/० तक, और १८/४५ से ३०/० अंश तक रहेगा, तब(यह खण्ड रेखा युक्त होने से)विशेष शुभफल दायक होगा।

ज्ञातव्य है कि सूर्य एक राशि में एक माह रहता है और उसका सामान्यफल एक माह तक समान रूप से प्रभावशील रहता है, लेकिन पूरा एक माह का समय एक सा नहीं जाता, यह व्यवहार सिद्ध है। यहाँ पर सूर्य एक खण्ड में लगभग ३-३/४ दिन रहेगा, अतः प्रत्येक खण्ड की स्थिति के अनुसार हमें सूर्य का प्रत्येक ४/४ दिन का बदलता हुआ सूक्ष्मातिसूक्ष्म फल प्राप्त होगा।

इस पद्धति में रेखा शुभग्रह की हो या पापग्रह की—हमेशा शुभ फल दायक है। विन्दु या शून्य प्रत्येक ग्रह का अशुभ फल दायक होता है। प्रत्येक ग्रह के रेखा व विन्दु का पृथक्-पृथक् फलों का यथासमय विवेचन करेंगे।

घंटे–घंटे का फल

इसी प्रकार यदि चन्द्रमा का अष्टकवर्गीय गोचरदशा चक्र बनायें तो हमें दिन प्रतिदिन का ही नहीं अपितु घंटे-घंटे का सूक्ष्मफल प्राप्त हो सकता है। क्योंकि चन्द्रमा एक राशि में लगभग २–१/४ दिन रहता है, इससे हमें प्रत्येक २/२ या ३/३ दिन का सामान्य फल चन्द्रमा का प्राप्त हो जाता है।

चन्द्रमा लगभग सात घंटे में ३/४५ अंश चलता है, इस प्रकार हम चन्द्राष्टकवर्ग के अनुसार प्रत्येक दिन का ही नहीं अपितु प्रत्येक ७/७ घंटे का सूक्ष्मफल प्राप्त कर सकते हैं।

गुरु, शनि आदि जो कि एक राशि में एक वर्ष से ऊपर रहते हैं, इन दशाखण्डों के द्वारा उनका सूक्ष्मफल ज्ञात हो सकेगा।

इस प्रकार गोचरदशा के विचार में अष्टकवर्गीय दशा अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पुराने ग्रंथों में तो इस प्रकार का कोई मत नहीं मिलता, लेकिन मेरा अपना विचार है कि अत्यन्त सूक्ष्मफल एवं सटीक भविष्यवाणी के लिये जन्म-कुण्डली के अष्टकवर्ग की तरह ही तात्कालिक ग्रहस्थिति का भी अष्टकवर्ग निकालकर—दोनों का तुलनात्मक अध्ययनकर फलादेश करना चाहिए।

अष्टकवर्गीय सूक्ष्म गोचर दशाओं का फल विवेचन

ग्रंथकार आचार्य हरजी ने अष्टकवर्ग की सूक्ष्म गोचरदशाओं का फल इस प्रकार कहा है :—

(१) सूर्य की रेखादशा—शत्रुपराजय, साहस, सफलता, और जिस भाव में सूर्य को उस भाव सम्बन्धी अभिवृद्धि।
सूर्य की शून्यदशा—कष्ट, व्यसन, रोग, मानसिक कष्ट, राजद्वार के मामलों में विपरीत एवं मानसिक खेद।

(२) चन्द्रमा की रेखा दशा—वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति, भोजन की प्राप्ति, राजसम्मान, यश, कार्यलाभ आदि।
चन्द्रमा की शून्यदशा—शत्रुवृद्धि, वाद-विवाद, दुःस्वप्नदर्शन, धनक्षय, हानि, मानसिक व शारीरिक कष्ट।

(३) मंगल की रेखा दशा—धन की प्राप्ति, नीरोगता, आयु में वृद्धि, स्वास्थ्य में उन्नति एवं सुरूपता ।

मंगल की शून्यदशा—जाठराग्नि एवं पाचनक्रियामन्द, अग्नि-शस्त्र भय, विषभय, फोड़ा-फुंसी, शिरपीड़ा, रक्त एवं पित्त सम्बन्धी रोग ।

(४) बुध की रेखादशा—सुख, सुन्दर भोजन, दान यज्ञ तीर्थयात्रा देवपूजनादि सत्कार्य, लाभ, मित्रसुखादि ।

बुध की शून्य दशा—चित्तभंग, वाद-विवाद भय, शत्रुभय असमय एवं अरुचिकर भोजन, दुस्वप्नदर्शन ।

(५) गुरु की रेखादशा—विविध सुख, लाभ, आर्थिक सुधार दाम्पत्यसुख, शत्रु-पराजय, उत्साह पारिवारिक सुखादि हर प्रकार शुभ फल दायक है ।

गुरु की शून्य दशा—शारीरिक कष्ट, आर्थिक कष्ट, धनव्यय, यात्रा में विघ्न या कष्ट, वाहन से भय, सामाजिक लोगों से विवाद, अपने ही कथन से अपमान, शत्रुभय, कार्यवाही आदि ।

(६) शुक्र की रेखा दशा—राजसम्मान, यश, कन्यासुख, स्वास्थ्य उत्तम, खेल—कूद या आमोद प्रमोद एवं विलास, आर्थिक लाभ, सुख-सम्पत्ति में वृद्धि और ज्ञानवृद्धि ।

शुक्र की शून्य दशा—धनव्यय, स्त्रीपीड़ा एवं दाम्पत्य सुखहीनता, स्वास्थ्य में गिरावट, शत्रुवृद्धि, वाद-विवाद, भूमिनाश, हानि, बुद्धिभ्रंश, वाहन भय, यात्रा में विघ्न या यात्रा असफल ।

(७) शनि की रेखादशा—सेवकों से सुख, लाभ, कार्य की प्राप्ति, राजसम्मान, सज्जन समागम, भूमिलाभ, जुआ लाटरी आदि से लाभ, धार्मिक सत्कार्य, सुभोजन, सम्पत्ति वृद्धि ।

शनि की शून्य दशा—कष्ट, राजद्वार से भय, पारिवारिक समस्यायें, विष एवं शस्त्र से भय, धनहानि, मानसिक अशान्ति, भूमिनाश, कलह, बुद्धि-नाश, वाहनादि की हानि-यह फल देती है ।

प्रस्तुत ग्रंथ में लग्न दशा का फल वर्णित नहीं है, लग्नदशा का फल इस प्रकार कहना चाहिए—

(८) लग्न की रेखा दशा—लाभ, नीरोगता, सुखशान्ति, आत्मसन्तोष, हर प्रकार शुभ ।

लग्न की शून्य दशा—मानासिक अशान्ति, स्वास्थ्य में गिरावट, व्यय, हानि ।

अब उपरोक्त उदाहरण में, उपरोक्त जन्मपत्र वाले व्यक्ति की जब मि
में सूर्य भ्रमण करेगा—इस प्रकार फल देगा :—

० से ३/४५ अंश तक—शनि की रेखादशा का फल।

३/४५ से ७/३० अंश तक—गुरु की शून्य दशा का फल।

७/३० से ११/१५ तक—मंगल की रेखा दशा का फल।

११/१५ से १५/० अंश तक—सूर्य की रेखादशा का फल।

१५/० से १८/४५ तक—शुक्र की शून्य दशा का फल।

१८/४५ से २२/३० अंश तक—बुध की शून्य दशा का फल।

२०/३० से २६/१५ तक—चन्द्रमा की शून्य दशा का फल।

और २६/१५ से ३०/० अंक तक—लग्न की शून्य दशा का फल।

इस प्रकार जितना सूक्ष्मफल गोचर का अष्टकवर्ग से कहा जा सकत
उतना और किसी से नहीं।

इसी तरह प्रत्येक ग्रह की गोचर दशा देखनी चाहिए।

अष्टक वर्ग के विशेष फलित-सूत्र

अष्टक वर्ग का विचार अनेक रूप से होता है। प्राचीन आचार्यों ने अष्टक वर्ग के आधार पर कुछ विशेष फलों का भी उल्लेख किया है जो महत्वपूर्ण है।

(१) सूर्याष्टकवर्ग में सूर्य लग्न में हो, नीच या शत्रुक्षेत्री हो तथा चार से कम रेखा युक्त हो तो व्यक्ति रोगी होता है।

(२) इसी प्रकार सूर्य स्वगृही या उच्च का लग्न में हो और ५ (पांच) से अधिक रेखायुक्त हो तो जातक राजा या राजतुल्य वैभव युक्त तथा नीरोग और दीर्घायु होता है।

(३) यदि सूर्य केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित होकर पांच से अधिक रेखा युक्त हो तो क्रमशः ३५, २२, ३०, ३६वें वर्ष में जातक के पिता की मृत्यु होती है, अर्थात् ५ रेखा हो तो ३५वें वर्ष, ६ रेखा हों तो २२वें वर्ष, ७ रेखा हों तो ३०वें और ८ रेखा हों तो ३६वें वर्ष।

(४) त्रिकोणशोधन तथा एकाधिपत्यशोधन के बाद सूर्याष्टकवर्ग में सूर्य को दो रेखा प्राप्त हों, और सूर्य के साथ चन्द्रमा, बुध, या शनि बैठे हों, तो जातक के पिता को दस वर्ष की आयु (जातक की) के बाद बहुत ही सम्पत्ति व राजसम्मान प्राप्त होता है।

(५) सूर्य या चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में जिस राशि में एक भी रेखा न हो, उस राशि में (अर्थात् उस राशि पर जब गोचर में) सूर्य या चन्द्रमा हो—उस समय कोई भी शुभ या महत्वपूर्ण कार्य करना ठीक नहीं है।

(६) चन्द्र लग्न में हो और चन्द्राष्टकवर्ग में १, २ या ३ रेखा ही प्राप्त करे तो जातक आलसी, मन्दबुद्धि, मस्तिष्क विकार युक्त या क्षयरोगी होता है।

(७) लग्न में स्थित चन्द्रमा यदि चन्द्राष्टकवर्ग में दो-तीन पापग्रहों के साथ हो और १, २ या ३ ही रेखा प्राप्त करे तो ३७ वर्ष में अल्पायु कारक हो सकता है।

(८) चन्द्रमा क्षीण, शत्रुक्षेत्री, नीच का होकर अपने अष्टक वर्ग में केन्द्र या त्रिकोण में हो और १, २ या ३ रेखा ही प्राप्त करे—तो जिस भाव में हो उस भाव सम्बन्धी हानि करता है। जैसे लग्न में हो तो स्वास्थ्य, पंचम में हो तो विद्या—सन्तान आदि।

(९) चन्द्राष्टकवर्ग में चन्द्रमा को ४, ५, ६, ७, ८ रेखा प्राप्त हों और वह लग्न से त्रिकोण, केन्द्र या एकादश में वली होकर स्थित हो तो जिस भाव में हो उक्त भाव की अधिवृद्धि करता है।

(१०) यदि चन्द्राष्टकवर्ग में चन्द्रमा को आठ रेखा प्राप्त हों और लग्न से केन्द्र में हो तो जातक विद्वान, यशस्वी, सम्पन्न तथा राज तुल्य वैभवयुक्त होता है।

(११) मंगल स्वगृही या उच्च का होकर नवम, लग्न चतुर्थ या दशम में हो, (भौमाष्टकवर्ग में) आठ रेखा सहित हो तो ऐसा जातक करोड़ पति होता है।

(१२) भौमाष्टकवर्ग में मंगल को चार रेखा से अधिक प्राप्त हों और मंगल मेष, सिंह, धनु, मकर या कर्क राशि का होकर लग्न में हो तो जातक राजा के तुल्य होता है। हमारे मत से कर्क के स्थान पर वृश्चिक होना उचित है।

(१३) यदि मंगल स्वगृही या उच्च का होकर लग्न या दशम में आठ रेखायुक्त (भौमाष्टक वर्ग में) हो तो राजतुल्य वैभवशाली होता है।

(१४) मंगल स्वगृही या उच्च का होकर लग्न में स्थित हो और आठ रेखा प्राप्त करे (भौमाष्टक वर्ग) तथा लग्नेश भी साथ में हो तो चक्रवर्ती राजा होता है। जैसे मकरलग्न का जन्म हो, आठ रेखा प्राप्त हो।

(१५) बुध लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो, आठ रेखा प्राप्त करे (बुधाष्टकवर्ग में) तो जातक भाग्यशाली, विद्वान तथा अपनी जातीयविद्या में प्रवीण होता है। जैसे क्षत्रिययुद्ध एवं राजविद्या में, वैश्य व्यापार में आदि।

(१६) बुध अपने अष्टकवर्ग में यदि १, २, ३ रेखा ही प्राप्त करे लेकिन यदि अपने उच्च या स्वगृही आदि होकर स्थित हो तो जिस भाव में है उस भाव की वृद्धि ही करता है, हानि नहीं करेगा।

(१७) बुध के अष्टकवर्ग में जिस राशि में सर्वाधिक रेखा मिली हों, उस राशि में सूर्य, बुध, चन्द्र के स्थित होने पर (जब गोचर में यह उक्त राशि में हों) उस समय विद्यारम्भ करना उत्तम है।

अथवा ऐसे समय में कोई भी बौद्धिक काम लेखन, अध्ययन, शोध, प्रकाशन आदि सफल व लाभ कारी होता है।

(१८) बुधाष्टकवर्ग में किसी राशि में एक भी रेखा प्राप्त न हुई हो, उक्त राशि पर से गोचर में जब शनि भ्रमण करता है– उस समय सम्पत्तिहानि, पारिवारिक समस्यायें, बन्धुबान्धवों से विवाद एवं बन्धुहानि आदि अनिष्टफल होता है।

जैसे बुधाष्टक वर्ग में सिंहराशि रेखा शून्य हो, तो जब गोचर में शनि सिंह राशि पर परिभ्रमण करेगा तब उस समय पारिवारिक विवाद, बन्धु हानि सम्पत्ति हानि आदि होगी।

(१९) गुरु के अष्टकवर्ग में जिस राशि में सर्वाधिक रेखा प्राप्त हुई हों, उसी लग्न में पुत्र की कामना से जातक को गर्भाधान करना चाहिए।

(२०) गुरु के अष्टकवर्ग में जिसराशि में अधिक रेखा हों, उस राशि की जो दिशा हो– उसी दिशा में जातक को धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती है अर्थात व्यवसाय या सेवा के लिये जातक को वही दिशा चुननी चाहिए।

इसके दो प्रकार हैं :—

(क) लग्न पूर्व, सप्तम पश्चिम, चतुर्थ दक्षिण और दशम उत्तर दिशा सूचित करती हैं—इस प्रकार वह राशि लग्न से जिस दिशा में हो। इसी प्रकार उपदिशाओं आग्नेय आदि भी कल्पना करना चाहिए—जैसे पूर्व (लग्न से चतुर्थ के मध्य, द्वितीय, तृतीय भाव) और दक्षिण के मध्य आग्नेय हुआ।

(ख) मेष, सिंह, धनु—पूर्व दिशा सूचक।
वृष, कन्या, मकर—दक्षिण।
मिथुन, तुला, कुंभ—पश्चिम।
कर्क, वृश्चिक, मीन—उत्तर की सूचक हैं।

(२१) बृहस्पति के अष्टकवर्ग में जिसराशि में सबसे कम या ४ से न्यून रेखा प्राप्त हों उस राशि में सूर्य स्थित हो तो उस भाव की हानि करता है (गोचर में भी सूर्य जब उस राशि से भ्रमण करेगा—उसभाव सम्बन्धी कुफल करेगा)। विघ्नकारक समय होता है।

(२२) बृहस्पति अपने अष्टकवर्ग में पाँच से अधिक रेखा प्राप्त करके लग्न से षष्ठ, अष्टम, द्वादश में हो तो भी शुभ है—ऐसा जातक दीर्घायु, सम्पन्न तथा शत्रुनाशी होता है।

यदि बृहस्पति के साथ चन्द्रमा भी हो तो विशेष उत्तम है।

(२३) यदि बृहस्पति उच्च या स्वगृही का होकर, अथवा शत्रुक्षेत्री या अस्त न होकर, लग्न से केन्द्र में हो या नवम में हो और अपने अष्टकवर्ग में आठ रेखा प्राप्त करे तो जातक राजतुल्य वैभव शाली तथा विश्व प्रसिद्ध यशस्वी होता है।

(२४) शुक्र लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो, आठ रेखा अपने अष्टकवर्ग में प्राप्त हो जातक वाहनादि वैभव से युक्त, बलशाली, दण्डाधिकारी आदि शक्तिप्राप्त व्यक्ति होता है। सात रेखा हों तो भी जीवन पर्यन्त सुखी व वैभवशाली होता है।

(२५) शुक्र नीच, अस्त का होकर अष्टम या व्यय भाव में बैठा हो तो (शुक्राष्टकवर्ग में कम रेखा प्राप्त हो) राजयोग का विनाश करता है अर्थात् अन्य राजयोगों के होने पर भी इस योग के कारण उसे राजयोग का पूरा फल नहीं मिलेगा।

(२६) शुक्राष्टकवर्ग में जिस राशि को कम से कम रेखा मिले हों, उसी राशि की दिशा में (राशियों की दिशा सूत्र–२० में ऊपर देखें) घर के अन्दर पत्नी के सोने का कमरा बनाना चाहिए।

(२७) शनि लग्न से त्रिकोण में हो और उसे अपने अष्टकवर्ग में कोई भी रेखा प्राप्त न हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु या धनहानि होती है। (कुछ विद्वानों ने शनि के स्वगृही होने पर यह फल कहा है–जो युक्ति संगत नहीं प्रतीत होता)।

(२८) शनि केन्द्र में हो, उच्च का न हो और अपने अष्टकवर्ग में उसे १, २, ३ या ४ रेखा ही प्राप्त हों तो जातक अल्पायु होता है।

(२९) शनि बलवान होकर लग्न में हो, अपने अष्टक वर्ग में उसे ५ या ६ रेखा मिलें, शुभ नहीं है, ऐसा जातक आर्थिक दृष्टि से दुर्बल तथा जन्म से ही दुखी होता है।

(३०) नीच या शत्रुराशि स्थित शनि अपने अष्टकवर्ग में पाँच से अधिक रेखा प्राप्त करे और चन्द्रमा शुभ वर्ग में हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(३१) यदि शनि अस्त, नीच, शत्रुराशि का होकर अपने अष्टकवर्ग में ४ या ५ रेखा प्राप्त करे—तो साधारण व्यक्ति भी वाहन तथा धन-धान्य से सम्पन्न होता है।

(३२) शनि लग्न या पंचम हो और अपने अष्टक वर्ग में आठ रेखा प्राप्त करे तो जातक एक सिद्धहस्त तांत्रिक होता है। मेरे मत से कुशल कूटनीतिज्ञ होगा।

(३३) इसी प्रकार लग्न या पंचम में शनि हो, अपने अष्टकवर्ग में सात रेखा प्राप्त हो, ऐसा जातक भी पर्याप्त सम्पन्न होता है।

(३४) सर्वाष्टकवर्ग में दशमभाव में जितनी रेखा हों, एकादश में उससे अधिक हों, एकादश से द्वादश में कम हों, द्वादश से लग्न में अधिक हों—ऐसा जातक सम्पत्तिशाली, भोगी व सुखी होता है।

(३५) सर्वाष्टकवर्ग में, लग्न में, जितनी रेखायें हों—उतने वर्ष की आयु से ही लाभ व भाग्योदय प्रारम्भ होता है।

(३६) द्वादशेश शनि की राशि का हो, लग्न तथा अष्टम के स्वामी दुर्बल हों तो लग्न में जितनी रेखायें हों [सर्वाष्टकवर्ग में] उतने ही वर्ष की आयु होती है।

(३७) सुखेश लग्न में हो, लग्नेश चौथे हो तथा लग्न और चौथेभाव में प्राप्त रेखाओं का योग तैंतीस या इससे ऊपर हो तो बहुत ही सम्पत्तिशाली होता है।

(३८) लग्न, चतुर्थ और एकादश इन तीनों भावों में सर्वाष्टक वर्ग [समुदायाष्टकवर्ग] में प्राप्त रेखाओं का योग तीस से ऊपर हो तो जातक तेजस्वी, सम्पन्न, राजसम्मान युक्त होता है। जीवन के ४० वर्ष की आयु के बाद भाग्योदय होता है।

(३९) यदि सर्वाष्टकवर्ग में चतुर्थ और नवम भाव में प्राप्त रेखाओं का योग २५ से ३० तक हो तो २८वें वर्ष से भाग्योदय होता है, वाहनादि सुख प्राप्त करता है।

(४०) वृहस्पति कर्क राशि का चतुर्थ हो, सर्वाष्टकवर्ग में चौथेभाव में ४० से ऊपर रेखा प्राप्त हों, सूर्य मेष का लग्न में हो तो जातक का महान राज-योग होता है।

(४१) सर्वाष्टकवर्ग में लग्न को ४० से ऊपर रेखा मिलें, और उसमें धनुराशि का गुरु, अथवा मीनराशि का शुक्र, अथवा मकर का मंगल, अथवा कुंभ का शनि हो—महान राजयोग होता है।

रेखाओं से भावफल

रेखाओं से प्रत्येक भाव का शुभाशुभ फल भी कहा जाता है। जिस भाव में अधिक रेखा प्राप्त हों वह भाव बली होगा और उसभाव से सम्बन्धित वृद्धि होगी। कम रेखा होने पर भाव की हानि जैसे व्यय में अधिक रेखा होने से व्यय-वृद्धि, लग्न में अधिक रेखा से नीरोगता व दीर्घायु, धनभाव में रेखाधिक्य से सम्पन्नता आदि।

रेखाओं की स्थिति से फलादेश

किस राशि तथा किस भाव में [सर्वाष्टकवर्ग चक्र में] कितनी रेखायें प्राप्त हैं। इसके अनुसार भी शुभाशुभ फल कहने का विधान है।

जिस दिशा में अधिक रेखा प्राप्त हों—घर के उसी दिशा में भण्डार, पशुशाला आदि करना लाभकारी एवं शुभ होता है। इसी प्रकार जन्म-स्थान से उसी दिशा के देश-प्रदेश में लाभ, आजीविका, व्यापार शुभ होता है।

लाभकारी दिशा का विचार

दिशा विचार के प्रति तीन मत मिलते हैं। प्रथम मतानुसार—

(१) लग्न—पूर्वदिशा [व्यय, लग्न, धन = ३ का योग]
चतुर्थभाव—दक्षिण दिशा [तृतीय, चतुर्थ, पंचम का योग]
सप्तम—पश्चिम दिशा [षष्ठ, सप्तम, अष्टम का योग]
दशम—उत्तर दिशा [नवम, दशम, एकादश का योग]

(२) लग्न—पूर्व, चतुर्थ दक्षिण, सप्तम पश्चिम,
दशम उत्तर—इसी प्रकार उप दिशाओं की कल्पना करें। जैसे—द्वितीय-तृतीय से आग्नेय, पंचम षष्ठ से नैऋत्य, अष्ट, नवम से वायव्य, एकादश-द्वादश से ईशान।

जैसे इस उदाहरण में दी गयी कुण्डली में

(क) व्यय, लग्न, धन में—३२ + ३३ + २७ = ९२
(ख) तृतीय, चतुर्थ पंचम में—३१ + ३१ + ४० = १०२
(ग) षष्ठ, सप्तम, अष्टम में—४० + २९ + ३४ = १०३
(घ) नवम, दशम, एकादश में—२९ + ३० + ३० = ८९

क्योंकि सर्वाधिक रेखा [१०३] षष्ठ, सप्तम, अष्टम में प्राप्त है, अत: पश्चिम दिशा अधिक शुभ है। इसके बाद [१०२] दक्षिण शुभ है। उत्तर दिशा [८९] सबसे कमजोर है।

दूसरी पद्धति से सर्वाधिक रेखा [४०] पंचम व षष्ठ में प्राप्त हैं—अत: नैऋत्य दिशा सर्वोत्तम है। वैसे चारों केन्द्रों में से लग्न [३३] में सर्वाधिक रेखा होने से पूर्व शुभ है।

अत: निष्कर्ष यह रहा कि इस जातक को जन्म स्थान से दक्षिण दक्षिण-पूर्व दिशा अधिक लाभकारी एवं शुभ है।

(३) एक अन्य मत से दिशाओं का विचार और फल इस प्रकार है—

राशि		दिशा		रेखाएँ		योग		फल
१+५+९	=	पूर्व	=	४०+३०+२७	=	९७	=	सम
२+६+१०	=	दक्षिण	=	२९+३०+३१	=	९०	=	हानि
३+७+११	=	पश्चिम	=	३४+३२+ '१	=	९७	=	सम
४+८+१२	=	उत्तर	=	२९+३३+४०	=	१०२	=	लाभ

राशियों की दिशाएं, पहले बताई जा चुकी हैं। राशि की रेखा ही, दिशा की रेखा होती है इनका योग कीजिये। फिर ९६ रेखा से अधिक योग वाली दिशा में यात्रा, व्यापार, गोशाला, मकान और द्वार का कार्य करने पर सुख, ऐश्वर्य आदि की वृद्धि होती है।

अनुपात—कुल रेखा ३८६ ÷ ४ = लब्धि ९६।। इस लब्धि से अधिक में सुख, लब्धि समान में सम फल, न्यून में हानि।

सुखी अवस्था विचार

मीन राशि से चार–चार राशि का रेखा–योग करे, किन्तु अष्टम और व्यय भाव की रेखायें त्याग दे, तो क्रमशः बाल्य, युवा, वृद्ध अवस्था की रेखाएँ होती हैं। कुल रेखाओं के योग में ३ से भाग दें, लब्धि से अधिक रेखा वाली अवस्था, सुखमय व्यतीत होती है। यथा—

[मीन + मेष + वृष + मिथुन रेखा योग
[४० + ४० + २९ + त्याज्य = बाल्यावस्था = १०९ [बाल्यावस्था सम]

[कर्क + सिंह + कन्या + तुला
[२९ + ३० + ३० + त्याज्य = युवावस्था = ८९ [युवावस्था कष्ट]

[वृश्चिक + धनु + मकर + कुम्भ
[३३ + २७ + ३१ + ३१ = वृद्धावस्था = १२२ [वृद्धावस्था सुखमय]

कुल रेखा योग ३२० ÷ ३ = लब्धि १०७खण्ड

इसमें भी दूसरा मत इस प्रकार है—

लग्न से चतुर्थ तक के रेखायोग = बाल्यावस्था।

पंचम से अष्टम तक के रेखायोग = युवावस्था।

नवम से द्वादश तक के रेखायोग = वृद्धावस्था।

तदनुसार—

(अ) ३३ + २७ + ३१ + ३१ = १२२ बाल्यावस्था — सम।

(आ) ४० + ४० + २९ + ३४ = १४३ युवावस्था — सुखपूर्ण।

(इ) २९ + ३० + ३० + ३२ = १२१ वृद्धावस्था — सम।

फलित क्षेत्र में इसके उपयोग, और भी मिलेंगे।

शुभकार्यों में अष्टकवर्ग की शुद्धि

विवाह, उपनयन आदि मांगलिक संस्कारों तथा यात्रा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि प्रत्येक शुभ कार्यों पर ग्रहों की शुद्धि देखने का विधान है। विशेषकर उपनयन में रवि चन्द्र व गुरु इन तीनों की शुद्धि. कन्या के विवाह पर गुरु की शुद्धि, पुत्र के विवाह पर सूर्य की शुद्धि [चन्द्रमा की शुद्धि सर्वत्र] देखी जाती है।

वर्तमान में अष्टकवर्ग के गणित से बचने के लिये इनकी शुद्धि गोचर द्वारा देख ली जाती है, जो स्थूल है। गोचर में इन्हें जन्मराशि से ४, ८, १२वें नहीं होना चाहिए। लेकिन प्राचीन आचार्यों का कथन है कि प्रत्येक संस्कार या शुभ कार्य पर अष्टकवर्ग के द्वारा ही शुद्धि देखना चाहिए क्योंकि यह सूक्ष्म है। गोचर की शुद्धि स्थूल है :—

अष्टकवर्ग विशुद्धेषु गुरुशीतांषु भानुषु।
अतोद्वाहादि कर्तव्यो गोचरे न कदाचन्॥
अष्टक वर्गेषु ये शुद्धास्ते शुद्धा सर्वकर्मसु।
सूक्ष्माष्टवर्ग संशुद्धिः स्थूला शुद्धिस्तु गोचरे॥

अष्टकवर्ग में ग्रहों की शुद्धि देखने की विधि यह है कि सूर्य, चन्द्र या गुरु [जिसकी शुद्धि देखनी हो] किस राशि में वर्तमान में हैं—यह देखें।

जन्मकुण्डली के आधार पर उस ग्रह [सूर्य, चन्द्र, गुरु] के अष्टकवर्ग चक्र में देखें कि उस राशि में उसे कितनी रेखा प्राप्त हैं? यदि उसे चार या उससे अधिक रेखा प्राप्त हैं तो शुद्ध है। चार से कम रेखा प्राप्त हैं तो अशुद्ध है।

उदाहरण के रूप में—उपरोक्त उदाहरण में हमें सूर्य की शुद्धि देखनी है। क्या उपरोक्त जातक को २५ जनवरी ८६ के दिन सूर्य शुद्ध है? इस दिन सूर्य मकर राशि में है, सूर्याष्टकवर्ग में मकरराशि में केवल दो [२] रेखा प्राप्त हैं, अतः सूर्य शुद्ध नहीं है।

अष्टकवर्ग में इस बात का कोई महत्व नहीं है कि वह जन्मराशि से कितने स्थान पर है, जैसे मेष का सूर्य जन्मराशि से द्वादश होते भी छ [६] रेखा प्राप्त होने से शुद्ध माना जायगा [सूर्याष्टक वर्ग में मेष ६ रेखा प्राप्त हैं]।

सूर्य का गोचर फल

मानव जीवन में 'गोचर' फल का विशेष महत्व है, क्योंकि ग्रह-गोचर पर ही सामयिक एवं सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलों की प्राप्ति संभव है। जैसाकि आचार्य वसिष्ठ ने कहा है :—

"गोचरबलानाभिज्ञास्त्वतिलोके यान्ति हास्यतां" अर्थात् जो व्यक्ति गोचर फल को नहीं जानता, समाज में (फल कथन सत्य न होने पर) उसका उपहास होता है। अत: गोचरफल फलित ज्योतिष में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ग्रह-गोचर पर आचार्य लल्ल, वराहमिहिर आदि ने विस्तार से लिखा है। जन्म राशि से विभिन्न स्थानों में सूर्य का गोचर फल इस प्रकार कहा गया है—

राशि गोचर

(१) जन्मराशि में—स्थान परिवर्तन, भ्रमण, मानसिक खेद, स्वास्थ्य शिथिल, व्ययवृद्धि, हानि की संभावना एवं कोष्ठ (उदर) विकार।

(२) द्वितीय में—सुखहानि, धोखे का भय, नेत्र विकार, निरर्थक चिन्ता एवं भय, व्यय वृद्धि, हानि की संभावना।

(३) तीसरे में—सुखशान्ति, उत्साह, लाभ, आर्थिक स्थिति में सुधार, शत्रु-पराजय।

(४) चौथे में—स्वास्थ्य में गिरावट, पारिवारिक सुख में कमी, समस्त साधन होते भी सुखोपभोग में बाधा, प्रत्येक काम में विघ्न-विलम्ब, सामाजिक वातावरण भी अपमानजनक विपरीत।

(५) पंचम—शत्रुवृद्धि, स्वास्थ्य शिथिल, मानसिक कष्ट, दीनता एवं मानसिक खिन्नता।

(६) छठे में—शत्रुपराजय, स्वास्थ्य ठीक, उत्साह, हर्ष।

(७) सप्तम—व्ययवृद्धि, भ्रमण, परिश्रम अधिक सुखोपभोग में बाधा, स्वास्थ्य मध्यम, उदर विकार।

(८) आठवें—अशान्ति, सुखहानि, आत्मीय एवं पारिवारिक जनों से भी सुख-सहयोग न मिलना, निरर्थक चिन्ता एवं भय, स्वास्थ्य में गिरावट।

(९) नवम में—दीनता, प्रत्येक कार्य में विलम्ब-बाधा, स्वास्थ्य मध्यम, सामाजिक विरोध।

(१०) दशम में—उत्तम फलदायक है। नीरोगता, जय, शत्रुपराजय, लाभ, आर्थिक सुधार, रुके कामों में प्रगति व सफलता, यश, उन्नति आदि।

(११) एकादश में—लाभ, आर्थिक स्थिति में सुधार, सामाजिक, प्रतिष्ठा।

(१२) द्वादश में—विघ्नबाधा, व्ययवृद्धि, हानि की संभावना एवं आर्थिक कष्ट तथा विशेष प्रयासों से ही कोई कार्य सफल हो सकता है।

नक्षत्रचार से सूर्य का गोचरफल

जिस प्रकार जन्मराशि से प्रत्येक भाव में ग्रह के संचार पर विभिन्न फल प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार जन्म नक्षत्र से भी ग्रहों के दूसरे नक्षत्रों पर भ्रमण का प्रभाव होता है। राशि परिभ्रमण की अपेक्षा नक्षत्र परिभ्रमण का फल अधिक सूक्ष्म है। हमारे पूर्वाचार्यों ने जन्मनक्षत्र पर से ग्रहों के भ्रमण पर भी अपने अनुभूत विचार व्यक्त किये हैं—

इस पद्धति में पूरे नक्षत्र चक्र (राशिचक्र) को एक मनुष्याकार रूप में विभक्त किया गया है और तदनुसार फल व्यक्त किया गया है। देखें—राशि गोचर में जहां जन्मराशि के सूर्य को शुभ नहीं माना जाता है वहीं नक्षत्र गोचर में जन्म नक्षत्र पर स्थित सूर्य राजसम्मान व लाभदायक शुभ कहा गया है। अत: राशिगोचर और नक्षत्रगोचर दोनों से प्राप्त फलों का तुलनात्मक विवेचन कर फल निर्धारित करने चाहिए।

जैसे :—

किसी का जन्मनक्षत्र 'भरणी', जन्मराशि 'मेष' है। सूर्य भी इसी नक्षत्र में है राशि गोचर में अशुभ होने से अशुभ फलदायक है।

यही सूर्य भरणी में राशिगोचर से अशुभ तथा नक्षत्रगोचर से शुभ [शिर में] होगा—अत: शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के यश, लाभ, राजसम्मान साथ ही व्ययवृद्धि, स्वास्थ्य में गिरावट, मानसिक खेद आदि मिश्रित फल देगा।

आचार्य लल्ल तथा श्रीपति के विचार इसमें मुख्य हैं। जन्मनक्षत्र से सूर्य के परिभ्रमण फल इस प्रकार हैं :—

[१] सूर्य स्थित नक्षत्र से अपने नक्षत्र तक गिनें। १, २, ३ नक्षत्र पर [शिर में स्थिति] यश, लाभ, राजसम्मान।

[२] ४, ५, ६ [मुख में] उत्तम सुस्वादु भोजन की प्राप्ति, सुखोपभोग।

[३] ७, ८ [कंधे में] धन प्राप्ति, अधिकार प्राप्ति ।
[४] ९, १० [बाहु में] आचार्य श्रीपति के मत से उत्साह, पराक्रम, नीरोगता आदि शुभ किन्तु आचार्य लल्ल इसे स्थान परिवर्तन या स्थानहानि सूचक मानते हैं ।
[५] ११, १२ [हाथ में] चोरी का भय तथा मनुष्य में स्वयं भी चोरी, धूर्तता आदि दुर्गुणों में वृद्धि ।
[६] १३, १४, १५, १६, १७वें में [हृदय में] लल्ल जी के मत से धनप्राप्ति सुख शुभफल है । श्रीपति जी के मतानुसार दरिद्रता, धनव्यय ।
[७] १८वें [नाभि में] धैर्य, संतोष [लल्ल जी के मत से], क्रोध [श्रीपतिः] ।
[८] १९वें [गुदा में] कामविकार, परस्त्रीसमागम या समागमनेच्छा ।
[९] २०, २१वें में [जांघों में] भ्रमण, देश-विदेश भ्रमण ।
[१०] २२, २३, २४, २५, २६, २७वें में [पैर में] स्वास्थ्य में गिरावट, शरीर कष्ट की संभावना ।

सूर्यकालानल चक्र

ग्रहों के गोचरफलों के अध्ययन हेतु राशिगोचर और नक्षत्र गोचर का विचार तो है ही, साथ ही कुछ और चक्र भी आचार्यों ने दिये हैं । जिनके द्वारा फलादेश और सूक्ष्म तथा सटीक प्राप्त हो सकता है ।

इसी प्रसंग में सूर्य के गोचरफल की सूक्ष्मता के लिए 'सूर्यकालानल चक्र' का विचार है । विशेषकर व्यक्ति के रोगग्रस्त होने, वाद-विवाद के प्रसंग उपस्थित होने, युद्ध शक्ति परीक्षण या किसी सामाजिक प्रतिस्पर्धा (चुनाव) के अवसर पर, तथा यात्रा के समय इस चक्र से फलित देखना महत्त्वपूर्ण है, जिसकी विधि इस प्रकार है :—

तीन खड़ी रेखा खींचें, इन तीनों के आगे त्रिशूल लगायें । फिर तीन तिरछी रेखा खींचे । अब चारों कोनों पर दो-दो रेखा दें । अब त्रिशूल वाली रेखाओं और ऊपर के दो कोने की रेखाओं के बीच एक रेखा खींच कर दोनों ओर शृंग बनायें, यही सूर्यकालानल चक्र है (चक्र देखें) ।

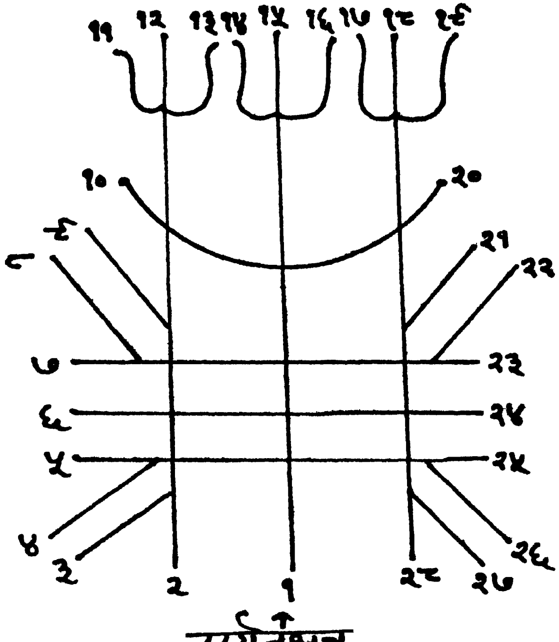
अब बीच वाले त्रिशूल के अधोभाग में (क्रमांक १ पर) उस नक्षत्र को लिखें, जिस नक्षत्र में उस दिन सूर्य स्थित है । उसके आगे के नक्षत्रों को अभिजित सहित क्रमशः दक्षिण, पूर्व, उत्तर की ओर से जैसे कि चक्र में प्रदर्शित (क्रमांक २, ३, ४, ५ आदि) हैं । उसी प्रकार लिखें । अब देखें, जन्मनक्षत्र कहाँ पड़ा है ? उसका फल इस प्रकार है :—

(अ) क्रमांक २८ त्रिशूल के अधोभाग में—निरर्थक चिन्ता, मानसिक कष्ट ।
,, १ ,, —स्वास्थ्य के लिये प्रतिकूल, किसी प्रकार का बन्धन ।
,, २ ,, —प्रतिबन्ध ।

(आ) क्रमांक १० शृंगों में—रोगभय, स्वास्थ्य शिथिल।
और ,, २० ,,

(इ) त्रिशूल में—[क्रमांक ११ से १९] कष्टप्रद, प्रत्येक दृष्टि से प्रतिकूल।

(ई) शेष में [क्रमांक ३ से ९ तक और २१ से २७ तक] यह सर्वथा हर प्रकार शुभ है। जो विजय सुख, नीरोगता, कार्यसिद्धि सूचक है।



सूर्यनक्षत्र

उदाहरण

एक व्यक्ति का जन्म नक्षत्र पुष्य है। नवम्बर २६ को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में था। पूर्वोक्त चक्रानुसार अनुराधा को क्रमांक १ पर मान कर पुष्य तक गिने तो पुष्य नक्षत्र की स्थिति क्रमांक २० पर आती है। अतः शृंग में स्थिति होने के कारण रोगभय व स्वास्थ्य में शिथिलता सूचक है। अतः ऐसे व्यक्ति को इस समय किसी युद्ध, वाद-विवाद, प्रतिस्पर्धा या यात्रा से दूर रहना चाहिए और स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए।

चन्द्रमा का गोचर फल

गोचर फलों में चन्द्रमा का गोचर फल सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि अन्य ग्रह एक राशि पर पर्याप्त समय तक रहते हैं जबकि चन्द्रमा एक राशि पर केवल सवा दो दिन रहता है अतः दिन-प्रतिदिन की घटनाओं के बारे में फलादेश या पूर्वानुमान चन्द्रमा के गोचर से ही करना संभव होता है। इसके अलावा अन्य ग्रहों से भी गोचर द्वारा जब चन्द्रमा युति करता है तब-तब उन ग्रहों का गोचर फल भी विशेष प्रभावकारी होता है।

राशि गोचर

आचार्य श्रीपति, मल्ल, ढुण्ढराज, मंत्रेश्वर आदि ने चन्द्रमा के गोचर फल इस प्रकार बतलाये हैं—

(१) जन्म राशि में आर्थिक लाभ, नीरोगता, सुख, उत्तम भोजन तथा भाग्योदय कारक होता है।

(२) द्वितीय में—व्यय वृद्धि, हानि की संभावना, अपयश एवं मान हानि के प्रसंग, प्रत्येक काम में विलम्ब या बाधा।

(३) तीसरे-सुख, आर्थिक लाभ, दाम्पत्यसुख, सुवस्त्र भोजनादि, अनुकूल समाचारों की प्राप्ति, किसी काम में सफलता।

(४) चतुर्थ में—स्वास्थ्य में गिरावट, आत्मविश्वास का अभाव, मानसिक अशान्ति, छाती के रोग, निरर्थक भय।

(५) पंचम में—विघ्नबाधा, स्वास्थ्य मध्यम, दीनता अर्थात मानसिक खिन्नता, असफलता एवं दुख।

(६) षष्ठ—आर्थिक लाभ, नीरोगता, सुख, शत्रु पराजय।

(७) सप्तम—यात्रा सफल, सम्मान, सुन्दर भोजन, दाम्पत्य सुख, विलास के साधन, आर्थिक लाभ, नीरोगता।

(८) अष्टम—स्वास्थ्य में गिरावट, कान्ति हीनता, निरर्थक भय, प्रतिकूल घटनायें।

(९) नवम—राजद्वार एवं न्यायालय से सम्बन्धित मामलों में भयजनक प्रतिकूल परिस्थितियां, परिश्रम अधिक, लाभ कम, स्वास्थ्य में गिरावट, पेट के रोग, परिस्थितियों का बन्धन, मानसिक अशान्ति ।

(१०) दशम—सम्मान, लाभ, रुके कामों में सफलता, यश, सुख ।

(११) एकादश—आमोद-प्रमोद, आर्थिक लाभ, सुख, मित्रों एवं सहोदरों से समायोग एवं उनका सुख सहयोग, मानसिक सुख ।

(१२) द्वादश में—अशान्ति, व्यय वृद्धि, हानि संभव, प्रत्येक काम में विपरीत परिणाम, मानसिक कष्ट ।

उपरोक्त फलों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जन्म राशि से १, ३, ६, ८, १०, ११ में चन्द्रमा शुभफल दायक तथा शेष में विपरीत फल दायक है लेकिन वास्तव में केवल ४, ८, १२ में ही विपरोत फल देता है । शेष २, ५, ९ में चन्द्रमा के फल उसकी कला पर निर्भर हैं । यदि उक्त भावों पर परिभ्रमण के समय चन्द्रमा पूर्ण (अर्थात् आधे से ऊपर जो कि शुक्ल पक्ष अष्टमी से लेकर कृष्ण पक्ष अष्टमी तक रहता है) हो तो २, ५, ९वें भी चन्द्रमा शुभफल ही देगा :—

"पुत्र धर्म धनस्थस्य चन्द्रस्योक्तमसत्फलम् ।
कलाक्षये परिज्ञेयं कला वृद्धौतु साधुताम् ।।"

नक्षत्र चार से फल

नक्षत्र चार में आचार्य गर्ग ने चन्द्रस्थित नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र की स्थिति और उसका फल इस प्रकार बतलाया है :—

(अ) पहले में [मुख]—धन हानि, व्यय वृद्धि ।

[आ] २ से ७ तक [शिर में]—राजसम्मान आदि हर प्रकार शुभ ।

[इ] ८, ९, १० [दाहिने हाथ में]—हानि, व्यय वृद्धि ।

[ई] ११ से १६ [हृदय में]—दाम्पत्य सुख ।

[उ] १७ से १९ [बायें हाथ में]—स्वास्थ्य में गिरावट ।

[ऊ] २० से २५ [कुक्षि में]—सुख तथा विजय हर प्रकार शुभ ।

[ए] २६, २७ [पैरों में]—हानि, व्यय वृद्धि, भ्रमण एवं भय ।

आचार्य लल्ल का मत इससे भिन्न है । उनके मतानुसार चन्द्रमा का नक्षत्र चार फल इस प्रकार है :—

[अ] चन्द्र नक्षत्र से ६ तक [मुख में] स्थान हानि, धन हानि ।

[आ] ७ से १२ [पीठ में] धन लाभ ।

[इ] १३ से १८ [हाथों में] धन लाभ ।

[ई] १९ से २१ [गुह्य में] दाम्पत्य सुख ।

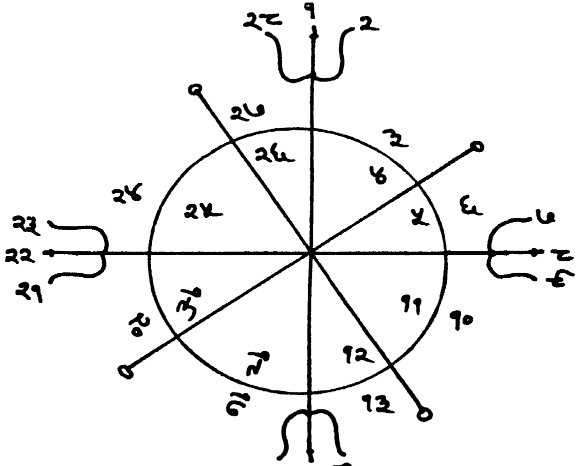
[उ] २२ से २४ (पैरों में) भ्रमण ।

[ऊ] २५ से २७ [कंठ में] सुख, हर प्रकार शुभ ।

इस प्रकार विभिन्न मतों का सार लेकर फलों को सुनिश्चित करना चाहिए ।

चन्द्रकालानल चक्र

चन्द्रमा



दैनन्दिन गोचरफल एवं दिनदशा के जानने हेतु चन्द्रकालानल चक्र का विशेष महत्व है । फिर भी इसके अलावा युद्ध या वाद-विवाद के मामलों में और यात्रा के समय इसका विचार मुख्य है ।

इसकी प्रक्रिया यह है कि एक गोलाकार रेखा खींचें। अब उसके केन्द्र से एक रेखा पूर्व-पश्चिम और एक रेखा उत्तर दक्षिण को खींचें और तदन्तर (इन रेखाओं को वृत्त से बाहर तक ले जाकर) इन चारों रेखाओं के अग्रभाग में त्रिशूल बनायें। इसके बाद इन चारों त्रिशूलों के बीच भी एक-एक रेखा आग्नेय वायव्य और नैऋत्य-ईशान को खींचें। अब पूर्व के त्रिशूल के मध्यभाग में उस नक्षत्र को स्थापित करें जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा हो, अर्थात उस समय जो दिन नक्षत्र हो, इसके बाद क्रमशः आग्नेय, दक्षिण दिशा के क्रम से वृत्त के बाहर अन्दर तथा त्रिशूलों में अभिजित सहित अठाईसों नक्षत्रों की स्थापना करें। अब अपना जन्मनक्षत्र जहाँ पड़े, तदनुसार उस दिन का फल ज्ञात करें :—

[अ] यदि अपना जन्मनक्षत्र किसी भी त्रिशूल में पड़े तो वह दिन युद्ध, वाद-विवाद, शक्ति परीक्षण तथा यात्रा के निमित्त वर्जित करें। शुभ नहीं है।

[आ] और यदि त्रिशूलों से बाहर पड़े, वृत्त के अन्दर या बाहर, तो शुभ है। अर्थात वह दिन यात्रा वाद-विवाद, युद्ध, शक्ति परीक्षा की दृष्टि से अनुकूल है।

निष्कर्ष यह हुआ कि चन्द्रमा के नक्षत्र से अपना जन्मनक्षत्र १, २, ७, ८, ९, १४, १५, १६, २१, २२, २३, २८, पड़े तो विपरीत और इनके अतिरिक्त पड़े तो शुभ है।

गोचर में मंगल का फल

मंगल अग्नितत्व का ग्रह है और शौर्य तथा तेज का प्रतीक है, पाश्चात्य लोग इसे युद्ध का देवता भी कहते हैं। जन्मराशि से विभिन्न भावों में इसके परिभ्रमण का फल पूर्वाचार्यों ने निम्न प्रकार कहा है :—

राशि गोचर

(१) जन्मराशि में—शत्रुभय, रोगभय, क्रोध एवं उत्तेजना, चोट आदि की संभावना (अग्नि, विष, शस्त्र आदि से भय)।

(२) द्वितीय में—धन की हानि, व्यय वृद्धि, राजद्वार से सम्बंधित मामलों में प्रतिकूल एवं भयजनक, पित्तविकार अग्नि आदि से स्वास्थ्य में गिरावट वाद-विवाद का भय, शत्रुभय।

(३) तीसरे में—आर्थिक लाभ, सहयोगियों एवं अधीनस्थ लोगों का सुख-सहयोग, उत्साह।

(४) चौथे मे—शत्रुवृद्धि एवं शत्रुभय, स्वास्थ्य में गिरावट एवं ज्वर उदरविकार गुह्यरोग आदि, किसी अवांछित दुष्ट पुरुष के कुसंग से हानि एवं समस्यायें।

(५) पंचम मे—व्ययवृद्धि हानि की संभावना, स्वास्थ्य शिथिल, शत्रुभय, कान्तिहीनता, सतान संबंधी समस्यायें।

(६) षष्ट में—सुखशान्ति, निर्भयता, शत्रु पराजय, आर्थिक लाभ एवं आर्थिक स्थिति में सुधार।

(७) सप्तम में—स्वास्थ्य मध्यम, दाम्पत्य जीवन में कटुता एवं वाद-विवाद भय, तथा वैवाहिक सुखहीनता, आँख तथा पेट के रोग।

(८) अष्टम में—अपमानजनक स्थिति, व्यय वृद्धि, हानि संभव, स्वास्थ्य में गिरावट, चोट एवं रक्तपात का भय, शत्रुवृद्धि एवं शत्रुबाधा।

(९) नवम में—शारीरिक पीड़ा, धन व्यय, हानि की संभावना, पराजय एवं असफलता आदि।

(१०) दशम में—सामान्यतः शुभ, समफलदायक, रुके हुए कामों में गति।

(११) एकादश में—विजय, विभिन्न प्रकार के धनागम, आकस्मिक लाभ एवं आर्थिक स्थिति में सुधार, आमोद-प्रमोद तथा भोगविलास एवं नीरोगता।

(१२) बारहवें में-स्वास्थ्य शिथिल, व्ययवृद्धि, आकस्मिक व्यय एवं आकस्मिक समस्यायें, हानि की सभावना, नेत्रपीड़ा, वैवाहिक जीवन में कटुता एवं सुखहीनता।

नक्षत्र गोचर

राशि गोचर की भांति ही आचार्य गर्ग तथा लल्ल ने मंगल के नक्षत्र-चार के फलों का भी विश्लेषण किया है। जो इस प्रकार है। महर्षि गर्ग जी के मत से मंगल स्थित [वर्तमान में मंगल जिस नक्षत्र में स्थित हो उस नक्षत्र में गिनती शुरू करें]।

नक्षत्र से अपना जन्मनक्षत्र जहाँ पड़े तदनुसार फल समझें :—

(अ) १ से ३ [मुख में] सुस्वाद भोजन, सुख।

(आ) ४ से ७ [शिर में] राजसम्मान प्रतिष्ठा।

(इ) ८ से ११ [बाहु में] इनमें ८, ९ में [दाहिने हाथ] जयदायक शुभफल है तथा १०। ११ में [बायें हाथ] रोग भय एवं कष्टकारक अशुभफल है

(ई) १२, १३ [कण्ठ में] हिचकी, चिन्ता।

(उ) १४ से १८ [हृदय में] धन लाभ आर्थिक सुधार।

(ऊ) १९ से २१ [गुह्य में] वैवाहिक सुख।

(ए) २२ से २७ [पद में] यात्राप्रसंग भ्रमण।

आचार्य लल्ल का मत इस प्रकार है :—

(अ) १ से ३ [मुख में] रोगभय।

(आ) ४ से ६ [आंखों में], लाभ, आर्थिक सुधार।

(इ) ७ से ९ [शिर में] यश प्रतिष्ठा।

(ई) १०, १३ [बाहों में] दक्षिण बाहु [१०, ११] में शोक और बायें बाहु में [१२, १३] रोगभय।

(उ) १४ १५ [कंठ में] हिचकी, चिंता।

(ऊ) १६ से २० [हृदय में] लाभ व आर्थिक सुधार।

(ए) २१ से २३ [गुदा में] वैवाहिक सुख।

(ऐ) २४ से २७ [पैरों में] भ्रमण, यात्राप्रसंग।

इस प्रकार तुलनात्मक विचार करके फल निश्चित करने चाहिए।

बुध का गोचर फल

सौरमण्डल में बुध सबसे तीव्रगामी ग्रह है जो सबसे कम समय में राशि परिभ्रमण करता है अतः बुध का गोचरफल विशेष महत्व रखता है। प्राचीन आचार्यों ने जन्मराशि से विभिन्न भावों में इसके परिभ्रमण का फल इस प्रकार व्यक्त किया है—

राशि गोचर

(१) जन्मराशि में—कुशब्द एवं कठोर वाक्य सहने एवं सुनने पड़ते हैं। आत्मीय एवं पारिवारिक जनों में चुगलखोरी एवं गलतफहमी से मनोमालिन्यता बढ़ती है, वाद-विवाद के प्रसंग आ सकते हैं। धन का व्यय बढ़ता है। परिस्थितियों से बंधा तथा अशान्त रहता है। धोखा प्राप्त हो सकता है।

(२) दूसरे में—धन का लाभ तो होता है लेकिन अनादर एवं पराजय की संभावना करता है।

(३) तीसरे में—सहोदरों, सहयोगियों का सुख सहयोग प्राप्त होता है किन्तु अपनी कमजोरियों के कारण विरोधियों, अधिकारियों, राजद्वार से सम्बन्धित मामलों में सशंकित रहता है। विरोधी सक्रिय व प्रभावशाली रहते हैं।

४) चौथे बुध में—धन की प्राप्ति, व्यापार में प्रगति, पारिवारिक सुख-सहयोग मित्रसुख, कुटम्बवृद्धि सूचक प्रत्येक दृष्टि से शुभफल दायक है।

५) पचम में—स्त्री पुत्रादि पारिवारिक जनों से मतभेद, अशान्ति कारक है।

६) षष्ठ में—लाभ, व्यवसायोन्नति, विजय, स्थान या नये कार्य की प्राप्ति, सुखशान्ति देता है।

७) सप्तम में—पारिवारिक अशान्ति तथा कटुता, स्वास्थ्य में गिरावट सूचक शुभ नहीं है।

८) अष्टम में—लाभ, व्यवसायोन्नति, नीरोगता, सुख-शान्ति, विजयदायक शुभ है।

(९) नवम में—आर्थिक कष्टदायक है, जो धन प्राप्त होने को हो—उसके प्राप्ति में विलम्ब, प्रत्येक काम में विघ्न कारक है।

(१०) दशम में—शत्रुपराजय, लाभ, व्यवसायोन्नति, रुके कामों में सफलता व प्रगति, पारिवारिक व दाम्पत्यसुख आदि हर प्रकार शुभ फलदाता है।

(११) एकादश में—लाभ, व्यवसायोन्नति, सुखशान्ति, स्त्रीपुत्रादि पारिवारिक सुख, मित्रसुख, बाह्य सहायता, आकस्मिक लाभदायक उत्तम है।

(१२) द्वादश में—शत्रुवृद्धि, पराजय एवं अपमान का भय, स्वास्थ्य में गिरावट, व्ययवृद्धि, धन-हानि कारक है।

राशिचार के साथ ही प्राचीन आचार्यों ने बुध के नक्षत्रचार के फलों का भी वर्णन किया है। हमें बुध के नक्षत्रचार के बारे में केवल आचार्य लल्ल के विचार प्राप्त हुये हैं जो इस प्रकार हैं।

नक्षत्र गोचर

जिस नक्षत्र में बुध स्थित हो, उससे अपने जन्म नक्षत्र तक गिनें, आपका जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े, तदनुसार फल ज्ञात करें।

(अ) १, २, ३, [शिर में] बुद्धि-विद्या में प्रगति,

(आ) ४, ५, ६, [मुख में] सुभोज्य भोजन, नीरोगता, सुखशान्ति।

(इ) ७, ८, ९, १० [वाम हस्त] सुख शान्ति, नीरोगता।

(ई) ११, १२, १३, १४ [दक्षिण हस्त] लाभ, व्यवसायोन्नति।

(उ) १५, १६, १७, १८, १९ [हृदय में] लाभ, आर्थिक स्थिति में सुधार।

(ऊ) २०, २१ [गुह्य स्थान में] स्वास्थ्य शिथिल, रोगभय।

(ए) २२, २३, २४, २५, २६, २७ [पैरों में] स्थानहानि, कार्यहानि, स्वास्थ शिथिल, रोग भय, आत्मीयजनों से विवाद।

इस प्रकार राशिचार तथा नक्षत्र चार के फलों की तुलनात्मक समीक्षा कर फल निर्धारित करने तथा कहने चाहिये।

बृहस्पति का गोचर फल

बृहस्पति एक राशि में लगभग एक वर्ष रहता है और वह सौर मण्डल का एक बड़ा प्रभावशाली ग्रह है अतः दीर्घकालीन गोचर फल देता है। किस व्यक्ति का कौन सा वर्ष किस प्रकार व्यतीत होगा—इसका निर्णय करने में बृहस्पति का गोचर फल बहुत महत्व रखता है। इसके गोचर फलों के बारे में आचार्यों ने निम्न फल व्यक्त किये हैं :—

(१) जन्मराशि में—बुद्धि विवेक काम नहीं देता, लाभ कम, व्यय अधिक, हानि की संभावना, निरर्थक भय, वाद-विवाद के प्रसंग, स्थान हानि अर्थात् पदावनति स्थान परिवर्तन या लाभ के किसी स्रोत में कमी।

(२) द्वितीय में—लाभ, आर्थिक स्थिति में सुधार, आमोद-प्रमोद, पारिवारिक सुख-शान्ति, हर प्रकार शुभ।

(३) तीसरे—स्थान हानि एवं कार्य हानि अर्थात् पदावनति स्थानान्तरण अथवा लाभ के किसी स्रोत एवं काम का छूटना, व्ययवृद्धि, स्वास्थ्य शिथिल, अनेक समस्यायें।

(४) चौथे—धन व्यय, हानि की संभावना, मित्रों तथा पारिवारिक जनों से सम्बन्धित समस्याओं के कारण घोर अशान्ति।

(५) पंचम—सुखशान्ति, पारिवारिक सुख, आमोद-प्रमोद, आर्थिक स्थिति में सुधार, लाभ, व्यवसायोन्नति, सन्तान तथा अधीनस्थ कर्मचारियों, मित्रों का सुख सहयोग।

(६) षष्ठ में—अशान्ति, शत्रुवृद्धि, स्वास्थ्य शिथिल।

(७) सप्तम में—लाभ, व्यवसायोन्नति, आर्थिक स्थिति में सुधार, पारिवारिक सुख-सहयोग, शान्ति एवं बुद्धि-विवेक का सदुपयोग।

(८) अष्टम में—व्ययवृद्धि, हानि की संभावना, किसी घटना से मानसिक कष्ट, स्वास्थ्य शिथिल, रोगभय, यात्रा में कष्ट तथा परिस्थितियों का बंधन।

(९) नवम में—लाभ, आर्थिक स्थिति में सुधार, व्यवसायोन्नति, सामाजिक यश-प्रतिष्ठा, आध्यात्मिक प्रगति, सुखशान्ति बुद्धि-विवेक का सदुपयोग, सन्तान पक्ष से सुखहर्ष, रुके कामों में प्रगति तथा सफलता ।

(१०) दशम में—लोगों से अकारण मनोमालिन्यता तथा मित्रता में भेद, हानि संभव, व्ययवृद्धि, किसी काम में असफलता, आय के स्रोतों में कटौती, स्थानान्तरण या कोई काम छूटना आदि ।

(११) एकादश में—स्थान एवं काम की [आय के नये स्रोतों की] प्राप्ति आर्थिक स्थिति में सुधार, व्यवसायोन्नति, रुके कामों में सफलता ।

(१२) बारहवें—व्ययवृद्धि, हानि संभव, किसी घटना से मानसिक कष्ट, स्वास्थ्य शिथिल ।

नक्षत्र गोचर

वृहस्पति के नक्षत्र गोचर के बारे में हमें केवल महर्षि गर्ग के विचार प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार हैं—

वृहस्पति जिस नक्षत्र में हो, उससे अपने जन्म नक्षत्र तक गिनें, जो संख्या हो तदनुसार फल निम्न है—

(अ) १, २, ३, ४ [शीर्षे] राजसम्मान, लाभ, सफलता ।

(आ) ५, ६, ७, ८ [दक्षहस्ते] लाभ, व्यवसायोन्नति ।

(इ) ९ [कण्ठ में] यश, प्रतिष्ठा, लाभ ।

(ई) १०, ११, १२, १३, १४ [वृक्ष] मित्रसुख, दाम्पत्यसुख, लाभ ।

(उ) १५, १६, १७, १८, १९, २० [पाद] समस्यायें, स्वास्थ्यशिथिल ।

(ऊ) २१, २२, २३, २४, [वामहस्ते] अनेक समस्यायें, शरीरकष्ट ।

(ए) २५, २६, २७ [नेत्रे] लाभ, सुख, अधिकार प्राप्ति, सफलता ।

इस प्रकार राशिगोचर तथा नक्षत्रगोचर के फलों की तुलनात्मक समीक्षा कर वास्तविक फल निर्धारित करना चाहिए ।

शुक्र का गोचर फल

शुक्र सुख-वैभव एवं विलासिता का ग्रह है। अतः जब शुक्र अनुकूल होता है तब मनुष्य सांसारिक सुख-वैभव, पारिवारिक सुख, आमोद-प्रमोद एवं भोग-विलास में सानन्द समय व्यतीत करता है और जब प्रतिकूल होता है तब समस्त सुख-वैभव एवं भोग विलास के साधन होते भी उनके उपयोग करने से वंचित रह जाता है। अतः शुक्र के गोचर का जीवन में एक विशेष स्थान है। यदि पर्याप्त धन सम्पत्ति होते भी जीवन में उसका सुखोपभोग न हो सका तो वह व्यर्थ है।

शुक्र के गोचर की एक विशेषता यह भी है कि वह कुछ ही एक-दो स्थानों को छोड़कर शेष सभी में अनुकूल फल देता है। महर्षियों एवं तत्ववेत्ता ऋषियों, ग्रन्थकारों ने शुक्र के गोचर फल इस प्रकार बतलाये हैं :—

१—जन्मराशि में—आर्थिक स्थिति में सुधार, लाभ, व्यवसायोन्नति, सुखोपभोग एवं आमोद-प्रमोद का वातावरण, शत्रु पराजय, वस्त्र-आभूषण आदि की प्राप्ति।

२—द्वितीय में—सुख, लाभ, निरोगता तथा सुखशान्ति का वातावरण, पारिवारिक सुख-संतोष एवं सहयोग, सेवा, राजद्वार तथा न्यायालय आदि राजद्वारीय मामलों में भी अनुकूल फलप्रद।

३—तीसरे में—शत्रु पराजय, विजय, सामाजिक सम्मान, लाभ, सुखशान्ति एवं निरोगता।

४—चौथे में—आर्थिक लाभ, निरोगता, सुखशान्ति, वस्त्र-आभूषणादि की प्राप्ति, पारिवारिक सुख, सामाजिक यश-प्रतिष्ठा।

५—पंचम में—संतानपक्ष से सुखहर्ष, संतान की प्राप्ति भी संभव (संभव होने पर), मित्र-सहयोग, बड़े लोगों का आशीर्वाद, आत्मसंतोष, निरोगता, व सुखशान्ति।

६—षष्ठ में—इस स्थान में शत्रुवृद्धि, पराजय का भय, स्वास्थ्य में गिरावट अपमानजनक प्रसंग, असफलता, अशान्ति आदि प्रतिकूल फल देता है।

७—सप्तम में—दाम्पत्यसुख में बाधा, पति या पत्नी को कष्ट या परस्पर मतभेद, सुखशान्ति का अभाव, किसी कारण से मानसिक कष्ट या कोई शोकप्रद समाचार दायक प्रतिकूल फल दायक है।

८—अष्टम में—स्वास्थ्य में सुधार, आर्थिक स्थिति में सुधार, दाम्पत्यसुख, भूमि, मकान, वाहन आदि अचल सम्पत्ति के मामले में भी अनुकूल एवं प्रगति सूचक।

९—नवम शुक्र—नीरोगता, लाभ, व्यवसाय में उन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा, आध्यात्मिक प्रगति, तीर्थाटनादि, धार्मिक एवं परोपकार के कार्य।

१०—दशम शुक्र—सुखशान्ति का अभाव, सेवा न्यायालय आदि राजद्वार से सम्बन्धित तथा सामाजिक मामलों में भी प्रतिकूल, अपमान तथा वाद-विवाद की आशका सूचक शुभ नहीं है।

११—एकादश में—धन की प्राप्ति, व्यवसायोन्नति, नीरोगता, सुखशान्ति, धन का सग्रह, वस्त्राभूषणादि प्राप्ति, मित्रों का सहयोग, स्त्री पुत्रादि पारिवारिक सुख आदि प्रत्येक दृष्टि से शुभ।

१२—द्वादश शुक्र—सामान्यत. ठीक है इसमें आर्थिक लाभ तो होता है लेकिन साथ ही व्यय वृद्धि भी होती है ; अतः धन स्थिर नहीं रहता।

शुक्र का नक्षत्रचार

राशिचार की तरह ही अन्य ग्रहों की भांति ही शुक्र के भी नक्षत्रचार के फलों का वर्णन प्राचीन भारतीय आचार्यों ने किया है। इस विषय में आचार्य श्रीपति और लल्ल के मत प्राप्त होते हैं।

[अ] आचार्य श्रीपति के मत से शुक्र का नक्षत्रचार का फल इस प्रकार है :—

शुक्र जिस नक्षत्र में हो उससे अपने जन्म नक्षत्र तक गिनें जो संख्या हो—उसका निवास व फल यह है—

१ से ४ तक (शिर में) राजसम्मान एवं राजद्वारीय मामलों में शुभ।

५ से ८ तक (कंठ में) आभूषण, वस्त्र आदि की प्राप्ति, लाभ, शुभ।

९ से १३ तक (हृदय में) सुखशान्ति, लाभ, सुख।

१४ से १६ तक (भुजा में) शत्रुवृद्धि, शत्रुभय।

१७ से २१ तक (नाभि में) मिष्ठान्नादि सुन्दर भोजन की प्राप्ति, सुख, लाभ।

२२ से २७ तक (पैर में) लाभ सुख नीरोगता।

(आ) आचार्य लल्ल का मत इससे भिन्न इस प्रकार है :—

१ से ३ (मुख में) व्ययवृद्धि धन की क्षति।

४ से ८ (सिर में) लाभ आर्थिक स्थिति में सुधार।

९ से १४ (पैरों में) व्यय हानि स्वास्थ्य में गिरावट।

१५ से १९ (हृदय में) सुखशान्ति लाभ।

२० से २७ (हाथों में) मित्र सुख सन्तानसुख लाभ नीरोगता हर प्रकार शुभ।

इस प्रकार शुक्र जिस नक्षत्र में स्थित हो, उस नक्षत्र से अपना नक्षत्र (श्रीपति तथा लल्ल दोनों के तुलनात्मक फलों को देखते हुए) ४, ५, ६, ७, ८, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६ या २७ वाँ होना शुभ हैं।

यहां अभिजित की गिनती नहीं है।

नक्षत्र चार और राशिचार के तुलनात्मक अध्ययन से वास्तविक एवं अधिक सूक्ष्म फल ज्ञान किये जा सकते हैं।

★

शनि का राशि गोचर फल

सौरमण्डल से नवग्रहों में शनि दूर स्थित है [यूरेनस आदि को छोड़कर] और एक राशि में लगभग ढाई वर्ष रहता है अत: काफी समय तक एक समान फल देता है इस कारण इसका फल गोचर में विशेष महत्व रखता है। प्राचीन आचार्यों ने शनि का गोचर फल इस प्रकार व्यक्त किया है :—

(१) जन्मराशि में—सुख शान्ति कम, अशान्ति का वातावरण, अग्नि आदि ज्वलनशील तथा विषाक्त वस्तुओं से शरीर कष्ट का भय, आत्मीय जनों से मनोमालिन्यता, स्वजनों से दूर निवास एवं वृथाटन, दीनता आदि।

(२) द्वितीय—व्ययवृद्धि, आर्थिक कष्ट तथा हानि का भय, स्वास्थ्य मध्यम रहने से रूप-सौन्दर्य तथा सुख से हीनता, दुर्बलता।

(३) तीसरे में—आर्थिक लाभ तथा आर्थिक संचय, व्यवसायोन्नति, नौकर-चाकर तथा वाहन पशु आदि का सुख, शत्रु पराजय, आत्मजय, नीरोगता, गृह-भूम्यादि सुख।

(४) चौथे में—स्त्री पुत्र एवं पारिवारिक जनों से सुख में कमी मनोमालिन्यता, पारिवारिक व सम्पत्ति विषयक समस्यायें, आत्मविश्वास में कमी, मानसिक अशान्ति, व्ययवृद्धि एवं आर्थिक कष्ट, शत्रुवृद्धि एवं विरोधी प्रबल।

(५) पंचम में—व्ययवृद्धि, शिक्षा में अरुचि, सन्तान सम्बन्धी समस्याएं, किंकर्तव्य विमूढ़ता एवं विवेक बुद्धि का अभाव, हानि संभव, सुखशान्ति कम, वाद-विवाद भय।

(६) षष्ठ में—आर्थिक लाभ व स्थिति में सुधार, नीरोगता, शत्रुपराजय, सुखशान्ति, आमोद-प्रमोद एवं पारिवारिक सुख-सहयोग।

(७) सप्तम में—मिथ्यापवादभय, दीनता मानसिक खेद, सुखशान्तिकम, परिश्रम अधिक, लाभकम, दौड़धूप तथा विदेश प्रवासादि। पारिवारिक सुख-सहयोग में कमी।

(८) अष्टम में—स्वास्थ्य में गिरावट, अनेक प्रकार से परिस्थितियों का बन्धन, परिश्रम अधिक, लाभकम, स्त्री-पुत्रादि पारिवारिक जनों का भी सुख सहयोग का अभाव, सुख के साधन होते भी उनके उपयोग से वंचित।

(९) नवम में—सामाजिक वातावरण प्रतिकूल, लोगों से अकारण बैर एवं मनोमालिन्यता, हृदयरोग की संभावना, स्वास्थ्य में गिरावट, परिस्थितियों का बन्धन, तांत्रिक क्रिया अभिचारादि से उत्पात, परिश्रम अधिक, प्रत्येक काम में विघ्नबाधा एवं विलम्ब, व्ययवृद्धि एवं हानि की संभावना।

(१०) दशम में—आर्थिक साधनों में वृद्धि, नये काम की प्राप्ति शुभ होते भी धन स्थिर न रहे, धन हानि संभव। यश-कीर्ति के तथा शिक्षा बुद्धि विवेक के मामले में प्रतिकूल। मानसिक शान्ति कम। अपयश एवं अनादर का भय।

(११) एकादश में—लाभ, आर्थिक सुधार, व्यवसायोन्नति, आमोद-प्रमोद एवं नीरोगता, पारिवारिक सुख, विलासिता आदि हर प्रकार शुभ।

(१२) द्वादश में—व्ययवृद्धि आर्थिक कष्ट, हानि, मानसिक कष्ट एवं शोक, सुख शान्ति का अभाव, स्वास्थ्य भी मध्यम।

साढ़े साती और ढइया

उपरोक्त गोचर फलादेश से यह स्पष्ट है कि शनि अपनी जन्मराशि से भ्रमण में—

[अ] तीसरे, छठे, एकादश में ही शुभफल देता है।

[आ] दशम में मिश्रित फल देता है।

[इ] और शेष १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १२वीं राशि में विपरीत फल देता है।

जब शनि जन्मराशि से १२वें, पहले या जन्मराशि पर, और द्वितीय में होता है तब "साढ़ेसाती" कही जाती है क्योंकि शनि एक राशि में ढाई वर्ष रहता है अतः इन तीन राशियों में उसे भ्रमण करने में साढ़े सात वर्ष लगते हैं, इसी हेतु साढ़े साती कहा जाता है।

इन तीनों को छोड़कर शेष विपरीत राशियों से जब [४, ५, ७, ८, ९] शनि भ्रमण करता है तब प्रत्येक राशि पर से भ्रमण के समय को "ढइया"

अर्थात् ढाई वर्ष की दशा कही जाती है। कुछ लोग ४, ८ वें ही ढइया मानते हैं।

शनि की साढ़े साती अशुभ ही फल दे, यह आवश्यक नहीं है, यद्यपि इन साढ़े सात वर्षो में वह अपना प्रतिकूल फल देगा ही लेकिन यदि जन्मकुण्डली या चन्द्रकुण्डली में शनि की स्थिति जन्म समय पर शुभ हो और शनि कारक हो तो यह उन्नति के शिखर पर भी पहुंचा देता है। विशेषकर जिनका जन्मलग्न या जन्मराशि वृष, कन्या, मकर, मिथुन, तुला या कुंभ हो और शनि शुभ स्थान में [जन्म समय] एवं बली हो तो यह अशुभफल नहीं देता।

जन्मलग्न या जन्मराशि के अनुसार साढ़ेसाती का पूर्वार्ध [दृष्टि—जब बारहवें राशि पर शनि का भ्रमण हो उसे पूर्वार्ध या दृष्टि कहते हैं] मध्य भोग य उदर [जन्मराशि पर शनि का भ्रमण काल और उत्तरार्ध [या पैर—जन्मराशि से दूसरे राशि पर शनि का भ्रमणकाल पैर या लात का कहा जाता है] का फल भिन्न-भिन्न राशियों पर अलग-अलग हो सकता है :—

राशि	पूर्वार्ध	मध्य	उत्तरार्ध
मेष	सामान्य	अशुभ	सामान्य
वृष	अशुभ	सामान्य	सामान्य
मिथुन	सामान्य	सामान्य	अशुभ
कर्क	सामान्य	अशुभ	अशुभ
सिंह	अशुभ	अशुभ	सामान्य
कन्या	अशुभ	सामान्य	सामान्य
तुला	सामान्य	सामान्य	अशुभ
वृश्चिक	सामान्य	अशुभ	सामान्य
धनु	अशुभ	सामान्य	सामान्य
मकर	सामान्य	सामान्य	सामान्य
कुंभ	सामान्य	सामान्य	सामान्य
मीन	सामान्य	सामान्य	अशुभ

इससे यह स्पष्ट है कि—

(अ) मकर व कुंभ राशि को साढ़े साती का कुफल बहुधा नहीं होता।

(आ) मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु और मीन को कुफल कम देता है।

(३) कर्क, सिंह राशि साढ़े साती से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं ।

साढ़े साती पर एक अन्य मत

साढ़े साती के सम्बन्ध में विद्वानों का एक मत और भी मिलता है । इसके अनुसार सभी राशियों पर न्यूनाधिक रूप से साढ़े साती का फल इस प्रकार होता है । साढ़े साती स्थूलमान से लगभग २७०० दिन रहती है, इन दिनों में जिस दिन से साढ़ेसाती आरम्भ हो—क्रमशः यह फल देता है :—

(१) प्रारम्भ से १०० दिन [मुखपर] हानि व्यय कारक ।

(२) १०१ से ५०० तक [दाहिने बाहु में] नीरोगता, विजय, लाभ ।

(३) ५०१ से ११०० दिनों तक [चरणों में] परिश्रम अधिक, लाभ कम, भ्रमण आदि ।

(४) ११०१ से १६०० तक [पेट में] लाभकारक शुभ ।

(५) १६०१ से २००० दिनों तक [बायें बाहु में] स्वास्थ्य में गिरावट व मानसिक कष्टप्रद ।

(६) २००१ वें से २३०० दिन तक [मस्तक में] उन्नति, लाभ, सफलता, राज्य सम्मानप्रद ।

(७) २३०१ से २५०० वें दिन तक [आंखों में] लाभ व सुखप्रद शुभ ।

(८) २५०१ वें दिन से २७०० वें दिन अर्थात् साढ़ेसाती के समाप्ति तक [गुदा में] कष्टप्रद ।

शनि के गोचर फलों पर नक्षत्रचार आदि का और भी विस्तृत विचार है ।

'साढ़ेसाती' से कोई भय नहीं

'शनि की साढ़ेसाती' के बारे में जनता को बहुत भ्रान्ति है, इसे अशुभ माना जाता है, वास्तव में ऐसा नहीं है । जैसा कि आप जानते हैं, साढ़ेसाती एक साथ तीन राशियों पर रहती है, कुल बारह राशियां हैं । इस प्रकार विश्व की कुल जनसंख्या की चौथाई [२५ प्रतिशत जनसंख्या] पर हमेशा साढ़ेसाती रहती है ।

साढ़ेसाती शुभ फल भी देती है, अशुभ भी, फिर अकेले शनि की साढ़े-साती का ही [शनि का गोचर फल] फल क्यों होगा ? क्या अन्य ग्यारह ग्रहों का कोई फल नहीं होगा ? वास्तव में सभी ग्रहों के गोचरफलों का फल निकाल-

कर और साथ ही जन्मकालीन ग्रहों, दशा, अन्तरदशाओं का भी फल देखकर तुलनात्मक अध्ययन कर, निष्कर्ष निकालकर फल कहना चाहिए।

शनि का नक्षत्र गोचर

शनि के राशि गोचर के साथ ही नक्षत्रगोचर [नक्षत्रचार] पर भी प्राचीन दुर्लभ ग्रंथों में अनेक आचार्यों के मत प्राप्त होते हैं। इनमें आचार्य श्रीपति व आचार्य लल्ल के विचार मुख्य हैं।

[अ] श्रीपति के मतानुसार शनि की स्थिति और फल इस प्रकार हैं। शनि स्थित नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिने, जन्म नक्षत्र जहाँ पर हो तदनुसार फल ज्ञात करें :

(१) मुख में–१–सुखशान्ति।

(२) गुदा में–२, ३–रोगभय।

(३) नेत्र में–४, ५–मनोवांछित सफलता कार्यसिद्धि।

(४) शिर में–६, ७, ८–राज्यसम्मान, लाभ, सुख।

(५) कोख में–९ से १३ तक–नीरोगता सुखशान्ति।

(६) वामहस्ते–१४ से १७–मानसिक दुख, चिन्ता।

(७) पैरों में—१८ से २३—शारीरिक कष्ट आदि।

८) दक्षिणहस्ते—२४ से २७—मंगलकार्य, सुख तथा लाभ।

(आ) आचार्य लल्ल के मत से शनि की स्थिति और फल इस प्रकार है :–

(१) मुख में—१—मानसिक कष्ट, चिन्ता।

(२) गुदा में—२, ३—शारीरिक कष्ट आदि।

(३) नेत्र में—४, ५—लाभ, उन्नति, सम्मान।

(४) शीर्षे—६, ७, ८—राज्यसम्मान, उन्नति।

(५) बायें हाथ में—९ से १२—शारीरिक कष्ट आदि।

(६) हृदय में—१३ से १७—लाभ, सुख, व्यवसायोन्नति।

(७) वामपादे—१८, १९, २०—पराधीनता, परिश्रम।

[८] दक्षिणपादे—२१, २२, २३—पराधीनता परिश्रम।

[९] दाहिने हाथ में—२४ से २७—आर्थिक लाभ व्यवसायोन्नति।

(इ) शनि के नक्षत्रगोचर पर पूर्व कथित दो मतों के अलावा ग्रंथों में एक अन्य मत मिलता है, लेकिन यह मत सिद्धान्ततः एक होते भी विद्वानों ने इसकी व्याख्या अलग-अलग की है। मूल सिद्धान्त इस प्रकार है—

यस्मिन् शनिश्चरति वक्रगतततश्च,
चत्वारिदक्षिणकरे ऽन्घ्रियुगेभषटकम्।
चत्वारिकामकरगो ष्युदरे च पंच,
मूर्ध्नित्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च।।

विद्वानों ने इस श्लोक की अपनी-अपनी व्याख्या इस प्रकार व्यक्त की है:—

प्रथम मत

[१] शनि स्थित नक्षत्र मुखे—१—रोगभय, शारीरिक कष्ट।
[२] दाहिने हाथ में—२ से ५ तक, लाभ, आर्थिक सुधार।
[३] पैरों में ६ से ११ तक, भ्रमण अधिक, परिश्रम अधिक।
[४] बायें हाथ में १२ से १५ तक, व्ययवृद्धि, हानि, आर्थिक कष्ट।
[५] पेट में १६ से २० तक, लाभ व्यवसायोन्नति, सुख।
[६] शिर में २१ से २३ तक, हर प्रकार शुभ, लाभ, उन्नति।
[७] आंखों में २४, २५, शारीरिक कष्ट।
[८] गुदा में २६, २७, शारीरिक कष्ट।

द्वितीय मत

[१] दक्षिणकरे—१ से ४—रोगभय।
[२] पैरों में ५ से १०—लाभ, व्यवसायोन्नति।
[३] वामकरे ११ से १४—भ्रमण, परिश्रम अधिक।
[४] उदरे—१५ से १९—व्ययवृद्धि, हानि, आर्थिक कष्ट।
[५] शिरसि—२१ से २२—लाभ, सुख, उन्नति।
[६] नेत्रे—२३ से २६—सुख, लाभ, सफलता।
[७] गुदे—२७—शारीरिक कष्ट आदि।

शनिपाद विचार

अपनी जन्मराशि से शनि जिस राशि में हो, तदनुसार शनि का पाद और फल इस प्रकार है (एक मत यह भी है कि शनि जिस दिन एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करता है, उस समय जन्म राशि से चन्द्रमा जिसराशि में हो तदनुसार शनि का पाद होता है, लेकिन यह मत युक्ति संगत नहीं है)

१, ६, ११ वें शनि हो सुवर्णपाद—सर्वश्रेष्ठ।

२, ५, ९ ,, —रजत (चांदी) पाद—सुख, लाभ।

३, ७, १० ,, —ताम्रपाद—सामान्यत: ठीक।

४, ८, १२ ,, —लोहपाद—धनहानि।

शनिवाहन

अपने जन्मनक्षत्र से शनि वर्तमान समय में जिस नक्षत्र में हो—उस नक्षत्र तक गिनें, यह संख्या नौ से ज्यादा हो तो नौ का भाग दें, शेष संख्या के अनुसार शनि का वाहन व फल होगा।

१—गधा—दुख, वाद-विवाद।

२—घोड़ा—सुखसम्पत्ति, यात्रा।

३—हाथी—सुभोजन, सुख, लाभ।

४—बकरा—विपरीत, असफलता, रोगभय।

५—सियार—भय, कष्ट।

६—शेर—विजय, लाभ, सफलता।

७—कौवा—चिन्ता, मानसिककष्ट।

८—हंस—लाभ, जय, सफलता।

९—मोर—सुख व लाभ।

उदाहरण

उपरोक्त सभी मतों का तुलनात्मक सार लेकर फल निर्धारित करना चाहिए (शनि के राशिगोचर फल का भी साथ में विचार करना चाहिए)। उदाहरण-स्वरूप किसी का जन्मनक्षत्र चित्रा तथा कन्याराशि है, वर्तमान में शनि स्वाती में है, अत :—

श्रीपति के मत से मुख में (रोग कारक), लल्ल के मत से गुदा में (कष्ट कर), अन्य मत से दाहिने हाथ (लाभप्रद या रोगप्रद), शनिपाद के विचार से रजतपाद (लाभ व सुखप्रद) और वाहन के विचार से अश्व (घोड़ा) वाहन (लाभप्रद, यात्राकारक) है।

राशिगोचर के अनुसार द्वितीय में (स्वास्थ्य में गिरावट, व्यय, हानि आदि) है।

इन सभी मतों का तुलनात्मक फल हम इस प्रकार कह सकते हैं कि—यह समय (जब तक शनि स्वाती नक्षत्र में स्थित है) उपरोक्त व्यक्ति का स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं रहेगा, स्वास्थ्य गिरेगा, लाभ रहते भी धन स्थिर नहीं रहेगा, व्यय बढ़ेगा, यात्राप्रसंग रहेंगे, कुल मिलाकर यह समय संतोषजनक नहीं है, इत्यादि। ★

राहु का गोचर फल

गोचर में राहु शुभफल बहुत कम देता है, कुछेक भाव को छोड़कर आचार्यों ने राहु का फल प्रायः विपरीत ही कहा है। प्राचीन ग्रंथकारों में राहु के गोचर राशि फल के बारे में मुख्यतः श्रीपति का फल प्राप्त होता है—

(१) जन्म राशि में—निरर्थकभय, हानि।
(२) द्वितीय में—वादविवादभय, आर्थिक कष्ट।
(३) तृतीय में—लाभ, सुखशान्ति।
(४) चतुर्थ में—अपमान जनक प्रसंग, विरोध, मानसिक कष्ट।
(५) पंचम में—मानसिक अशान्ति, व्ययवृद्धि।
(६) षष्ठ में—सुखशान्ति, लाभ।
(७) सप्तम में—राजद्वारीय मामलों में प्रतिकूल भयजनक, विवादभय।
(८) अष्टम में—आर्थिक कष्ट, धनव्यय, शारीरिक कष्ट।
(९) नवम में—मानसिक कष्ट, अधर्म एवं कुकृत्यों में रुचि।
(१०) दशम—वाद-विवाद भय, विरोध, शत्रुवृद्धि।
(११) एकादश—लाभ, व्यवसायोन्नति।
(१२) द्वादश में—हानि, समस्यायें, स्वास्थ्य शिथिल।

राहु का नक्षत्र गोचर

राहु जिस नक्षत्र में वर्तमान में हो, उस नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक गिनें। जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े—उसकी स्थिति और फल इस प्रकार पूर्वाचार्यों ने कहे हैं।

[१] ज्योतिषसारोद्धार के अनुसार:—

(अ) राहु स्थित नक्षत्र से ७ तक [पादे] धनहानि, व्यय।
(आ) ८ से १२ तक [दाहिने हाथ में] मानसिक कष्ट, अशान्ति।
(इ) १३ से १५ तक [शिर में] शत्रुपराजय।

(ई) १६, १७ [हृदये] कुसंग ।

(उ) १८ वाँ [मुखे] शुभ, कुसंग से मुक्ति ।

(ऊ) १९ से २३ तक (वामहस्ते) शारीरिक कष्ट ।

(ए) २४ (नाभौ) हानि, कष्ट ।

(ऐ) २५ से २७ [गुह्ये] हानि, विभिन्न समस्यायें ।

[२] आचार्य गर्ग का मत इससे भिन्न है । उनके मत से राहुस्थित नक्षत्र से—

(अ) १ से ३ तक [मुखे] रोगभय ।

(आ) ४ से ७ तक [कंठे] लाभ, आर्थिक सुधार ।

(इ) ८, ९ [नेत्रे] सुख व लाभ प्रद ।

(ई) १० से १४ तक [मस्तके] उन्नति, सफलता, शत्रुपराजय, राजद्वारीय मामलों में शुभ ।

(उ) १५ से १८ [हस्तयो] रोगभय, कष्ट ।

(ऊ) १९ से २३ [पादयोः] सुख व लाभ ।

(ए) २४ से २६ [हृदये] कष्ट प्रद ।

(ऐ) २७, २८ [गुह्ये] विविध समस्यायें, बन्धन ।

[यहाँ अभिजित सहित नक्षत्रों की गणना है] । उपरोक्त मतों को ध्यान में रखकर राहु के गोचर फल निर्धारित करने चाहिये ।

उदाहरण

एक व्यक्ति का जन्म नक्षत्र चित्रा, राशि कन्या है, और गोचर में राहु मिथुन राशि, मृगशिरा नक्षत्र पर भ्रमण कर रहा है—यह क्या फल देगा ?

राशिगोचर के अनुसार जन्म राशि से राहु दशम राशि में भ्रमण कर रहा है, अत: वाद-विवादभय, विरोध, शत्रुवृद्धि सूचक है । नक्षत्र गोचर में आचार्य गर्ग के मत से [मृगशिरा से चित्रा दसवाँ है] मस्तक में स्थित है—जो उन्नति, सफलता, शत्रुपराजय, राजद्वारीय मामलों में सफलतादायक शुभ है ।

लेकिन सारोद्धार के मत से दाहिने हाथ में स्थित है जो मानसिक कष्ट व अशान्तिदायक है ।

अत: उपरोक्त फलों की तुलनात्मक समीक्षा करते हुये हम यह कह सकते हैं कि विरोध, शत्रुवृद्धि, वाद-विवाद भय, मानसिक कष्ट एवं अशान्ति सूचक होते भी शत्रु कोई अहित नहीं कर पायेंगे । इत्यादि ।

केतु का गोचर फल

राहु तथा केतु छायाग्रह होते भी दोनों एक हैं, जिसका उर्ध्व अंग राहु और अधोभाग केतु माना गया है (भारतीय साहित्य में ऐसी कल्पना है—वास्तव में राहु-केतु दो चर विन्दु मात्र हैं) अतः दोनों के फल भी सम हैं फिर भी राहु की अपेक्षा केतु को कुछ सौम्य माना गया है।

भारतीय ज्योतिष ग्रंथकारों ने केतु का राशि गोचर फल इस प्रकार व्यक्त किया है।

[१] जन्मराशि में—व्ययवृद्धि, स्वास्थ्य में गिरावट।

[२] द्वितीय में—लोगों से मनोमालिन्यता, धनहानि, लेकिन शत्रु पराजय।

[३] तृतीय में—सुख तथा लाभ।

[४] चतुर्थ में—स्वास्थ्य में गिरावट, चिन्ता, भय।

[५] पंचम में—शोक मानसिक कष्ट, धनव्यय।

[६] षष्ठ में—आर्थिक लाभ, सुखशान्ति।

[७] सप्तम—भ्रमण, स्वास्थ्य शिथिल, विविध समस्यायें।

[८] अष्टम—व्ययवृद्धि, शारीरिक कष्ट।

[९] नवम—कुविचार, अनैतिक कर्मों में रुचि, हीनता।

[१०] दशम—मानसिककष्ट, चित्तअशान्त, भय।

[११] ग्यारहवें—रोगभय, लेकिन यश तथा लाभ।

[१२] द्वादश में—स्वास्थ्य शिथिल, समाज में विरोध, मनोमालिन्यता।

नक्षत्रचार

केतु के नक्षत्र चार के फल भी आचार्यों ने व्यक्त किये हैं। केतु स्थित नक्षत्र से अपने जन्मनक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या हो तदनुसार केतु की स्थिति और फल इस प्रकार है।

[अ] १ या २—(नेत्रे) स्वास्थ्य में गिरावट तथा मानसिक कष्ट।

[आ] ३ से ७ तक (मुखे) आर्थिक लाभ, व्यवसायोन्नति।

[इ] ८ से १० तक (शीर्षं) राजसम्मान, यशप्रतिष्ठा, उन्नति, विजय।

[ई] ११ से १४ तक (हस्ते) यश, सामाजिक सम्मान, लाभ, व्यवसायोन्नति, नीरोगता, सुखशान्ति।

[उ] १५ से १८ (पादयोः) भ्रमण, परिश्रम अधिक, मानसिक अशान्ति, अस्थिरता।

[ऊ] १९ से २३ (हृदये) आत्मीयजनों, मित्रों से वाद-विवाद एवं मनोमालिन्यता।

[ए] २४ से २७ (कुक्षौ) शारीरिक कष्ट, रोगभय, चिन्ता, मानसिक अशान्ति।

इस प्रकार राशिचार तथा नक्षत्रचार दोनों का विचार कर तदनुसार तुलनात्मक रूप से गोचर फल निर्धारित करना चाहिए।

राशिचार और नक्षत्रचार का तुलनात्मक विचार

प्राचीन आचार्यों का भी यही कथन है कि सभी ग्रहों के गोचर का सही वास्तविक फल जानने हेतु राशिगोचर तथा नक्षत्र गोचर दोनों का विचार करे और तदुपरान्त तुलनात्मक रूप से शुभाशुभ फल निर्धारित करे।

[अ] राशिगोचर व नक्षत्रगोचर दोनों में शुभ हो तो शुभ है।

[आ] दोनों में विपरीत हो तो अशुभ फलदायक विपरीत है।

[इ] एक में अनुकूल एक में प्रतिकूल हो तो सम (मिश्रित) फल देगा।

गोचरे यो ग्रहोनिष्ट स्तस्य चक्रफलं शुभम्।
यदिस्यात्समता ज्ञेया शुभे द्वंदे शुभं वदेत्॥

★

यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो का गोचर फल

यूरेनस, नेपच्यून तथा प्लूटो का फलित ज्योतिष के प्राचीन मौलिक ग्रंथों में नहीं मिलता है। पूर्वाचार्यों को या तो इन ग्रहों का ज्ञान उस युग में नहीं था, अथवा ज्ञान होते भी उन्होंने इसकी उपेक्षा कर दी हो—ऐसा सम्भव है, क्योंकि भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुसार नवग्रहों से ही इसकी पूर्ति हो जाती है—क्योंकि ब्रह्माण्ड की यह समस्त सृष्टि मूलत ९ तत्वों से ही बनी है।

परन्तु हमारे सौर मण्डल में इन ३ नये ग्रहों की विद्यमानता सिद्ध है, भले ही यह तीनों ग्रह अन्य ग्रहों के ही पूरक या समान धर्मी हों। वैसे अभी एक और ग्रह की विद्यमानता के भी स्पष्ट संकेत प्राप्त हो चुके हैं। अतः इनके फलित पर विचार करना आवश्यक है।

सृष्टि विज्ञान एवं सौर मण्डलीय ग्रहों की स्थिति के अनुसार ज्योतिष सिद्धान्तानुसार इन ग्रहों का प्रभाव इस प्रकार निर्धारित होता है :—

[१] यूरेनस—शनि के समान गुणवान्। शनि की ही कुंभ राशि का स्वामी। शनि से अधिक बली एवं प्रभावकारी। शीघ्र एवं आकस्मिक फल सूचक। वायुतत्व प्रधान।

[२] नेपच्यून—गुरु के समान गुणधर्मी। मीन राशि का स्वामी। गुरु से कम बली। गूढ़ एवं गुप्तज्ञान, अध्यात्म, मस्तिष्क पर विशेष प्रभावकारी। आकाशतत्व प्रधान।

[३] प्लूटो—मंगल के समानधर्मी तथा मंगल से अधिक बली। मेष राशि का स्वामी। उत्तेजना, युद्ध, आकस्मिक-दुर्घटना आदि का सूचक। अग्नितत्व प्रधान।

अतः यूरेनस का गोचरफल शनि के समान, नेपच्यून का बृहस्पति के समान और प्लूटो का मंगल के गोचरफलों के अनुसार ही समझना उचित है।

★

ग्रह-गोचर में वेध विचार आवश्यक

गोचर [राशिगोचर] फलों के सत्य प्रतिपादन हेतु वेध का विचार आवश्यक है, क्योंकि ग्रह का राशि गोचर में जो फल है—वह वास्तव में होगा या नहीं ? यह जानने हेतु वेध पद्धति का विचार आवश्यक है। ऐसा प्रतीत होता है कि वेध के बारे में प्राचीन आचार्यों में अनेक मत थे—

[अ] वेध स्थान जन्मराशि से विचारना चाहिए।

[आ] ग्रहस्थित राशि से वेध देखना चाहिए।

[इ] हिमालय से विन्ध्यालय के मध्य (उत्तरी भारत) में ही वेध विचार करना चाहिए—अन्यत्र नहीं।

लेकिन वर्तमान में प्रचलित एवं सर्वमान्य मत यही है कि वेध का विचार सर्वत्र किया जाता है और जन्मराशि से ही वेध का विचार किया जाता है।

(१) प्रत्येक ग्रहगोचर में इसका सिद्धान्त यह है कि पूर्ण शुभ फल तभी देगा—जब उस पर वेध न हो।

(२) इसी प्रकार ग्रह यदि गोचर में अशुभ स्थान में हो तो उसका अशुभ फल भी तभी मिलेगा—जब उस पर वेध न हो।

(३) पिता-पुत्र का परस्पर वेध नहीं होता। अर्थात सूर्य और शनि, बुध और चन्द्र परस्पर पिता-पुत्र हैं अतः इनका परस्पर वेध होने पर भी वेध नहीं माना जायगा।

तात्पर्य यह है कि यदि ग्रह वेधित हो तो वह अपना शुभ या अशुभ फल देने में पूर्ण समर्थ नहीं होता—अत: वह अशुभ स्थान में होते भी शुभ फल और शुभ स्थान में होते भी अशुभ फल दे सकता है, एतदर्थ वेधविचार आवश्यक है—

न ददाति फलं किंचित् गोचरे वेध संस्थितः।
तस्माद्वेधं विचार्याथ कथयेत्तु शुभाशुभं॥

सूर्य—जन्मराशि से ६-१०-३-११ वें शुभ है—यदि क्रमशः १२-४-९-५ में शनि को छोड़कर (शनि क्योंकि पुत्र है) कोई अन्य ग्रह न हो। अर्थात् ६-१२, १०-४, ३-९, ११-५ में परस्पर वेध होता है।

चन्द्र—जन्मराशि से ७-६-१०-१-३-११ में शुभ है, जबकि २-१२-४-५-९-८ में बुध (पुत्र है) को छोड़कर कोई ग्रह न हो। यहाँ ७-२, ६-१२, १०-४, १-५, ३-९, ११-८ में परस्पर वेध है।

मंगल—३-६-११ में शुभ है, जब कि १२-९-५ में कोई ग्रह न हो। यहाँ ३-१२, ६-९, ११-५ में वेध है।

बुध—२-४-६-८-१०-११ में शुभ है जब कि क्रमशः (चन्द्रमा छोड़कर) ५-३ ९-१-८-१२ में कोई ग्रह न हो। यहाँ २-५, ४-३, ६-९, ८-१, १०-८, ११-१२ में परस्पर वेध है।

बृहस्पति—५-२-९-७-११ में शुभ है. जबकि ४-१२-१०-३-८ में कोई ग्रह न हो, यहाँ ५-४, २-१२, ९-१०, ७-३, ११-८ में वेध है।

शुक्र—१-२-३-४-५-८-९-१२-११ में शुभ है, जबकि ८-७-१-१०-९-५-११-६-३ में कोई ग्रह न हो, यहाँ १-८, २-७, ३-१, ४-१०, ५-९, ८-५, ९-११, १२-६, ११-३ में परस्पर वेध है।

शनि—३-६-११ में शुभ है जब कि ९-५-१२ में कोई ग्रह (सूर्य छोड़कर) न हो। यहाँ ३-९, ६-५, ११-१२ में वेध है।

राहु—३-६-११ में शुभ है जब कि १२-९-५ में कोई ग्रह न हो। यहाँ ३-१२, ६-९, ११-५ में वेध है।

केतु—३-६-११ वें शुभ है यदि ५-१२-९ में कोई ग्रह न हो। यहाँ ३-५, ६-१२, ११-९ में परस्पर वेध है।

कुछ आचार्य मं०, श०, रा०, के० इन चारों का वेध परस्पर ६-९, ३-१२, ११-५ में मानते हैं, किन्तु अन्य आचार्यों का मत भिन्न है जो ऊपर प्रदर्शित है।

वामवेध

जिस प्रकार वेधयुक्त ग्रह शुभ फल नहीं देता, उसी प्रकार गोचर में अशुभ स्थान स्थित ग्रह पर वेध हो तो वह भी अशुभ फल नहीं देगा—इसी को 'वामवेध' या 'विपरीतवेध' कहते हैं। जैसे—

(क) सूर्य १२ वें शुभ नहीं है, सूर्य का वेध परस्पर ६-१२, १०-४, ३-९, ११-५ है—अतः यदि सूर्य १२ वें हो लेकिन ६ में कोई ग्रह हो तो वेध होगा। इसी तरह सूर्य ४ में भी शुभ नहीं है, लेकिन दशम कोई ग्रह हो तो वेध होगा।

(ख) इसी प्रकार बृहस्पति ८ में शुभ नहीं है—लेकिन ११ में कोई ग्रह हो तो वेध होने से अशुभ फल नहीं देगा।

(ग) इसी प्रकार शुक्र ७वें शुभ नहीं है लेकिन २ में कोई ग्रह हो तो वेध होने से अशुभ फल नहीं देगा। इसी प्रकार और भी देखना चाहिए।

इस प्रकार वेध का विचार करके ही गोचर फल देखना चाहिए, तभी भविष्यवाणी सही होगी अन्यथा आपका कथन मिथ्या होने से उपहास होगा—

अज्ञात्वाविविधान्वेधान् यो ग्रहज्ञः फलं वदेत्।
सा मृषावचनाभाषी हास्यं याति नरैः सदा॥

पाश्चात्य ज्यौतिष में गोचरपद्धति

गोचर का विचार पाश्चात्य ज्योतिषी भी करते हैं लेकिन उनकी गोचर की विचार पद्धति और उनके फलकथन की पद्धति—दोनों ही भारतीय पद्धति से भिन्न हैं।

—: ग्रहभ्रमणकाल :—

ग्रह	राशिचक्र भ्रमण (वर्ष)	वार्षिक गति (अंश–कला)	मासिक गति (अंश-कला-वि०)	दैनिक गति (अंश-कला-वि०)
सूर्य	१९	१८।५७	१।३५	०।३।१०
चन्द्र	४	९०/०	७।३०	०।१५।०
मंगल	१९	१९।०	१।३५	०।३।१०
बुध	१०	३६।०	३।०	०।६।०
गुरु	१२	३०।०	२।३०	०।५।०
शुक्र	८	४५।०	३।४५	०।७।३०
शनि	३०	१२।०	१।०	०।२।०
रा०।के०	१८	२०।०	१।४०	०।३।२०
यूरे०	८४	४।१७	०।२१।३५	०।०।४३।१०
नेफ०	१६८	२।९	०।१०।४५	०।०२१।३०

पाश्चात्य पद्धति से गोचरफल का विचार करने हेतु आपको वार्षिक, मासिक या दैनिक जैसा भी गोचरफल ज्ञात करना हो—तदनुसार जन्म कुण्डली में संस्कार देकर वर्षगोचर कुण्डली, मासगोचर कुण्डली या दैनिक गोचर कुण्डली

तयार करनी होगी। इसके निमित्त आपको पाश्चात्य ग्रहभ्रमण पद्धति का ज्ञान होना आवश्यक है। जन्मकालीन ग्रहस्पष्टों में तदनुसार संस्कार कर वर्तमान गोचर कुण्डली बनेगी। वर्ष गोचर कुण्डली से वर्ष भर का गोचरफल, मासगोचर कुण्डली से प्रत्येक मास का और दैनिक गोचर कुण्डली से प्रत्येक दिन का गोचर-फल प्राप्त होगा।

प्रत्येक ग्रह का राशिचक्र (१२ राशियों में) भ्रमण का समय नियत है, यह समय खगोलीय ग्रहपरिभ्रमणकाल से भिन्न है, इसी आधार पर प्रत्येक ग्रह की वार्षिक, मासिक व दैनिक गति निर्धारित है। इस गति के अनुसार ग्रह का वर्तमान स्थान ज्ञात होगा।

नोट—राहु तथा केतु में विपरीत सस्कार होगा। लग्न वही रहेगा, जो जन्मलग्न है।

फल कथन के सिद्धान्त

[१] जन्म कुण्डली में जो-जो ग्रह परस्पर शुभ सम्बन्ध करते हों, वही ग्रह यदि गोचर कुण्डली में भी शुभ सम्बन्ध करें तो वह अपने-अपने भाव एवं कारक सम्बन्धी शुभफल उस वर्ष, मास या दिन (गोचर कुण्डली वर्ष, मास, दिन की जैसी हो) में अवश्य देंगे। इसी प्रकार जन्म कुण्डली में जो ग्रह परस्पर अशुभ सम्बन्ध बनाते हों और गोचर कुण्डली में भी अशुभ सम्बन्ध बनायें तो अपने भाव व कारक सम्बन्धी अशुभ फल देंगे।

[२] लग्न से ४, ६, ८, १० में ग्रहों की स्थिति प्रायः अशुभ तथा शेष भावों में प्रायः शुभ मानी जाती है।

[३] गुरु तथा शनि मुख्यरूप से मन्दगति ग्रह हैं अतः गोचर में उनका विशेष महत्व है। यदि बृहस्पति स्वक्षेत्री, उच्च या मित्र क्षेत्री होकर ५, ९, ११वें हो तो अपने भाव व कारक सम्बन्धी बहुत अच्छा फल देगा।

शनि यदि स्वक्षेत्री, उच्च या मित्रक्षेत्री होकर में लग्न से ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वें हो तो अपने भाव एवं कारक से सम्बन्धित विशेष शुभफल अवश्य देगा।

[४] चन्द्रमा शीघ्रगति होने से पाश्चात्यगोचर में भी प्रमुख फल देता है। विशेषकर दैनिक गोचर में यहाँ भी चन्द्रमा का फल ही मुख्य आधार है।

गोचर कुण्डली में चन्द्रमा जिस ग्रह के साथ शुभ या अशुभ सम्बन्ध करेगा—उस ग्रह के कारक एवं उस भाव से सम्बन्धित शुभ या अशुभ फल देगा।

सम्पूर्णफल गोचर पद्धति से

वास्तव में पश्चात्य ज्योतिष में जन्म कुण्डली का समस्तफल गोचर पद्धति से ही कहा जाता है, क्योंकि पाश्चात्य ज्योतिष में महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा आदि दशा पद्धति बिल्कुल है ही नहीं, और न ताजिक ज्योतिष की भांति वर्ष कुण्डली निकालने एवं मुद्दादशा आदि का ही प्राविधान है। अतः पाश्चात्य ज्योतिषी जन्मकुण्डली का एवं जीवन का समस्तफल गोचर पद्धति से ही करते हैं। यद्यपि वर्तमान में पाश्चात्य ज्योतिषी भी भारतीय ज्योतिष के महत्व को स्वीकार कर चुके हैं और उन्होंने भी भारतीय ज्योतिष की विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा के आधार पर फल कहना शुरू कर दिया है।

शुभ-अशुभ सम्बन्ध क्या हैं ?

पाश्चात्य ज्योतिष में शुभ या अशुभ सम्बन्ध ग्रहों की अंशान्तर दूरी के अनुसार नियत है, जिसे "दृष्टि" भी कहा जाता है। जैसे परस्पर ३० अंश, ३६, अंश, ६०, ७२, १२० अंशात्मक दूरी हो तो 'शुभ दृष्टि' या शुभ सम्बन्ध कहा जायगा और ४५, ९०, १३५, १८० अंश की परस्पर दूरी होना 'अशुभ दृष्टि' या अशुभ सम्बन्ध कहा जाता है। इसके अलावा १४४, १५०, १८० का अन्तरमध्यम माना जाता है। पाश्चात्यमत से दृष्टि या ग्रहों के शुभाशुभ सम्बन्धों का वर्णन "ज्योतिष-नवनीत" में आ चुका है।

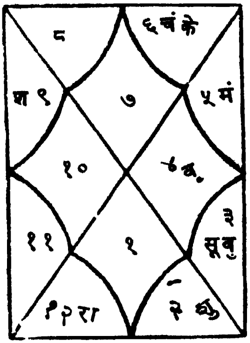
यदि परस्पर दो मित्र ग्रहों का शुभ सम्बन्ध बने, दोनों शुभ भावों [कर्म, भाग्य, सुख आदि] से सम्बन्धित [स्वामी या स्थित] हों तो उच्च फल [शुभ] अवश्य प्राप्त होगा। ग्रहों के परस्पर मित्र न होने या ६, ८, १२ आदि भावों से सम्बन्धित होने पर शुभ फल कम मिलेगा। अशुभ सम्बन्ध विशेषकर दो शत्रु ग्रहों में हो तो अशुभ फल विशेष होगा। स्वविवेक से फल निर्धारित करने चाहिए।

पाश्चात्य गोचरफल जानने का एक उदाहरण

जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति से उसका शुभाशुभ फल ज्ञात होता है, लेकिन उनका कब शुभफल होगा और कब अशुभ? इसे जानने को जहाँ भारतीय ज्योतिष में विविध दशायें, अष्टकवर्ग, ताजिक सिद्धान्त आदि हैं—वहाँ पाश्चात्य ज्योतिष में ग्रह परिभ्रमण सिद्धान्त ही मुख्य आधार है।

एक व्यक्ति का जन्म समय व जन्म कुण्डली निम्न है। इस व्यक्ति को इस समय ५३वां वर्ष चल रहा है, इस वर्ष में इस व्यक्ति को क्या शुभाशुभ फल होगा? आइये इस पर विचार करें।

श्री सम्वत १९८८ शाके १८५३ आषाढ़ अधिक शुक्ल ९ बुधवासरेष्टम् २५/३० (२४ जून १९३१)



सूर्य २/९/५२
चन्द्र ५/२७/१०
मगल ४/१४/६
बुध २/६/३०
गुरु ३/२/२०
शुक्र १/१९/२०
शनि ८/२६/१० वक्र
राहु ११/१८/२० वक्र
केतु ५/१८/२० वक्र

ग्रहपरिभ्रमण सिद्धान्त के अनुसार उपरोक्त ग्रहों की स्थिति ५२ वर्ष बाद इस प्रकार होगी और उपरोक्त जातक की ५३वीं वर्ष गोचर कुण्डली यह होगी।

सूर्य ५२ वर्ष में [३६ वर्षों में दो परिभ्रमण तदन्तर १६ वर्षों में १६ × १८/५७ = १०/३/१२ + जन्मकालीन सूर्य २/९/५२] सूर्य की स्थिति ०/१३/४ होगी।

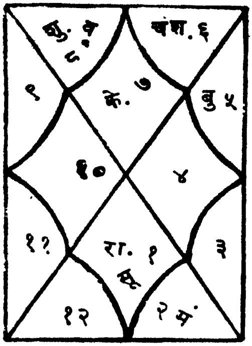
इसी प्रकार चन्द्रमा ४ वर्ष में एक राशिचक्र, अतः ५३ वर्ष में १३ परिक्रमा कर अपने जन्म स्थान पर ही होगा।

मंगल ३८ वर्षों में २ परिक्रमा पूरी कर शेष १४ वर्षों में १९ × १४ = ८/२६ + जन्मकालीन मंगल ४/१४/६ = १/१०/६।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों में भी संस्कार करने से ५३वें वर्ष के प्रारम्भ में ग्रहस्थिति इस प्रकार बनती है—

इस तरह गणना करने के बजाय एक (ग्राफ) रेखा चक्र से स्थिति स्पष्ट आ जाती है, पाश्चात्य विद्वान रेखा चक्र का ही प्रयोग करते हैं।

२४ जून १९८३ की स्थिति



सू. ०/१३/४
चं. ५/२७/१०
मं १/१०/६
बु. ४/१८/३०
वृ. ७/२/२०
शु. ७/१९/२०
श. ५/२०/१०
रा. ०/२८/२०
के. ६/२८/२०

इसी में एक महीने का संस्कार देकर २४/७/८३ की इसी प्रकार और भी प्रत्येक महीने की स्थिति बन जायेगी।

उपरोक्त चक्र से स्पष्ट कि—

सूर्य सप्तम होने से इस वर्ष अनुकूल है।

चन्द्रमा जन्म व वर्ष दोनों में प्रतिकूल है।

मंगल वर्ष में अष्टम प्रतिकूल है।

बुध, गुरु व शुक्र की स्थिति शुभ है।

(यहाँ पर बुध से गुरु व शुक्र की १२० अंशान्तर से स्थिति उत्तम है, पर चन्द्रमा से ९० अंश अशुभ है।)

शनि, राहु, केतु की स्थिति भी प्रतिकूल है।

इसी प्रकार प्रत्येक भाव व भावेश की स्थिति भी देखकर विभिन्न भावों से सम्बन्धित शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

●

दैनिक गोचर फल के सूक्ष्म सिद्धान्त

सूर्य, बुध, शुक्र लगभग एक मास तक एक एक राशि में रहते हैं। इसी प्रकार मंगल लगभग डेढ़ मास, गुरु एक वर्ष, शनि ढाई वर्ष, राहु-केतु डेढ़-डेढ़ वर्ष एक राशि पर रहते हैं। अतः इनका गोचर फल एक दीर्घकाल तक एक समान होता है। सूर्य, बुध, शुक्र आदि एक नक्षत्र पर लगभग एक सप्ताह से ऊपर रहते हैं, अत: इनके नक्षत्र गोचर से भी एक सप्ताह से अधिक काल का फल ही ज्ञात हो पाता है।

ग्रहों में सबसे शीघ्रचारी ग्रह चन्द्रमा है, जो एक राशि में सवा दो दिन, और एक नक्षत्र में लगभग एक दिन (२४ घण्टे) रहता है, अत: प्रत्येक दिन का दैनिक गोचरफल (दिनदशा) जानने के निमित्त चन्द्रमा का गोचर फल ही मुख्य है।

चन्द्रमा के राशिचार, नक्षत्रचार आदि से भी गोचरफल जानने के अनेक सिद्धान्त हैं, जिनके आधार पर दैनिक फल कहा जा सकता है, यथा :—

(१) चन्द्रमा का राशिचार

(२) चन्द्रमा का नक्षत्रचार

(अ) आचार्य गर्ग का मत
(आ) आचार्य लल्ल का मत
(इ) चन्द्रकालानल चक्र
(ई) चन्द्रमा वाहन
(उ) तारा
(ए) दिनदशा की अन्य पद्धति

इनमें से चन्द्रमा के राशिगोचर, नक्षत्रगोचर (लल्ल व गर्ग का मत, चन्द्रकालानल) पर यथासमय विचार किया जा चुका है। अब यहाँ पर चन्द्रमा के वाहन व तारा का विचार और होना है।

चन्द्रमा का वाहन

इसको जानने का विधान यह है कि अपने जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनती करें, अर्थात् जन्म समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में हो—उस नक्षत्र से उस नक्षत्र तक गिनती करें—चन्द्रमा उस दिन जिस नक्षत्र में हो (२७ नक्षत्रों में) इसमें नौ का भाग देने से शेष वाहन होगा, जिसका फल इस प्रकार है :—

१—गधा—वादविवादभय
२—घोड़ा—चित्त अशान्त, भ्रमण की इच्छा,
३—हाथी—लाभ, व्यवसायोन्नति,
४—महिष—रोगभय,
५—सियार—अशान्ति, निरर्थक व्यय,
६—सिंह—विजय
७—कौवा—चिन्ता,
८—मोर—सुख शान्ति
९—हंस—जय

तारा

तारा का विचार भी पूर्ववत् है। जन्मनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देकर शेष संख्या के अनुसार तारा और उसका फल इस प्रकार है :-

१—जन्म—शुभ
२—सम्पत—लाभ
३—विपत—समस्यायें
४—क्षेम—सुखशान्ति
५—प्रत्यरि—शत्रुभय
६—साधक—सफलता
७—वध—कष्टकर
८—मैत्र—मित्रसुख
९—अतिमैत्र—मित्रसुख

दिनदशा की एक और पद्धति

ज्योतिष ग्रंथों में दिनदशा जानने की एक और विधि भी मिलती है, जो इस प्रकार है—

जन्मनक्षत्र की संख्या को ४ से गुणाकर उसमें तिथि [शुक्लपक्ष प्रतिपदा से अमावस्या तक ३० तिथि मानकर] की संख्या और वार की संख्या जोड़ दें फिर ९ का भाग दें—शेष संख्या के अनुसार दशा व उसका फल होगा।

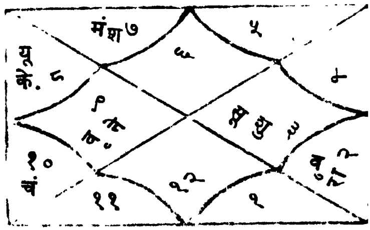
१—सूर्यदशा—दुख एवं चिन्ता।
२—चन्द्र—सुख-सन्तोष।

३—मंगल—कष्ट, समस्यायें ।
४—बुध—बुद्धि का विकास, श, नवृद्धि ।
५—गुरु—आर्थिक लाभ, व्यव सायोन्नति ।
६—शुक्र—सुख, सन्तोष ।
७—शनि—परिश्रम, स्वास्थ्य मध्यम ।
८—राहु—चोट आदि का भय ।
९—केतु—समस्यायें, स्वास्थ्य मध्यम ।

उपरोक्त सभी मतों का सार लेकर प्रत्येक दिन का गोचरफल कहा जा सकता है ।

उदाहरण

एक व्यक्ति जिसका जन्मनक्षत्र चित्रा और राशि कन्या है, उसका आषाढ़ कृष्ण ५ सोमवार २०४१ वि० (१८ जून १९८४) का दिन कैसा रहेगा । इस दिन धनिष्ठानक्षत्र तथा चन्द्रमा मकर राशि में है । क्योंकि जन्मराशि कन्या है, अतः कन्यालग्न से कुण्डली तैयार की । आइये, तदनन्तर फलादेश का विवेचन करें—



(१८ जून ८४ की ग्रहस्थिति)

(अ) चन्द्रमा जन्मराशि से पंचम है, जिसका फल विघ्नबाधा स्वास्थ्य मध्यम, दीनता अर्थात मानसिक खिन्नता, असफलता एवं दुख है (क्योंकि यहाँ पर चन्द्रमा 'पूर्ण चन्द्रमा' है, अतः कुफल कम होंगे, अतः हम इस प्रकार फल कह सकते हैं—कुछ विघ्नबाधायें, कार्य सफलता में विलम्ब, स्वास्थ्य मध्यम, शान्ति कम) । यह भी ज्ञातव्य है कि पंचम चन्द्रमा का एक से वेध होता है, यहाँ चन्द्रमा वेध रहित है अतः पूर्णफल देगा ।

(आ) नक्षत्रचार [गर्ग] दिननक्षत्र धनिष्ठा से जन्मनक्षत्र चित्रा तक गिनने पर १९ हुआ, इसकाफल—'स्वास्थ्य शिथिल' है ।

(इ) नक्षत्रचार में ही लल्ल के मत से इसका फल 'दाम्पत्यसुख' है ।

(ई) चन्द्रकालानल चक्र के अनुसार १९ की संख्या शूल से बाहर है अतः शुभ है और "युद्ध, वाद-विवाद के मामलों, यात्रा हेतु दिन शुभ है स्वास्थ्य को भी ठीक है ।"

(उ) वाहन—जन्मनक्षत्र चित्रा से दिननक्षत्र धनिष्ठा १० है, अतः ९ का भाग देने पर शेष एक वाहन गधा—"वादविवाद भय" सूचक है।

(ऊ) तारा—इसी प्रकार तारा भी १ [जन्मतारा] है, जिसका फल शुभ है।

(ए) उपरोक्त व्यक्ति के बारे में दिनदशा सिद्धान्त से देखें तो—

जन्मनक्षत्र संख्या १४ × ४ = ५६ + दैनिक वार की संख्या [सोमवार] २ = ५८ + दैनिक तिथि (कृष्णपक्ष पंचमी = २०) २० = ७८ इसमें ९ का भाग देने पर शेष ६ बचा, अतः शुक्र की दिन दशा हुई, जो 'सुख-सन्तोष' सूचक शुभ है।

उपरोक्त सभी का सारांश लेकर हम उपरोक्त [चित्रानक्षत्र, कन्याराशि] के व्यक्ति का १८ जून १९८४ का दैनिक फल इस प्रकार कह सकते हैं :—

"प्रत्येक कार्य में अनावश्यक विलम्ब, कार्य सिद्धि में विलम्ब, मानसिक शान्ति कम, स्वास्थ्य मध्यम—कोई विशेष कष्ट नहीं, किन्तु दाम्पत्य सुख, यात्रा करने को शुभ, समस्याओं एवं वाद-विवाद की संभावना होते भी वाद-विवाद तथा युद्ध के मामलों में परिणामतः शुभ एवं कुल मिलाकर सुखसन्तोषप्रद दिन है।

इसी प्रकार प्रत्येक दिन का दैनन्दिन सूक्ष्म फल चन्द्रमा के आधार पर कहा जाता है। जो वैज्ञानिक तथा प्रामाणिक होने से यथार्थ सिद्ध होगा।

एक ही राशि के व्यक्तियों का भिन्न-भिन्न फल

उपरोक्त दैनिक दिनदशा या दैनिक राशिफल एक राशि के व्यक्तियों पर समान रूप से फल दायक होगी।

यदि किसी व्यक्ति विशेष के बारे स्पष्ट फल जानना है तो उस व्यक्ति की जन्मकुण्डली के द्वारा चन्द्रमा का अष्टकवर्ग भी देखें कि किस राशि में चन्द्रमा को कितनी रेखा प्राप्त हैं। तदनुसार शुभाशुभ फलों में उक्त व्यक्ति विशेष के लिये कमी या वृद्धि हो सकती है।

तात्पर्य यह है कि एक ही राशि या नक्षत्र के व्यक्तियों की दिनदशा में क्या-क्या भिन्नता, शुभ या अशुभत्व होगा, इसका निर्धारण अष्टकवर्ग के द्वारा ही होगा।

पाश्चात्य पद्धति से दैनिक गोचरफल जानने का प्रकार

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार भी नित्यप्रति का दैनन्दिन गोचरफल [राशिफल] जानने हेतु मुख्य आधार चन्द्रमा ही है। क्योंकि चन्द्रमा ही एक ऐसा ग्रह है जो सबसे कम समय में राशि परिवर्तन करता है, सबसे शीघ्र गति का है। अत: दैनिक फल अर्थात् जीवन में दिन प्रतिदिन होने वाले परिवर्तनों का सूचक यही ग्रह है। लेकिन पाश्चात्य पद्धति में भारतीय पद्धति की तरह चन्द्रमा के राशिचार या नक्षत्रचार जैसी फलादेश पद्धति नहीं है। पाश्चात्य पद्धति के अनुसार प्रतिदिन चन्द्रमा अन्य ग्रहों के साथ जैसा सम्बन्ध बनाता है, उसी के अनुसार उस दिन का फल होता है। इस पद्धति से फल कहने से पहले ग्रहों के परस्पर शुभ-अशुभ सम्बन्ध और ग्रहों के प्रमुख कारकों के बारे में ज्ञान होना आवश्यक है। जो इस प्रकार है :—

ग्रहो म परस्पर शुभाशुभ सम्बन्ध

सम्बन्ध या दृष्टि का नाम	अंशात्मक परस्पर अन्तर	फल [शुभ या अशुभ]
[१] युति	० अंश	ग्रहानुसार *
[२] एकराशि	३० ,,	शुभ
[३] चक्रदशमांश	३६ ,,	शुभ
[४] अर्ध केन्द्र	४५ ,,	अशुभ
[५] लाभ योग	६० ,,	शुभ
[६] चक्रपंचमांश	७२ ,,	शुभ
[७] केन्द्र सम्बन्ध	९० ,,	महाअशुभ
[८] त्रिकोण सम्बन्ध	१२० ,,	शुभ

* यहां पर दोनों ग्रह परस्पर मित्र हों तो शुभफल होगा, परस्पर शत्रु हों तो अशुभ फल होगा।

[९]	सार्धचतुष्टय	१३५	,,	अशुभ
[१०]	चक्रद्विपंचमांश	१४४	,,	सामान्य/मिश्रित फल
[११]	षडष्टक	१५०	,,	सामान्य ,,
[१२]	प्रतियुति	१८०	,,	महाअशुभ
[१३]	समक्रान्ति	१८०	,,	ग्रहानुसार *

पाश्चात्य मत से ग्रहों के कारक

जो ग्रह अनुकूल होगा, वह अपने भाव से सम्बन्धित [भाव स्थिति तथा भावेश] भाव का तो शुभ फल देगा हो, साथ ही अपने से सम्बन्धित कारक का भी शुभ फल देगा । संक्षेप में पाश्चात्य मत से ग्रहों के प्रमुख कारक इस प्रकार हैं—

[कौन ग्रह किस विषय से सामान्यतया सम्बन्ध रखता है] :—

सूर्य—अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति, प्रशासन, स्वास्थ्य, बड़ा उद्योग ।

चन्द्र—छोटा व्यापार एवं उद्योग, यात्रा, किसी प्रकार का परिवर्तन चिकित्सा, परिवहन ।

मंगल—बाह्य एवं आकस्मिक सहायता, मशीनरी तथा निर्माण सम्बन्धी कार्य, शक्ति व साहस, विभ्रम, आकस्मिक लाभ ।

बुध—शिक्षा, समाचार, आवागमन, परिवर्तन, घर तथा व्यापार एवं उद्योग, यात्रा ।

गुरु—न्याय एवं न्यायालय, धर्मगुरु, धर्म एवं अध्यात्म, वित्त एवं वित्त सम्बन्धी मामले ।

शुक्र—दाम्पत्यसुख एवं महिलावर्ग से सम्बन्धित मामले, आमोद-प्रमोद एवं मनोविनोद ।

शनि—कृषि, अचल सम्पत्ति, भूमि, प्रशासन, भवन एवं भवन सम्बन्धी सामग्री, मन्दगति से होने वाले कार्य ।

यूरेनस—आकस्मिक, असम्भावित, अस्थिर घटनायें ।

नेप्चून—राजनीति एवं संगठन सम्बन्धी मामले, समुद्र, मित्रवर्ग, मस्तिष्क ।

राहु—सर्प, विष, भ्रम, मस्तिष्क एवं मनोविकार, विघ्न ।

केतु—समुद्रचर, बिलचर जन्तु, भय, तंत्र-मंत्र, गुप्तचर ।

प्लूटो—वाद-विवाद, उत्तेजना, युद्ध, साहस, आदि ।

नित्यप्रति चन्द्रमा का जिस ग्रह के साथ अच्छा या बुरा जैसा सम्बन्ध बनता है, तदनुसार उससे सम्बन्धित शुभाशुभ फल उस दिन में देता है ।

उपरोक्त कुण्डली में १८ जून ८४ की ग्रहस्थिति प्रदर्शित है ।

चन्द्रमा धनिष्ठानक्षत्र में [मकर राशि में २४ से २० अंश के मध्य] है । जो जन्मराशि कन्या से १२० अंश का सम्बन्ध [त्रिकोण सम्बन्ध] बना रहा है, यह शुभ सम्बन्ध है अत: शुभ फल सूचक है ।

लेकिन चन्द्रमा सूर्य व शुक्र से षडष्टक सम्बन्ध, बुध व राहु से त्रिकोण सम्बन्ध, शनि मंगल से केन्द्र सम्बन्ध, बृहस्पति से चक्रदशांश सम्बन्ध, और यूरेनस तथा केतु से लाभ योग बना रहा है ।

उपरोक्त तथ्यों के अनुसार १८ जून ८४ को कन्या राशि वाले का दैनिक फल इस प्रकार कहा जा सकता है :—

[अ] क्योंकि चन्द्रमा जन्मराशि से शुभ सम्बन्ध [त्रिकोण सम्बन्ध] बना रहा है, अत: आज का दिन शुभ जायगा ।

[आ] चन्द्रमा आज के दिन सूर्य व शुक्र से षड्ष्टक [अशुभ] सम्बन्ध, शनिमंगल से केन्द्र सम्बन्ध [अशुभ] बना रहा है अत: इन ग्रहों से सम्बन्धित मामलों में [महत्वपूर्ण व्यक्तियों से सम्पर्क, उद्योग, स्वास्थ्य, दाम्पत्यसुख, आकस्मिक सहायता, साहस, कृषि, अचल सम्पत्ति आदि—सू० शु० शनि, मंगल के कारक] यह दिन ठीक नहीं जायगा ।

[इ] क्योंकि आज के दिन चन्द्रमा बुध, राहु, से "त्रिकोण सम्बन्ध" बृहस्पति से "चक्रदशांश," और यूरेनस, केतु से "लाभयोग" बना रहा है । यह तीनों शुभ सम्बन्ध हैं, अत: इनसे सम्बन्धित मामलों में [व्यापार, शिक्षा, यात्रा, न्याय, अध्यात्म, वित्त, तंत्र-मंत्र, गुप्तचर का कार्य मानसिक सुखशान्ति आदि] यह दिन शुभ एवं सफलतादायक है । 'यूरेनस' के साथ 'लाभयोग' आकस्मिक लाभ भी करेगा ।

गोचरफल और राशिफल

राशिफल का स्तंभ आज के युग में प्राय: सभी समाचार पत्रों में देखने को मिलता है, पिछले एक दशक से इसका प्रचलन इतना बढ़ा है कि शायद ही कोई समाचार पत्र इस स्तम्भ से अछूता हो यहाँ तक कि कुछेक नास्तिक पत्र भी—जो पहले इस स्तम्भ की आलोचना करते थे स्वयं इस स्तम्भ को स्थान देने लगे हैं। वास्तव में इस को स्थान देने के पीछे समाचार पत्रों का मुख्य उद्देश्य अपने ग्राहकों को आकर्षित करना एवं समाचार पत्र का प्रसार करना ही है। विभिन्न समाचार पत्रों में इस स्तम्भ को स्थान मिलने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि जनता में ज्योतिष शास्त्र या 'राशिफल' का प्रचार एवं विश्वास बढ़ रहा है। वास्तविकता यह है कि समाचार पत्रों में इस स्तम्भ के प्रचार-प्रसार से जनता का विश्वास ज्योतिषशास्त्र एवं उसकी सत्यता, वैज्ञानिकता पर निरंतर हट रहा है और मेरा अपना मन्तव्य यह है कि ज्योतिषशास्त्र का जितना अहित इससे हो रहा है—उतना किसी अन्य से नहीं ?

राशिफल मुख्यत: ग्रहों के गोचर (सौरमंडलीय ग्रहों की दैनन्दिन तात्कालिक गति, स्थिति और प्रत्येक राशि से उसकी विशिष्ट स्थिति) पर आधारित होता है। राशि या राशिचक्र नियत है ग्रहों के गोचर स्थिति का—फलादेश (शुभाशुभ क्या प्रभाव होगा ?) नियत है, ग्रहों की स्थिति या गति भी नियत है—तब उससे सम्बधित फलादेश (राशिफल) भी एक स्थिर (निश्चित) होना चाहिये, लेकिन यदि आप समाचार-पत्रों को देखें तो आपको आश्चर्य होगा कि प्रत्येक समाचार पत्र में आपकी राशि का फल भिन्न-भिन्न है—आखिर क्यों ?

एक दिन रास्ते चलते राह रोककर एक मित्र ने मुझसे पूछ ही लिया "जितने समाचार पत्र उतने भिन्न-भिन्न राशिफल ? क्यों ?" यह प्रश्न जितना सरल है—इसका उत्तर देना उतना ही कठिन है। मेरे मित्र का प्रश्न वास्तव में सही और स्वाभाविक है, प्रत्येक राशिफल लेखक की अपनी भाषा तथा शैली हो सकती है लेकिन राशिफल का सार तो सभी का एक होना चाहिये थोड़ा बहुत अन्तर भी क्षम्य है लेकिन जहाँ एक ही राशि पर एक ही दिन भिन्न-भिन्न

समाचार पत्रों में परस्पर विरोधी बातें हों—वहाँ किसे सही मानें और किसे असत्य ? जो लोग एक समाचार पत्र देखते हैं और उसी पर निर्भर रहते हैं वे धन्य हैं लेकिन जिन्हें एक से अधिक समाचार पत्र देखने का दुर्भाग्य प्राप्त होता है उनके लिये समस्या विकट है। इसका एक ही उपाय है कि 'राशिफल' स्तम्भ देखना ही बन्द कर दिया जाय, लेकिन भविष्य के प्रति मानव की जिज्ञासा एक ऐसी दुर्बलता है कि अनिच्छा के बावजूद इस स्तम्भ पर दृष्टि पड़ ही जाती है कुछेक समाचारपत्रों में ऐसा राशिफल भी छपता है जिसका कोई स्पष्ट अर्थ ही न निकले और कुछ में ऐसा भी छपता है कि स्वयं उसमें परस्पर अन्तर्विरोध रहता है।

उस दिन मैंने अपने उस राह चलते मित्र से "आप देखें, आपके ऊपर किस समाचार पत्र का राशिफल सही बैठता है, आप उसे ही देखा करें, अन्य को न देखें" यह कहकर पिण्ड छुड़ा लिया, लेकिन यह प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण है, जो अपेक्षा के योग्य नहीं है। आखिर ऐसा क्यों होता है। आइये, आपकी जिज्ञासा का समाधान करें।

यह तो आप जानते ही हैं कि "राशिफल" स्वत: में एक स्थूल फलादेश है, जो अक्षरश: सत्य होना सम्भव नहीं है क्योंकि समस्त संसार की जनसंख्या मात्र बारह राशियों में विभक्त है और प्रत्येक राशि में अरबों व्यक्ति आते हैं अत: अरबों व्यक्तियों का समय एक समान होना सम्भव नहीं है। राशिफल से समय के अच्छे या बुरे होने का स्थूल संकेत मात्र मिलता है, लेकिन प्रश्न यहाँ पर यह नहीं है कि राशिफल कितना सही बैठता है अपितु प्रश्न यह है कि उसमें परस्पर विरोध क्यों रहता है ?

राशिफल को हम मुख्यत: चार श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं—

(अ) वार्षिक
(आ) मासिक
(इ) साप्ताहिक
(ई) दैनिक

सर्वप्रथम इनके सिद्धान्तों का दिग्दर्शन करा देना आवश्यक होगा।

(अ) वार्षिक राशिफल—यह मुख्यत: सौरमंडल के मन्दगति ग्रहों (गुरु, शनि, राहु, केतु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो) की स्थिति पर आधारित होता है क्योंकि यह एक राशि में एक वर्ष से अधिक समय तक रहते हैं। जब कि

अन्य शीघ्रगति ग्रह एक वर्ष में लगभग पूरे चक्र का भ्रमण कर लेते हैं अतः इनके फलों का समावेश नहीं हो पाता।

(आ) मासिक राशिफल—ग्रहों की तत्कालिक स्थिति तथा ग्रह विशेष से प्रभावित समय के आधार पर।

(इ) साप्ताहिक—साप्ताहिक ग्रह संचार, चन्द्रमा की स्थिति, मासिक राशिफल का सार तथा चन्द्रमा से ग्रह विशेष की युति—इन चारों तथ्यों के तुलनात्मक आधार पर।

(ई) दैनिक—दैनिक राशिफल मुख्यतः चन्द्रमा की स्थिति पर आधारित है। क्योंकि चद्रमा सबसे शीघ्र गामी है जो एक दिन में एक नक्षत्र, तथा सवा दो दिन में एक राशि का भ्रमण करता है अतः चन्द्रमा की स्थिति तथा चन्द्रमा के साथ होने वाली ग्रहयुति ही दैनिक राशिफल का आधार है क्योंकि प्रतिदिन और कोई परिवर्तन नहीं होता।

यहां एक बात यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा कि पश्चिमी विद्वान सायन सूर्य की 'राशि' के आधार पर (जन्मतिथि पर आधारित) राशिफल देते हैं।

अर्थात् जन्म के समय सूर्य जिस राशि में स्थित हो उसी को राशि मानते हैं। क्योंकि सूर्य प्रतिवर्ष एक तिथि को एक ही राशि में रहता है अतः केवल जन्म तिथि ज्ञात होने पर ही यह 'राशि' ज्ञात हो जाती है जैसे २२ मार्च से २० अप्रैल तक सायन सूर्य "मेष" राशि में रहता है अतः इस बीच जन्म लेने वाले व्यक्तियों की "मेष" राशि मान ली जाती है क्योंकि व्यवहारिक दृष्टि से यह सरल है—इसलिए यह पाश्चात्य पद्धति प्रचलित है, लेकिन फलादेश की दृष्टि से यह पद्धति स्थूल है।

क्योंकि चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह सबसे तीव्रगागी तथा मन का अधिष्ठाता है अतः भारतीय पद्धति में जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि में हो उस राशि को ही "जन्मराशि" माना जाता है, लेकिन चन्द्रमा की स्थिति नियत नहीं है केवल जन्मतिथि के आधार पर चन्द्रमा की स्थिति का ज्ञान संभव नहीं है, अतः केवल जन्मतिथि के आधार पर "राशि" का ज्ञान नहीं हो सकता। इस पद्धति में जन्म की तिथि तथा समय के आधार पर चन्द्रमा की स्थिति का पता करना होगा (जो पंचांगों में दी रहती है) तभी—"राशि" ज्ञात हो सकती है क्योंकि अधिकांश भारतीय अपने जन्म तिथि व समय के आधार पर जन्मकुण्डली

(जन्मचक्र। बनवाकर रखते हैं, उन्हें अपनी राशि का ज्ञान रहता है। जटिल होते हुये भी चन्द्रराशि की यह पद्धति अधिक प्रामाणिक एवं फलदायक है यदि और सूक्ष्म जानना हो तो जन्मनक्षत्र का भी विचार लिया जाता है।

मौलिक मतभेद

सिद्धान्तों का यह मतभेद कुछ सीमा तक मौलिक है, ज्योतिषशास्त्र के पूर्ववर्ती आचार्यों, ग्रन्थकारों के मतों में भी (गोचरफल से सम्बन्धित) विषमता है, लेकिन उन सबका एक तुलनात्मक निष्कर्ष लेकर राशिफल दिया जा सकता है उदाहरण स्वरूप "दैनिक राशिफल" के सम्बन्ध में कुछ ग्रन्थकारों, आचार्यों का मतभेद इस प्रकार है।

नवम्बर २९,१९८० को 'मेष राशि' का दैनिक फल (दैनिक राशिफल) क्या होगा ? प्रत्येक राशि में तीन नक्षत्रों का समावेश होता है, मेष राशि में अश्विनी, भरणी कृतिका इन तीन नक्षत्रों का समावेश है आज चन्द्रमा सिंह राशि में तथा मघा नक्षत्र में है।

(अ) आचार्य गर्ग के मतानुसार—हानि का भय।
(आ) आचार्य लल्ल के मतानुसार—धन का लाभ किन्तु कार्यहानि, असफलता।
(इ) आचार्य वराहमिहिर—स्वास्थ्य शिथिल, चित्त खिन्न—दीनता, चिन्ता मार्ग में रुकावट —अर्थात् प्रत्येक कार्य में विघ्न बाधा।

मुख्यमत उपरोक्त तीन ही हैं, अन्य आचार्यों के मत भी इसी प्रकार हैं।

उपरोक्त तीनों मतों का सारांश लेकर तुलनात्मक राशिफल (मेषराशि, २९ नवम्बर १९८०) इस प्रकार सिद्ध होता है :—"स्वास्थ्य ढीला, चित्त खिन्न, दीनता, चिन्ता, प्रत्येक कार्य में (व्यापार व राजद्वार से सम्बन्धित) विघ्न बाधा या असफलता, लाभ लेकिन साथ ही हानि का भय।"

अब कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित आज के दिन मेषराशि के 'राशिफल' से इसकी तुलना करें :—

(१) दैनिक जागरण (लखनऊ . आज का ग्रह योग आपके लिये खलता द्रनमिभोग कारक है। स्थावर सम्पत्ति लाभ भोग सुखबाधा, रमणी कोप, यान विपत्तिभय, अर्थाभाव प्रबल ग्रह शत्रुभय बढ़ेगा।
(२) दैनिक आज—(कानपुर) कुसगति, आर्थिक प्रगति, दाम्पत्यसौहार्द्र, ज्ञानवृद्धि, व्यापारिक उलझन।
(३) दैनिक अमृत प्रभात—(लखनऊ)—किसी मित्र पुलिस अधिकारी अथवा स्वास्थ्य विशेषज्ञ की ओर से आपको पर्याप्त सहयोग मिलेगा। विद्यार्जन में विशेष सफलता, शुभ समाचार मिलेगा।

(४) दैनिक स्वतंत्र भारत—(लखनऊ)—स्वास्थ्यढीला, अशान्ति, शत्रुवृद्धि, मित्र तथा पारिवारिक सुख, व्यापार तथा सरकारी मामलों में हानि एवं असफलता। इन चारों में कौन कहां तक सही है और कौन कितना निराधार, आप स्वयं निर्णय कर सकते हैं।

जनता के प्रति कितना धोखा

प्रश्न यह है कि ऐसा क्यों होता है ? मेरे अनेक शिष्य एवं परिचित व्यक्ति "राशिफल" स्तम्भ लिखते हैं, इनसे जब मैंने यह पूछा कि आप लोगों का यह फलादेश सिद्धान्त विहीन क्यों होता है, तो उनका उत्तर इस प्रकार था—

(क) यह सज्जन एक प्रकाशक हैं, इन्हें ज्योतिषशास्त्र का कोई ज्ञान नहीं है। इन्हें अपने प्रकाशन में राशिफल देना था। इन्होंने बतलाया कि राशिफल सही तो होता नहीं और मेरे पास कोई राशिफल लेखक था नहीं, इसलिये मैंने "जो कुछ मन में आया-स्वयं राशिफल के रूप मे लिखकर छाप डाला"।

(ख) यह व्यक्ति मेरा शिष्य है, एक दैनिक पत्र में राशिफल देता है। इसने बताया—"मुझे राशिफल लिखने का समाचार पत्र से कोई पारिश्रमिक तो मिलता नहीं केवल अपने प्रचार एव प्रसिद्धि के लिये मुफ्त में लिख देता हूं, ऐसी स्थिति में ज्योतिष का ज्ञान होते भी स्वाभाविक है कि कौन परिश्रम करे। उपरोक्त "क" सज्जन की तरह जो 'मूड' मे आया ऐसे ही लिख देता हूं, हां इस समाचार पत्र के माध्यम से जो ग्राहक फँसते हैं उन्हें 'मूड़कर' कुछ प्राप्ति हो जाती है"

(ग) यह मित्र एक अवकाश प्राप्त प्रतिष्ठित पत्रकार हैं और एक पत्र में साप्ताहिक राशिफल देते हैं। ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान भी रखते हैं। इसके बावजूद इन्होंने बतलाया कि "सिद्धान्ततः राशिफल लिखने का कार्य बहुत ही परिश्रम का है,पारिश्रमिक इतना मिलता नहीं अतः कुछ इधर-उधर की जोड़कर और शब्दावली को रुचिकर एवं आकर्षक बनाकर यों ही राशि फल दे देता हूं यद्यपि यह स्वयं को धोखा देना है तथा आत्मग्लानि होती है" इन्होंने बतलाया कि एक बार मैंने एक राशि का फल यह लिख दिया कि—"इस सप्ताह आपके घर में दक्षिण दिशा से चोरी हो सकती है" यद्यपि यह फल सिद्धान्ततः नहीं अपितु यों ही मनगढ़न्त लिख दिया था, लेकिन किसी व्यक्ति विशेष पर यह तुक्का लग गया और वह मेरा प्रशंसक बन गया। यह हुआ कहीं का तीर कहीं का तुक्का।

(घ) एक परिचित व्यक्ति हैं, ज्योतिष का आंशिक ज्ञान है अनेक प्राइवेट फर्मों में नोकरी करते रहे, कुछ वर्ष पूर्व नोकरी छूट जाने से अब ज्योतिष के

कार्य से आजीविका करते हैं एक अंग्रेजी समाचार पत्र में साप्ताहिक राशिफल भी देते हैं। इनका ढंग निराला ही है, "चार वर्ष पहले का साप्ताहिक धर्मयुग ले लेता हूं और उसके हिन्दी (चार वर्ष पहले के) राशिफल का अंग्रेजी अनुवाद करके दे देता हूं"

(ङ) एक मित्र किसी समाचार पत्र में साहित्य सम्पादक हैं, पत्र में किसी छद्म नाम से राशिफल (साप्ताहिक) छप रहा है, एक दिन मैंने राशिफल स्तम्भ के बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि—"अधिक पारिश्रमिक हम दे नहीं सकते, कोई स्तम्भ लेखक मिला नहीं, अतः इस छद्म नाम से मैं स्वयं राशिफल दे देता हूं। "धर्मयुग" आदि कुछ साप्ताहिक पत्र समय से पहले आ जाते हैं—उन्हीं में छपे राशिफल के शब्दावली को कुछ बदलकर दे देता हूं"

(च) एक अन्य राशिफल स्तम्भ लेखक ने बतलाया "सिद्धान्ततः राशिफल देने में अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की बातें निकलती हैं लेकिन जनता केवल अच्छा ही अच्छा जानना चाहती है, इसलिये मैं रेलवे स्टेशनों पर लगी वजन तौलने वाली मशीनों में से निकलने वाले कार्ड की तरह ऐसा सामान्य राशिफल दे देता हूं जो सबको प्रिय लगे और सब पर घटित हो जाय। मैं ज्योतिष का आधार लेता ही नहीं।

समाचार पत्रों का भी दायित्व

समाचार पत्रों का भी यह दायित्व है कि वे ज्योतिष शास्त्र के प्रति पाठकों की अभिरुचि और विश्वास का अनुचित लाभ न उठायें। राशिफल देने के साथ ही यह भी सुनिश्चित कर लें कि वह सिद्धान्तानुसार सप्रमाण लिखा गया है तथा स्तम्भ लेखक ने विधिवत् ज्योतिषशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की है एवं उसे इस शास्त्र का पर्याप्त ज्ञान है। इसके साथ ही परिश्रम के अनुरूप पारिश्रमिक भी होना चाहिये। अनर्गल राशिफल देने से न देना ही श्रेयस्कर है। जो समाचार पत्र योग्य विद्वानों से यह स्तम्भ देते हैं वह पर्याप्त घटित होता है। धर्मयुग का राशिफल मैंने स्वयं सत्य अनुभव किया है जबकि "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" का मिथ्या।

पाठकों को भी यह ध्यान में रखना चाहिये कि कौन से समाचार पत्र का राशिफल सत्य है और किसका असत्य यह किसी से पूछने की जरूरत नहीं है, ज्योतिषशास्त्र स्वयं में प्रमाण है, आप स्वयं विभिन्न समाचार पत्रों में देखें, अनुभव करें और जिस समाचार पत्र का राशिफल आप पर सत्य घटित हो उसे सही समझें।

12785